बिरला कॉलेज लाइब्रेरी -

17206

सिद्धयोग के चमत्कार आदि

लिपि मूल्य १०-६५-६

१५-७-४६

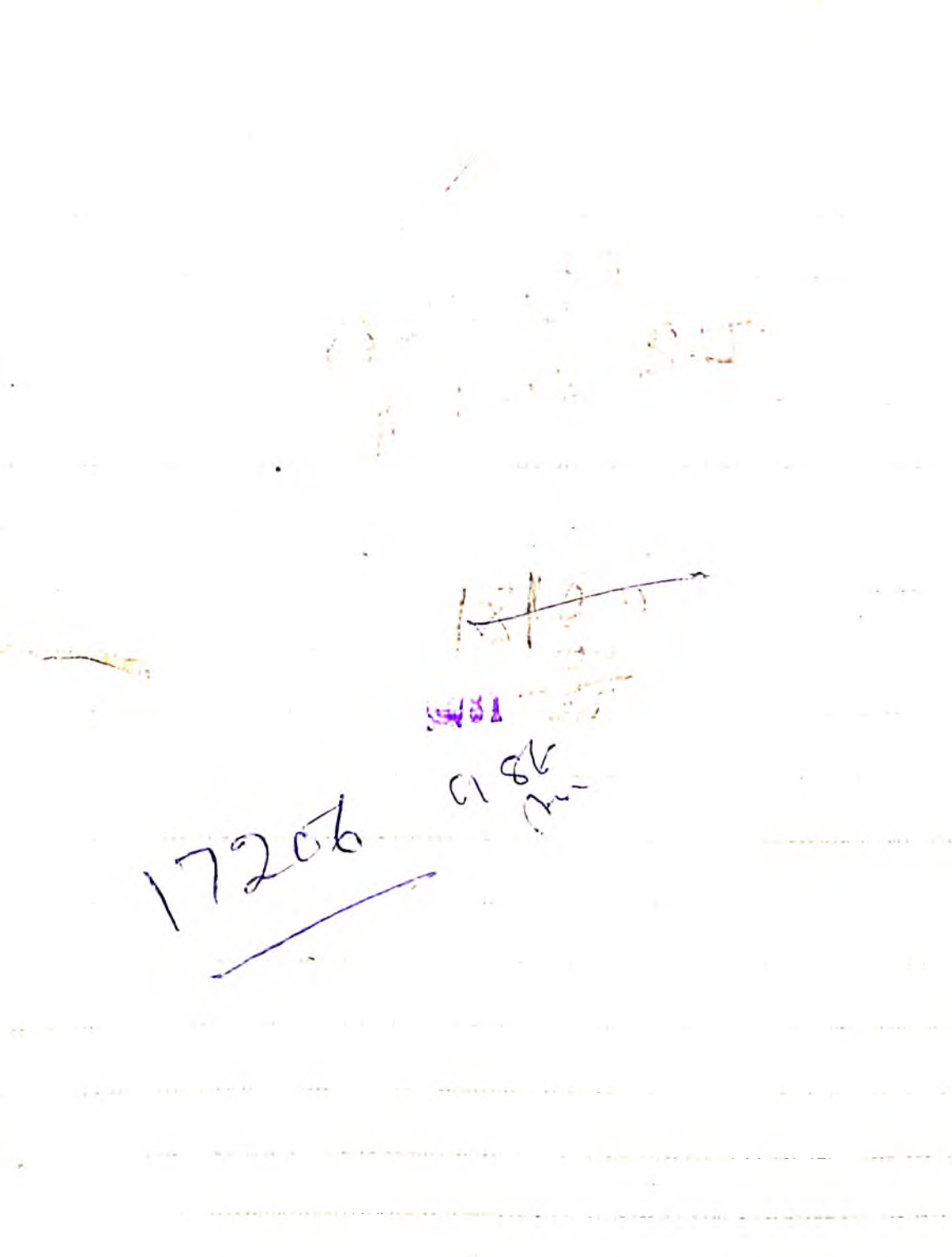

विषय सूची

संख्या	नाम गीत	रचयिता	पृष्ठ संख्या
१.	सिंह जोग की छप्पय		३
२.	कर्कट " " "		३
३.	केहरी की कुंडलियां		४-५
४.	प्राचीन छप्पय		५-६
५.	विवेक वार्ता की नीसाणी	केशवदास गाउरण	६-३८
६.	छोरा हरि रस	ईशरदास	३८-४०
७.	भक्ती मय सवैया		४०-४१
८.	छप्पय मौरजी का		४२-४३
९.	छन्द नीसाणी	हरीदास	४३-४५
१०.	गीत-हंसावलु	ईशरदास	४७—
११.	" -सुपंखरा	"	४८-
१२.	बनो	समान वाई	४९-५४
१३	मौरजी का गीत	चंडीदान	५४-५६
१४	गीत-पाबूजी का	लुरजन	५६-५७
१५	वीर गीत		६६-२१०

— १९८—२१७ तक

११८

सिद्ध जोग को

छप्पय:- पड़वा छट ग्यारस बार शुक्र वरतीजे।
बीज सप्तमी बारस बुध कर मुहरत लीजे।
तेरस आठें तीज हुवे मंगल सुखकारी।
नवमी चौथ चवदसी बार शनि विघन विडारी।
पंचमी दसें पूरण मासी सुर गुरु जो आवे अटल
यह मुहरत ले टालिये सिद्ध जोग कीरिज सुफल

कर्कट जोग को

छप्पय:- घर तिथ अर शनिवार सुकर सातें सुभ नाहीं।
आठें मिसपत असुभ मिले बुध नोमि माहीं॥
दसमी मंगल दोख सोमने आवे ग्यारस।
कर्कट जोग कहाय, राम जो आवे बारस॥
भगवान यह ज्योतिष भणें पूछे, जिण ने पालेए
हजार काम दस दिस हुवे चित्त कर वदन चालिये

दोहा पांचे मंगल लोम छूट सातें मिलजा भाण
येतो गवन न कीजिये कुलह जोग परवाण।
जनमें सो जीवे नहीं, वसें सो उजड़ थाय,
जे घण परे चूड़लो तो ले आभूषण जाय॥

केहरी का कुंडलिया

छप्पय- आजूणो गिर उपरै मधरो बोल्यो मोर।
इण प्राणी ने आवसी चोडे धाडै चोर।
चोडे धाडै चोर क चौडे चापड़ै।
भला भला असवार केर नर आ पड़ै।।
काचा गिणे न कोपक पाका कोरियां।१।
केहर हर चीतार मुणे यूं मोरिया ।।१।।
केहर कुबधी माण सा जम्बूरी गत जोय।
पाहार पोहर बीता पछै दिये रुको दोय।
दिये रुको दोय गलत्ती रत्तिया,
भज्यो नहीं भगवान करी तह रूवत्तियां।
बैठा करे विचार बिला रे बारणे।
से नर घडिया स्याल कमारे कारणे ।।२।।

छप्पय:-एक पछी बोलियो सबे पर हर हर शमर
एक पछी बोलियो कछु होमत उद्यम कर।
एक पछी बोलियो कपर फदाह फरिजै।
एक पछी बोलियो चूण धरती चुग लीजै।
च्यारो चतुर नर चित पिया,

ऊप आप मत ऊडीया ।३॥

भवनी लेरव प्रापत भया गाम गाम दिस दिस गया।
हसै हर समरियो मिलै मुक्ता मोताहल॥
बाज बहुत मरालियो दिवस तीजे लाधो बल।
काग कपर हदकियो जनम मरू मिष्टो लाधो॥
पारेवै निरदास चूण प्रथवी चुग खाधो।
बाजनै पकड कुलफा जडो काग मार अध बधियो॥
केहरो इस पारेव नै सर किणहि नह साधियो॥

प्राचीन छप्पय

वरूण वरूण के फद चरण दीधो पै लीधो।
उलर चल्यो तब आग ताम दक्षिण मुख कीधो॥
दक्षिण दिस चि भाग ताम बामी दिस तकिये।
बामी दिस पारधो मृग जीवण विध थकिये॥
जल फद जलन बूढो सजल व्याध दसण मृग
रिपु मरण।
जस जपत हिरण लागो चरण सरण तुम्ह
असरण सरण॥

विवेक वार्ता की नीसाणी (ईश-प्रार्थना)
र० महात्मा केशव दास जी गाउरण

प्रथम नीसाणी

ओंकार अरूप रूप निर्गुण निरबाणं।
नाथ निरमल निराकार प्राण हन्दा प्राण॥
मशा देवी दूसरी शिव शक्त समाण।
चरण पसारा एतला अरथे आपाणं॥
भूभुवन ब्रह्माण्ड एक बीस मंड मंडाण।
दस दिग्पाल सुरजिया जम्मी असमाणं॥
पवनरू पाणी मर मरवला शषी अरू भाण।
अष्ट कुलो पर्वत पहाड साते महराणं॥
छप्पन कोटहि मेघ माल उगिय आपाणं।
नवनिधि नवग्रह नवे नाथ बत्तीस जुगाणं॥
चोरासी लख च्यार खाण परठे परमाण।
जम्मा हुये कोटवाल जेण जमराण॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष माने फुरमाण।
नाग देवा मानिव्या देतासी दाणं।
भाजण चउण गुजशलइया क्या लागे हाणं।

रब करे सुरताण कूं रेका सुरताण ।
आसाण मुशिकल अलाह मुशिकल आसाणं ।
जलहू नई थल उपरे थल नई निवाणं ।
वडा वडेरा वड वडा वडु दीवाणं ।
अगम कहन्दा निगम च्यार कतेब कुराणं ।।
सुन्य मंडल मझ परम सुन्य अनहद नीसाणं ।
सहज मिले जब सतगुरु रघुरतर रघुरसाणं ।
सनद बतावे एतला तब होय कल्याणं ।
पूरा शूरा पाइये पूरा पुजियाणं ।
कुदरति करतार सो कामम करवाणं ।
वारी किण हिन ताण हो करडा कहवाणं ।।
कहि कहि थाका शेष बहद वाखाणं ।
तुझ वडाई चरनउं हूं केतो जाणं ।
केशव अखे गल्ल ये शाई सुमियाणं ।
अलख निरंजन एक तू वडु रहमाणं ।।

(२)

खालिक केतां खेलिया खाणी चत्रवाणी ।
तू अनाद जुगाद आदि तो हुंत मंडाणी ।।

ते परठे पंच वीस तत्त पंच भूतन प्राणी।
भेद पचास निवंधया घर मंड घड़ाणी।
पंच वीसा रवर वास में तत्त बन्ध्या ताणी।
जो आरम्भ सो करे लीला आपाणी।।
पाणी हन्दा घी करे घी हन्दा पाणी।
जारर जोगी अलख तू निरगुण निरवाणी।
अगम अगोचर तू अलाह अगिला अगवाणी।।
पार ब्रह्म पिण्ड पिण्ड में तोरो रूज घाणी।
तो अरधग्या ईश्वर माया परराणी।।
तू सह बीज अबीज बीज सह हूंस विराणी।
जोत सरूपी जीव जीव तो जोत जडाणी।।
आदि पुरुष तू ही मंडे छीतरे बडाणी।
वेवदा वेराट पिण्ड पर पंच प्रमाणी।।
धणी तू जट धार सा खोडा खुरसाणी।
मीरा मेरण एक तू जम हन्द डाणी।।
जिहां जमारां आथला सां तो दिसवाणी।
सिद्धा पीर पैगम्बरा तो तात पीछाणी।।
साहब बड़ो साहबी किम जाय पिछाणी।

नूरजमी भर पूर अंग कट लोह पर वाणी।
चौरासी लख भख देण निरखण निरदाणी॥
घड़ घड़ भांजे भी घड़े पैदास पुराणी।
तू म विनाणन जाण हि करतार विनाणी॥

(३)

ऊंचा वहो असमाण ते पाताल हि ऊंडा।
जम्मी ते चौड़ा अधिक मेर हित बड़ा॥
पाणी ही ते पातला प्रमाण न चंडा।
वाकी हलका बायसा बहोला बल बंडा॥
धूवां ते भरीणा अधिक कछू प्राण न पिंडा।
हद हीते बेहद अलाह रोमे बलंडा॥
थावर जंगम शुच्छिम छोदा भा जाडा।
लाबां पहला भी अलाह ऊभा भी जाडा॥
जोगी आदे जुगाद दा दीहा दा दडा।
दुस्तर भवसागर में हि तम नाम तिरडा॥
जामण मरण निबंधिमा दोवे जग उंडा।
ज्यों सरवर उपावहे कौलली भंड़ा॥
जाणि लजमा गोड़ ये बौड़ी बंडा रवंडा।

निरगुण ते सरगुण थया म्या जाणे रंडा।
निरगुण सरगुण गुण तीत गुण इन्द्र गंडा॥
जीव कर्मो बांधिया निरबन्ध निचंडा।
फिरि पदा फुरमाण दा रहमा लु संडा॥
अलख अदल्लो पातशाह कुण तो तै बडा॥

(४)

फुला मझे बासना तिलतेल मिलाया।
जैसादर मझ लक्कडी जिम लोह लुकाया॥
थंण मधि खीर सरीर ज्यू कुदरति समाया।
आढा अंगा मझली तत्त पंच है काया॥
गे रस चोपड़ एकठा दोय एक दिखाया।
सूरज धाम संजोइया जिम आगि उन्हाया॥
जिम चेतन मन पवन मझ मन मझे माया।
प्राणा मझे ज्यू पवन होय एक रहाया॥
आदर खाणि आदि भुजा जिम बीज मंदाया।
कांसा मझे गैब को ज्यू सबद सुणाया॥
पाणी चंद प्रति बिम्ब मो ज्यू दरपण देखाया।
देवां देता मानव्यां यह ज्ञान दृढाया॥

बिन खोजा पाया नहीं खोज्या जया पाया।
एकण ठाम अलाह कूं किण हीन बताया॥
घर घर मध्ये नूर यूं भरपूर रहाया॥

(५)

मीरा तू ही मच्छ रूप तू सम्ज सुजाणं।
कूरम हदा रूप तू मधु कीट मराणं॥
आदि बराह अलाह तू हिरणा खे दाणा।
हिर्ण कश्यपु राक्स तू ही नर सीष्य कहाणा।
तू ही बावन ब्राह्मण बली दैत बंधाणा।
सोई तू ही सहस बाह फरशा धर पाणा।
तू ही राजा रामचंद तू रावण राणा।
तू ही कान्हा ग्वालिया तू कंस कहाणा॥
किलकी तू ति कलंक नाथ जग कलंक जपाणा।
मानव दव फणिन्द तू तू दैत्य दिखाणा॥
कीडी कुंजर आदि दव जीव जीव जड़ाणा।
तू निरकार अकार तू सर वग समाणा॥
जे थी ते थी देखिये तो बेजा ताणा॥
तू ही तू ही एक तूं में एक जाणा॥

(८)

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष अस्तुत करन्दे।
इलह अमर पावक पवन इन्द चन्द दुडिन्दे॥
सनकादिक सहे ऋषी सहस मुणन्दे।
सारद नारद सुकव्या मुरव व्यासू मरन्दे॥
इन्द्रादिक रुद्रादि पुनि ब्रह्मा कवन्दे।
अठ भैरव दिग्पाल दस तसू सात समन्दे॥
खर जत्ती खर चक्र बृत्ती से भी समरुन्दे।
नवही नाथ अनन्त सिद्ध ओदरा अरचन्दे॥
सहस रुद्यासी सुर रेखी धुनि ध्यान धरन्दे
अमर बडे तेतीस कोड जिम नाम जपन्दे।
पीर पैगम्बर दस्तगीर सब हाजिर बन्दे॥
महमद शाह मुस्तफा नीयाज नमन्दे।
बडा बडेरा बड बडा बड परेरव विलन्दे॥
जाण पिछाण्या जाहरो दिल अन्दर बन्दे।
सिद्धा आगम च्यार वेद कतेब कहन्दे॥
पुतलिया नर हन्दो म्या ओरे मणन्दे।
वे भी रच्यालन जाणहिं उस रच्याला हन्दो

बिन खोजा पाया नहीं खोज्या ज्या पाया।
एकण ठाम अलाह कूं किण हीन बताया॥
घर घर मध्ये नूर यूं भरपूर रहाया॥

(५)

मीरा तू ही मच्छ रूप तू सम्ज सुजाणां।
कूरम हदा रूप तू मधु कीट मराणा॥
आदे वराह अलाह तू हिरणा खे दाणा।
हिर्ण कश्यपु राक्स तू ही नर सीध्य कहाणां॥
तू ही वावन ब्राह्मण बली दैत बंधाणा।
सोइ तू ही सहस बाह फरशा धर पाणा॥
तू ही राजा रामचंद तू रावण राणा।
तू ही कान्हा ग्वालिया तू कंस कहाणा॥
कलंकी तू ति कलंक नाथ जग कलंक जपाणा।
मानव दव फणिन्द तू तू देव दिखाणा॥
कीडी कुंजर आदि दव जीव जीव जड़ाणा।
तू निरकार अकार तू सर वग समाणा॥
जे थी ते थी देखिये तो बजा ताणा॥
तू ही तू ही एक तूं मे एक जाणा॥

सत सहजण इए एक अलेख गुसांई ।
इलह पाक परवर दिगार बाफर खुदाई ।
जिण आप निरकार हुं आकार छुपाई ।
पंच महा भू पराठया दह देह रचाई ।।
जिण ब्रह्मांड अनत कोरि इकरोम रहाव ।
अगम अगोचर पार बल जिण किम्मत पाई ।
के वे खडे नमाज कू मशकान गुदाई ।
अस्सी हजारू एक लाख पैकम्बर ध्याई ।।
राजा कोउ निनाणवे ढेली ठकुराई ।
जिण कारण जोगी हुआ ले मष्म लगाई ।
हाथी घोड जर महल सब छोड सिधाई ।
गोपीचन्दा भर्तरी सांमीप समाइ ।।
सबद पियाले मन रंज्या क्या कुमति लुकाई
परचा नहचा पानिया गुरु कुमति गुमाई ।
अमृत नाम अलाहू दा दुनिया नद नाई ।।
जग जामन्द जाणिये जिम वहप बहाई ।
जे जिवन्दा मर रहे ते सत सिध्याई ।।
दुनिया दुन्द विचार दुख सुख बुच्छनकाई ।

झूठी माया जाल है इक सच्चा सोई ॥

(८)

कुण हिन्दू कुण मुसलमान किसदी बुल रहदा
कुण रुमी कुण ब्राह्मण चत्र वेद पढ़दा ॥
विणज विसा कुण वैस्य ये कुण शूद्र कहदा ।
दुनियादार फकीर कुण कुण खोज समझदा ।
उत्तम मध्यम कुण गुलाम कुण असली जन्दा ।
कुण बुढ़ा कुण तरुण बाल है पीरा हन्दा ॥
खुब कमाई पाइये चंगा कुण मन्दा ।
सोइ भला सजुलोन है साई दा बन्दा ।
अलख भंडार अबन्त है किस बरन हन्दा ।
जालन्दा पंचह अगन अजपा जापे यन्दा ॥
अजर जरन्दा नाद बिन्द बसि सरज चन्दा ।
सुरति निरत संभाल दा मनहु झूकदा ॥
खांडा हन्दी धार सिर हुसि मार चलन्दा ।
लहणीदा मैदान की कोई शूर लियन्दा ॥

(९)

साई सग्गा एकड़ा ससार अ सग्गा ।

फेर सार न जाण हि मन मारण लग्गा ।।
आपा साधज चाहिय जो चाहि सुरग्गा ।
साहब बेग सभालिये अन्त दीह आपग्गा ।।
घर मझ क्या क्या काढ़िये जब आणि सिलग्गा ।
ऐसा स्वादन आप्पिये मन लेता मग्गा ।।
चेतन सेती चारिये चित्त चैतन जग्गा ।
अंतर जामी खबर दार घर मे पत्तिग्गा ।।
सांई सच्चा साचिये कूड़ री दग्गा ।
बीर विवच्छण सो बड़ा माया कू ठग्गा ।।
सो सारव्यात गुदा इदा ओजूद अलग्गा ।
आतम उोर परातमा करतार करग्गा ।।
जर अव गूडो उोर पर जमराणा जग्गा ।
पिंड न नग्गा आपना भी जावण नग्गा प
लव लग्गा रहु माण सूं ज्यूं कोचे चग्गा ।
साहब सूं मन साधिये भो सबही भग्गा ।।
यूं सन मद संसार दा ज्यूं कोयल कग्गा ।
पिंड पाणी हदा रंजाग यूं म्यन खड़ग्गा ।
बासा हमके दम्म विची बासा गणग्गा ।

माया थीते विडाणी यू जीवलंत अग्ग ॥

(१०)

चार चउन्दा भांज वे रामत्ति रचंदा।
पर छन वसंदा पिण पिण रचालक खेलन्दा॥
जीव कर्मी बांधिया बंधणी न बझंदा।
माउन्दा माय निरस नर बाजी हन्दा॥
वेद बड्डा गोड़िया कोलिग करन्दा।
काम क्रोध मद मोह लोभ दिग बन्ध दिउन्दा॥
वाणी उचा वजावदा मुनी भूल मावन्दा।
आप अगेच् अगाथि पर पंच पउन्दा॥
मेशा बाज सो मूल मंत्र सोहू सुणियन्दा।
बावन घड़ी बेराट पिण रहमाण रमन्दा॥
काचा पाका केतड़ा फल फूल चुणन्दा।
खालिक दुनिया भंगल खेल सेजान्दा सन्दा॥
चौरासी लख जीव जूणी पाणी बुद बुन्दा।
सच्च दिखावण झूठ थी घरि भूल घरन्दा॥
एक अलख अनेक रंग जिंद जिन्दन जिन्दा।
पिंड ब्रह्माण्ड अगाधि नूर सर पर रहन्दा॥

गगन मंडल अनहद सबद नद्दा अनहन्दा।
मीरा भगत मुक्तिदा तुझ ही तू मन्दा॥
तू जो निरगुण निराकार आकार उठन्दा।
तो हन्दो सा भो भां तू दाई इन्दा॥
(११)

त्रिवण सार अपार पार अनहद अत्था है।
शुन्य सरूपी सहज रूप अवगत्ती अत्था है।
पाइन्ता बेराठ धार केता निर्वा है।
लो हो सतगुरु रखाजिय इल में आया है॥
परम अभय पद पाइये भ्रम भाजत है।
साहब हन्दा पुरन मिले दुःख जायन्दा है।
चेतन चेत अचेत बे मन बे परवा है।
आगे गास्त्रा जोग तन्त घर घर माजा है॥
आतम अण में ब्रह्म यन्द मथुरा अव भारे।
सुरव सनकादिक ब्रह्म इन्द शिव करे सरोहे।
दुजा कोई न जानिये परब्रह्म परा है।
थामन थिस्तन गाम धाम बुद्धी ठामन ठाहे।
लव जिसने सो लिया लव हन्दा लाई।

गिगन मंडल अनहद सबद नद्दा अनन्दा।
मीरा मगन मुकतिदा तुझ ही तूं मन्दा ॥
तू जो निरगुण निराकार आकार उठन्दा।
तो हन्दो सा भो मां तू दाई हन्दा ॥
(११)

त्रिवण सार अपार पार अनहद अत्था है।
शुन्य सरूपी सहज रूप अवगत्ती अत्था है।
घाड़िन्ता बेराठ घार केता निर्वा है।
लो हो सतगुरु रवो जिया इल मे आया है॥
परम अभय पद पाइये भ्रम भाजत है।
साहब हन्दा सुरत मिले दुःख जायन्दा है।
चेतन चेत अचेत बे मग वे परया है।
भाजे गास्त्र जोग तन्त घर घर माजा है॥
आतम अण मे ब्रह्म यन्द मथुरा अब भारे।
सुरत सनकादिक ब्रह्म इन्द शिव करे सरोहे।
दुजो कोई न जाणिये परब्रह्म परा है।
थामन चित्तन गाम धाम बुद्धी ठामन ठाहे।
लेण जिसे से लिया लव हवा लाई।

हद रा लोहड़ राह है बउ बेहद राहे।
वारह मेघ लबद्दर वरसे चख माहे।
वाहर भीतर चारणा अन्ना माथि आहे।
जब जीवन्दा मुकती तब क्रम बंधी करा है।
सिद्धी हिरदै सर दिये चित्त पूजै चोहे।
सबला हूवे साईयं सब होय सला है।
दुनिया मूठ बादशह पातिशाह अला है॥

(१२)

मारे मन्दा जीवाड़े जीवन्दा मारे।
बेहत तिरन्दा डूबवे डूबन्दा तारे।
ठरिदा पर जाल है पर जलदा ठारे।
चुणिन्दा ग्राह मछदाई देह दही पंछा सवारे।
भरिया सरवर रीतवे रीता जल भारे।
सूना देह वसावे है वस्ता वी डारे।
सीत रखन्दा जल रमल थल आव सधारे।
बहण चहन्दा थल करे थल बहण बहारे।
राया छत्र उतारी छत्र रंका धारे।
जपावे नासर अंधेर नासर अंधियारे।

मह अचाला मचवै सती काल निवारै।
कोडी ने रुण पूरवै मण में गल चारै।
अन्नल परवा आवास का दिन चूण दिवारै।
भरव अभाव्या वाघड़ा दे चूण मजारै।
जल थल महि पल जोगिवे दे चूण भंडारै।
ब्रह्म ज्ञानी सो बड़ा जो ब्रह्म विचारै।
दुदरती करतार की कारण वाले हारै।
रिजक मोत अहियात गवो उस अल्ला सरै।
(१३)

साचा हरिचन्द अम्मरीक दधि भये भव पारा।
साचा पाडव पाच था करिया उप गारा।
साचा अरल परिवये धू अम्मर तारा।
साचा था प्रहलाद साधि निश्चय निस तारा।
साचा सत्त सातू सती रवर जती कामा।
साचा कोड़ निनाणवे सिद्ध उधरे सारा।
साचा पैगम्बर सवे लख अस्सी हजारा।
साचा महमद मुस्तफा अल्लाह दा प्यारा।
साचा सिद्धा साधिका जोत समवारा।

साचा चाले साच पै जगने को लारा।
आदम होवे देवता साचा सुविचारा।
साचा हन्दा नेत नेत परब सरजण हारा।
साचा सतगुरु खुरासाण खोड़ा दुधारा।
साचा आगिन जाणिये अहि लगे रखारा।
साचा सूरज साखिये यह बोल हमारा।
साचा साई एकड़ा जिण किया पसारा।
साचा नेड़ा साईयां झूठे ते न्यारा।
साचा पियारा साईयां भी साचा पियारा॥

(१४)

दुःख सागर संसार है सुख हूस करत्ता।
एक उपावण हार का अणभे रमरत्ता।
पद निरकारण परम तत्त अविणास अचिन्ता।
अलख अपम्बर ईश्वर अनहद प्रमत्ता।
कोटी अनन्त प्रकाश जोति रोपि अकआदित्ता।
कवण अरूप निरूप रूप गुणरु रहिता।
बाहर भीतर सुच्छिम थूल अदि अलह पिता।
मारि मरद जिवा जीया चेतन चीरत्ता।

BIRLA LIBRARY 18106 PILANI

जाले अवरम् जाल को जिम आगे जलत्ता।
ऊभे करदा आपणी जे मति मय मित्ता।
आया सरणे राखिले जिम माता पित्ता।
अल्लावे मुरव बादशाह सो कोण कहत्ता।
बडा बडा वीहद सार पर सिद्ध प्रवत्ता।
जिन्हां एता जुग रच्या कायम कुदरत्ता।
साचा नेह अल्लाह दा आदेह अमित्ता।
पंच इन्द्री जब दृढ करे रिल होय त्रपत्ता।
काल जुरा नहीं व्यापही जम जाने रित्ता।
आपू आपत आलख्या जब कुच्छन कित्ता।
पीछे क्या पीछताइसे जब औसर नित्ता।
जिन्हां रवालिख जाणिया जग सिन्हा जित्ता।

(१५)

जिन्हां अलख अगाधिया ते साध बड़ाला।
कूची गुरु उपदेश सू दिल खुल्ला ताला।
मागा च्यार अधार च्यार देख दीप माला।
राम राम तासू रमे रत्ता रलिवाल।
सुरत निरत पाके निवास निज तत्त निराला।

बरषे मेघ अखंड धार माता बरसाला।
गरजे घण द्वादस गंभीर विधि वीजल भाला।
लव लग्गा लिछमण मंघवद्र सिद्ध अजूह पाला।
एक मनां सिद्ध साधिका कीन कर राला।
ईसर मोल चक्रवे गरु गोरख वाला।
मन चढ़िया कैलाश मेर रम्या गोरख अराला।
तत्त समाणे जत्त सत्त मत सिद्धू वाला।
पाकड़िया निज पेड़ मूल छोड़े सब डाला।
आपा हरख न सोक गा चित्त यही चाला।
सोलह ली बारह तजी चन्दा फिर नाला।
पाया आतम परम सुख जीता जम काला।
वे परवाही बादशाह मदना मोत वाला।
साई रन्दा सबद का वरजोर पियाला।

(१६८)

ले जिन्हा संसार सूं रत्ता रहमाणां।
झूठी माया कारणे भ्रम मूढ भुलाणा।
विरथई कामण कतक का क्या काम कमाणा।
मूतो गाफिल होरहे खूनो जुलमाणां।

भांगेगा पलक में काया कमढाणा।
साहिब नाम संभाल तां स्यु लागे न्याणां।
जैसो बरखा जीवणा दिन इक पयाणां।
यह विचारो आतमा पर हाथ विकाणां।
डोरी हाथ अलख के सो संग लुकाणां।
पूरण हारा पूरवे दिन पाणी दाणां।
कायम आदिन नोरिया करता ओपाणां।
इस औजूद मौजूद को वैरी जमराणां।
दुनिया दस के पांच दिन रकवे महराणां।
मात पिता सुत भ्रात ते कोई न आपाणां।
सब आये व्योपार नू ले करम किराणां।
इठ वाड़ा संसार है बाजार मंडाणां।
एका लाभज रखीरिया हिक मूल दिगाणां।
कामण सूधा कापड़ा कुंजर कंकाणां।
माल रवजाना छोडिया खाना खुरताणां।
देख तमासा उरपिया कोई साथ सयाणां।
सूरा पूरा सरनिया दिल पाक रखुलाणां।
जो दीना सो ऊबरया आरू अवसाणां।

भांगेगा पलक में काया कमठाणा।
साहिब नाम संभाल तां क्या लागे न्याणा।
जैसो बरस्यो जीवणा दिन इक पयाणा।
यह विचारो आतमा पर हाथ विकाणा।
डोरी हाथ अलख के सो संग लुकाणा।
पूरण हारा पूरसे दिन पाणी दाणा।
कायम आदिन नांखिया करता आपाणा।
इस ओजूद (मौजूद) को वैरी जमराणा।
दुनिया दस के पांच दिन रखबे मुहराणा।
मात पिता सुत आत ते कोई न आपाणा।
सब आये व्योपार कू ले करम किराणा।
इठ वाड़ा संसार है बाजार मंडाणा।
एका लाभज रवारिया हिव मूल दिगाणा।
कामण सूधा कापड़ा कुंजर के काणा।
माल रवजाना छोड़िया खाना खुरताणा।
देख तमासा उरपिया कोई साथ न जाणा।
सूरा पूरा सरदिया दिल पाक खुलाणा।
जो दीना सो ऊबर्या आदू अवसाणा।

जिस इन्द्र दस सीस था गा रावण राणा।
इस विसवासन कांस का आदम आपणा।
एको साई आपणा सब ओर विडाणा।

(१७)

अल्हा इकण ढाकणी सब आलम ढाकी।
जिन्हां हन्दो जोत को चन्द सूर चिराकी।
निचे मरद निवाजिया नित नूरी खाकी।
होय जमीं भी खाक कीये ओलग पाकी।
रावण होसा राखिये निरधारा जाको।
सहल करन्दा सारियां तंग वह फराको।
एक मना सिद्ध हो वहो रीत अल्हा की।
खिदमत खैर खबर है उपगार चलाकी।
हिम्मत हक्का हलाल है रहमाण खाकी।
मोह शराब खराब है धक्के उत्तम धाकी।
तब विचार क्या होयणा जब जब्बा थाकी।
धरिये तन का क्या गुमान जम सूं कुण बाकी।
रोज गिणयां दम गिणें अजरायण डाकी।
कुछ मुरव में कुछ गोद में सब दुनिया काकी

कालर हत्यो खल मंढो जग रोजो जाको।
खलक दलेगा पलक में गेब हत्यो चाको।
साई उरिये समरिये क्या आसण वाको।
चूरा चूकि न चूको है बुधि आवे हाको।
नहचे नाम अलहा दा तुच्छ औरन वाको।

(१८)

मांडण होर मांडको उदबुद उपाई।
रहाहि का वेद किया कीमत कमाई।
इक आवे इक चल्लवे जग जाणे सराई।
परगर औवे प्रले काल नर बाजो नाई।
दिन नू फोड़ रवपा वाले है कोड़ सवाई।
परण मरण जामण प्रच्छन दाता दिखलाई।
सब अन्तर अलेख एक गोरख हेराई।
अलख पर घर घट रहा सर वंग समाई।
आउ कोड़ चनेरव घर इस आतम आई।
ममता मिथ्या लोभ मोह अंध काम की खाई
आसा त्रिसणा कलपणा सभ आणे जलाई।
तत्त पचीस पचास भेव मिन मिन समाई।

2nd

चारिये तन इंदा विकार अर निंदा आई।
मुकत दुवार अगम है गम जावन काई।
कोई विरला सूरमा आपा छिपाई।
मिल बैठा रहमाण सूं लव चेतन लाई।
अकल आतमा अमल जोर नित लम्ब नन्हाई।
अलख लखाया दिव्य दिष्य सत गरू समझाई।
बूंद मिली दरियाव सूं दरियाव दिखाई।
घर घर नूर खुदा हि दा भरपूर समाई।

(१६)

साई साध्यू तारिया अण साध्य डबोया।
बांध्या बेहत बंधाण भी जिण मंदिर खोया।
तत्व न पाया थित सो जल पाणी बिलोया।
गाफिल कबहीन जागिया दिन रात ही सोया।
साच छांडि तें झूठ कहो आपण बिगोया।
रब्ब सम बिसार्या बिड़ भज्या वीचार न जोया।
फिरया घणां घर भाजता जिम दालद भोया।
काल गला ही दाबिया तब पीछे रोया।
ओर कहां से चारिये विष ही विष बोया

मारग मिला न धरम का जग पन्थ पलोया।
साई आगे साचवां तन मन सकोया।
मीत न ढाढ़े भरम की ज्ञान गेब रचोया।
तन धोये से काम क्या मन चेत न धोया।
घर घर डोरी जोग की जिम मोती पोया।
सत गुरु हन्दे सबद सूं विध थी सबकोया।
कच्चा जाण पिछाणिया खालिक खजोया॥

(२०)

धणी बिहूणा कुज्जड़ा आदम विचारा।
करम कमाई पाइये किस हन्दा सारा।
सिर वाजे जमराण का घड़ियाल नगारा।
दिन हेकण पड़िजयगा घड़िया आकारा।
ईंदा ढेर है पड़ रहा की उड़े मिनारा।
जिन्हां दिल साबत नहीं तिन्हें वारन पारा।
शीष रजा रहमाण की डरिये करतारा।
चेतन सारव अलेरव सूं डोरी निरधारा।
नेकी मर्द शूरमा साईं दर रबारा।
माया ओजण मोड़िये आखिल झूकारा।

भूल निरंजण फुलिया शढ़ मूढ गंवार।
आपणु आरख्या मोचिया जग होय अंधार।
कुड़ा नेह कुरम्ब का सब साथ हमारा।
मिल्या संजोगे स्वार्थी बेउर संसार।
आतम इन्दा एक संगा अपावण हारा।
देही देवल चुणन हार अविगत चेजारा।
खालक जोया भालतू अप उत्पात संघारा।
हार विणजन आविया शाह वो विण जास।
सब दुनिया सुरव सुवाव का यह जाव हमारा।
दिन दस पंच मुकाम है भी कूच सवारा।

(२१)

मग्गन लिंगन पुरुष नारी अवरण ओंकार।
मस्खन मुड़ण पाणि पैरं वेहद विचारा।
करण न नयण न नासिका वय सुन्य विथारा।
पिण्ड न प्राण न खाणि वाण दीदार न द्वारा।
जात न मात न माय वाप निपुला निरधारा।
रत्त न पित्त न श्याम श्वेत भूसर न धुवारा।
ना जाड़ा ना पातला हलका न उदारा।

ना छोटा ना मोटड़ा निरगुण निरकारा।
ना बाहर ना भीतर हीअण मे तत्त सारा।
ना अलगा ना नेवड़ा सच हन्दा प्यारा।
ना बेठा ना हे खड़ा हाजिर हुसियारा।
ना बाला ना तरूण अरु परण्या ना कवारा।
ना भोरया ना सूरिवया अकवे भजारा।
ना ध्याया ना सूरिवया ससार सुधारा।
छांया माया पाप पुन्य कछु जोतन हारा।
आवन जावन सुरव दुःख चित्त न धार करा।
शुन्य न भूल न मूल सारव कुण न वालारा
कुण देख्या किस कू मिला केसा करतारा।
रूपन रेरव अलेरव के उर वार न पारा।

(२२)

छः लो एव वीस नित्त जप जीव जपाहीं।
द्वादस आगल गम कहे सम सास सवाहीं।
खट सास होय एक पुल पुल साठ घड़ी हीं।
घडियां आठ बजावियां यहां एको होजाहीं।
जामह बन्धे आठ दिन रात दुहाही।

पनरै दिहां अर निसा परव एक पुगे ही।
दोय परवा पूरा हुया मास एको होजाही।
दुवै मासां प्रजाद लोग रित एक रहा हीं।
दोय रत्या ही हुवे दिहा एक काल हुतांही।
त्रिहु काला ओलाविया इक बरस इलाही।
सो बरसां इक संवत नै इम आव कहांही।
दह संवतां इक सहस लारव दह सहस सवलो
लव पेते इक वरस इत जुग एक गिणाही।
चहु चहुं जुग को चोकडो छत्तीस जुग्गहीं।
चोकडियाज वहत्तरया इन्द्र राज केराहीं।
इन्द्र चवदह आवरै दिन इक्कण महो।
तिन दीहां सो बरस ही ब्रह्मा जीवाहो।
उस भी ब्रह्मा आखिया कछु उमर नाहीं।
साई अण मे साधिये चिर आवन नाहीं।

(२३)

पंच भूत मांतग पंच यह आतम लगा।
सारग मालग शृंग वड मच्छ विरंगा।
दस इन्द्री दा ज्ञान मर अन्य मरू असंगा।

अंतहकरण आपे जगा अभगा।
प्राणी पुरुष पचीस वां ओभी इक संगा।
तत पचीस पचास भेद फिर नाहीं ठगा।
सब दोउन्दे स्वाद ज्यू काकूल तो पगा।
धोकूर धीरज ना धरे सब मूका नंगा।
पिसहो का सग्गा नहीं इक किये न चंगा।
पिंड स्वभाव प्रकृतिया भिन भिन भुजंगा।
देखी हन्दा दोखिये प्रपंच असंगा।
आपण मुंहे आपसूं गाढ़े ज्ञान रखड़गा।
जुल्म करदा रात दिन सो रावत चंगा।
हीरे हीरा बेधिया मरगा विहगा।
खालिक खलक तमासगीर नेड़ा न अलगा।
बाहर किसते मगोड़िये घर फोड़ किलगा।
सतगुरु हन्दे सबद सूं सब सासा भगा॥

(२६)

चेतन बंधन कर्म सूं मन कर्मो बन्धा।
कर्म बन्ध सो इंद्रिया से बादल बन्धा।
स्वाद बन्धा मोह लोभ सूं काम-क्रोध सो गन्धा।

ये बन्ध्या सो कलपला तिस आतम चन्धा।
बाल हूं बन्धी कलपना जग बाल हूं बन्धा।
बाल हन्दी परवत्त सू भाव सहु प्राण विलंधा।
भय निद्रा आसा अधिक तिहे व्यापे रुंधा।
मन्हे मरण चोरटो मुख जावे अंधा।
सासा भरम विवाद वाद विपरीत विमंधा।
निंदा हासा बैर द्रोह मति होय म गंध्या।
इन्ह सुख दुःख इन हरष शोक माया रा पंधा।
पुत्र मित्र मवित्र भ्रात विड कुटम्ब समंधा।
बेहाल अवगुण तुच्छ गुण दिल मन्हूं संधा।
इण विरवे सुख ना वेण जिम मांजी दुधा।
भरिया जगत विकार जाये जल लंघा।
रत्नालिक प्रच्छिन्न खलक मन्ह पर विरले लंघा।
आदर करे साधु ले साच्चा पुरुष वन्ध्य।
मागा हु चित्त हूं कोई कोई साधु लंघा।
माया जाल जंजाल है जग गोरख धंधा॥

(२५)

आतम हन्दो हद्द है अल्ला के हद्दा।

रत्ता रहमाणू हूँ चिन असली जद्दा।
इन मत तें फतह किया जिम शाह सरद्दा।
जोगी जंगम दरिया पीर सारे हद्दा।
बोल करन्दा बन्दगी अण मे एअब बद्दा।
लिया नाद बिभूति वेद सुरती है सबद्दा।
संपत सुजाणा साधेवा जग अजर जरद्दा।
बूड़ा दुस्तर भव समन्द तत नाम लिखेद्दा।
साह सपांह सत बादेया धीरज धारेद्दा।
एह मन जीत बन्दगी सो गन बूद मन्दा।
हिरदा हिले मनन किया जद हो तीरन्दा।
रत्ताविये जीतिया घोड़ियाल घुरन्दां।
जिन्हा दरगह मेरिया वण घहरे सद्दा।
ढोल दमामा बरध का तीसाण नन्दा।
है बर गेबर पैदला रण तूर रुड़द्दा।
से भी जगल एक दिवस गा गुड़ि गिड़द्दा।
खबर तर खेल खुराहिदा क्या करे बन्दा।
है वह हिम्मत वाल गोर मेदान मरदा।

लाहा है उपकार का अल्ला हूँ उरना।
आटू राहण दहाउणा साई सां भरना।
हक्का हलाल सवाब है फरमाया करना।
सच्ची माया नेक मूल साचह पत गरना।
रिजक सदा दा वरण तिसथी निस्तरना।
दिये दिलावे सो खुदा पिछु पोरवण करना।
मरदा खूबी देग तग है अज्जर जरना।
देख विडाणी जोस सरव दिल मझे उरना।
सब कू मीठा सवाद स्वाल मुख से उच्चरना।
चोरी जारी भी बदी झूठ वाद वीसरना।
सत संतख गियान सख नीवीं आदरना।
कसा कुराण पुराण भी वेदा व्याकरण।
जिन्हे इती पैदास की सो अवरण वरना।
ओट उसी की पकडिये उसही का सरना।
साई तन्दी सिर रजा चित्त साई सचरना।
धू प्राण मन राखिये आपे ऊचरना।
दुनिया ऊपर देखिये जम का पासरना।
कुप राजा पिरजा कवण कुप वूडा तरुणा।

जैता जाया जीव है तिसे आखर मरना।

(२७)

खालक ख्याल ख्याल ही सो मधु भल्लो।
रति रहते राम सूं अद बुद अमल्लो।
साई सरना तूंबिये सुख माझ सहल्लो।
बहद रहीम बखानजे जम दूता दहल्लो।
कटक काल न व्यापही साई स पहल्लो।
गुरु इन्दे बापक खतण आदर असल्लो।
उपकारी दिल उजले जग ही कोयल्लो।
धीरज धारण ज्ञान ध्यान सूं साहब मिल्लो।
दुनिया नेकी खरच के सुरगा पुर चल्लो।
जिन्हां धणी विसारिया सिर तिन्हां खल्लो।
गरथ जमीं विच गाडिया म्या बोध्या पल्लो।
हुकम करीमें भेजिया जिम हूवा जल्लो।
माया खान मुलक मेरू खुदालम खल्लो।
बाग बिछड़या कहिय हुड़ जाया झल्लो।
ऊभी भेरी साहबी गढ़ गोरख महल्लो।
साहण नाहण माल वित्त पर हाथ पिरल्लो।

बर नारी घर चाल हर सबरे ते ढल्ले।
पांव उघाड़ा सिर ढक्या कर दाड ढल्लो।
माया साथ न चल्लें है चाल हैं एकल्ले।

(२८)

बालू घाणी पेल के कोई तेल काढ़ाव।
आवा कूं रखवाल के कोई आवा खाव।
बिरवे हलाहल बोय के कोई अमण न पावे।
रंक रलद्दा पाड़ि के कोई मल्ह कहावे।
बहतर भूति अराधि के कोई दव मनावे।
काच कपीर बसायु कूं कोई कनक घड़ावे।
डाकण का मंत्र सीख के कोई लाध बुलावे।
आरव्या आंधा होइ के कोई बार बतावे।
दूरा पाणी जाम के कोई काम कमावे।
अण खेवट जल पैसि के कोई नाव चलावे।
काणी काजल सारवें कोई नयन घुलावे।
बांझ त्रिया घर वास कें कोई पुत्र खिलावे।
काला कपड़ा पहर के कोई शाला पावे।
जूवारी सूं जीय कें कोई अर्थ उपावे।

बहोत पराला दूर दैण हुवे न पावे।
बांभूं सांई महरवान कांई मुक्तन पावे।
(२८)

तूं पूरण पोरवण भरण सब जीव बसेरा।
सयल समुद्र संसार है अवलम्बन तेरा।
तू परब्रह्म परमात्मा अगला अगलेरा।
ऊंडा सपत पयाल थी आभा ऊंचेरा।
चतुर स्याणे च्यार वाणी तूझ हुदा उेरा।
लख चोरासी अलख तू मरण जग फेरा।
परमेश्वर तू पर हरे जम हुदा फेरा।
जिह्वा तोल फिछापिया दिन तिहां हुदेरा।
सांई सेवा नाम तो दूजा वापेरा।
तूं घण दिहां भण घणा भी घणा घणेरा।
तूं जग जूना जूहरा तू नवा नवेरा।
तू जग जेठी जार बर सबला सबलेरा।
तू चोडा तूं चोफला लाम्बा लोबेरा।
अल्हा तू हो आतमा पर आतम देरा।
बेहद च्योज बिरंग का परम पच्छो केरा।

हाजर साई हजूरिया नेड़ा नेड़ा।
साधा रूखा कुलावृक्ष विसराम सवरा।
तूझ हूं बड़ा मोनही तूं बड़ा बड़ेरा।
साई सच्चा तूं धणी हुण जाणे अनेरा।
मेरे तू जग माउण रूम केशव नेरा।

दोहा - कही कवि केशवदास की, नीसाणी गुणवीश।
दीन कहे दरसानियो जग जाहूर जगदीश।।
कहीस केशवदास वेद विवेक वारता
पेर ज्ञान परगाश दीन कहे सुर लहता।

निसाणी विवेक वासी सम्पुर्णम्

अथ छोय हरि रस

र० — बारहठ ईशर दास जी

हरि गुण गाय हरि गुण गाय,
हरि गुण गाय बेहा गुण थाय।
प्रगट हुई गण हरि पाया।
चूजी अरल हुआ हरि थाय।१।
हा हरि मेर तणें सिर धरिया,
हरि पांडव पांचो उद्धरिया।
बीसारे हरि ते बीसरिया,
हरि के नाम घणा तर तरिया।२।
पाच, हूता प्रहलाद,
सात कोड़ हरचन्द प्रसाद।
नो युधिष्ठिर बारह बलिराज,
अमरा पुर तेडी जे आज।।३५
हरि अविनाश कर्यो अमरा व।
राख्यो रुक्मांगद अजीरव।
तोय जनम होय तीरथ तीरव।
सिवे कृष्ण मन आई सीरव।४।

हरि अहल्या दीधो अंग।
सरीर कुबज्या कीध सुचंग।
भणता पातक थाये भंग।
गुण तत गहे लहे पद अंग॥५५
हरि दुआर हुवे ग्रभ वास,
हरि दुवा अमरा पुर वास।
अवर थाउ नर बीजी आस,
बारड बड़ो यह बड़ो विश्वास। ५६।
हरि हरि कहता जपिये जाप,
हरि हरि कहतां तपिये ताप।
हरि हरि कहतां मिटे संताप,
ईसर भणे अलख चिन आप॥५७।

— सवैया भक्ती मय —

मह माय तुम रिझवय देव, यह गंग वे अर्ज करावत हे
मम आप गई तव भक्ती बिना
अब मूं न रही सो बितावत हूं।
बिसरूं न तुम्हें अवसो वरयो,
गुन अंत लू आपको गावत हूं।

तनु पावनू है यह जावनू है,
फिर आवनू है न मिलावनू है। १।
करुणानिधि यो नर देह दियो
जित नू निज व्यर्थ बितावनू हो।
नित जागृत स्वपन सुषोपति वा,
पितु मात को ध्यान धरावनू है।
कवि गंग कवी मन अंग तुम्हें,
भगती हरि रंग रगावनू हो।
तनु पावनू है यह जावनू है,
फिर आवनू है न मिलावनू है। २।
रहे गात जिते प्रभु गात रहो,
तन जात न ता विस पावनू है।
पितु मात वही नित साथ वही,
दिन रात यही चित चावनू हो।
कवी गंग बिना बनी बात तो तो
इव स्यात न बात नाथ भुलावनू है।
तनु पावनू है यह जावनू है,
फिर आवनू है न मिलावनु है। ३।

छप्पय भैरूंजी महाराज की

अबल हरस पत आव आव मोउल गढ़ मामा।
कोडम दसर आव कव्यां सुधरे जद मामा।
कवर कुचिपल आव नाथ नोसरिये नामी।
कहो कीधी किण काज जेज अतरी जग जामी
छैलाल आव छीलाण पति डाक वजर उरवा।
ईजो पलेग पीड़ा हरण भल चढ़ आवो भैरवा॥
वाला चाला करण मरद आवो मतवाला।
चिर ताला कर चाल वेग चावड़ रा वाला।
लरियाला रख लाज आज बिरदां उजियाला।
फवे गले फुल माल भाल सिंदूर राला।
उताला आव पाला अढे पायल छमके पैरवा।
ईजो पलेग पीड़ा हरण भल चढ़ आवो भैरवा॥
भारी मदरा भंवर कवर काशी पुर वाशी।
अविनाशी पुत ईश पूर हद जोत प्रकाशी।
हासी जग में होय आज तू जेज लगासी।
वसू न मासी बात फेर आडो कद आसी।
भोणज्य ओर भारवर जिसी ढाकर मान ढेरवा।

हैजो पलेग पीड़ा हरण भल चढ़ आवो भैरवां

भगती मय छन्द नीसाणी

रु०—श्री माहात्मा हरी दास जी

दोहा:- हरिया समत सत्रसें, वरस लई सो जाण.
तिथ तेरस आसाढ बुद, सत गुरु पड़ी पिछाणी।

छन्द नीसाणी— तो सत गुरु पिछाणी परचे प्राणी सब सिद्धाम सरसे है
सतगुरु सूं मिलिया अंतर मिलिया सार सबद उल खरा है
तन मन कर देती रसना सेती रामो राम रटदा है।
बरस्या है प्रेमा दरस्या नेमा कंठ कवल फूलदा है।
भंवरा गुजार खुलिया बजार मुरली टेर सुणदा है।
लागर उस्सा सा हिरदे बासा सिमरण ध्यान धारदा है
नामी घर आया नाच नचाया सहज मुख सिमरदा है।
रग रग आरंभा भया अचंभा छुच्छिम भेद भणदा है।
ऊं अर सोऽ दस्या दो ऊ पार ब्रह्म पर खुलदा है।
मम्मा हुवै पाप कंवल विकासे अरध नाम आरंभदा है।
ऊं नाम जु कवल बड़े म्हा बल रोम रोम उच्चारदा है।
रेहता सु रहता है निज तत्ता न्यारा हुये निरखंदा है
ऐसा अभिनासी आपन जासी भग बड़े भेदा है।

रेचक अरु पूरक करबिन कुंभक आप उलट पुलटन्दा है।
तारक दुय ध्यानू वार बिध्यानू आया पर खुलंदा है
सुरवमण की घाटी चढ़िया बाटी अरस धरा ढरंदा है।
फिरिया मन पूरब चले अपूरब ढाम ढाम ढमकन्दा है।
जालंधर बन्धा उरधे रूंधा मन अरु पवन मिलन्दा है।
उलट्या है आसण पलट्या बासण सुरत सबद परसंदा है।
बहती बंक नाड़ी खुली किवाड़ी भंवर पद्म भणकंदा है।
उलट्या है मेरा गुरु मिल चेरा मेरु चक्र डोल फिरंदा है।
खट चम्बर मेरया भव दुःख मेरया सासा सोगन सदा है।
गरजत गौणूं बरसत बेसार सरवर सूं नव सन्दा है।
हंसा सुन होती मुक्ता मोती मुखां बिन चूण चुगंदा है।७
आतम ब्रह्म उठा येक अखण्डा बिन रसणा गावंदा है।
अंबर घर आया ब्रह्म बधाया अनहद नाद घुरंदा है
कौपत नीसाणां दिल दिवाणा बाजा भेर बजांदा है।
मन सिकतर मिलिया त्रगुर मिलिया पद चीथा पावंदा है।८
अरधे मिल उरधा पवन विरुधा ध्यान समाधि लगंदा है
धरिया नहीं धारू अधर अधारं सहजां सेव करंदा है।
दसवें मिल द्वारी लाई तारी अम्बर वीद वसंदा है।

मनवा थिर पवना पंचे दवना प्याला अजर पिवंदा हो
विमल जहां बूरा उदै अंकुरा परमानंद परसंदा है।
मिल मिल जहां जोती ओतर पोती जीवन पीव मिलंदा हो
हीर हीरा पाया विणज लहामा तोलन मोल लहंदा है।
हीर हीरा होती पारख कोती खोटन चोट चढंदा है।।०
मन पचे रहता सुरवान कहता अंतर लिव लावंदा है।
सुद बुद कूं विसरी सूरत न निसरी पूरण ब्रह्म अणंदा हो
जीवत जहां मुकती शिव मिल सगती जनमन कर मरंदा है।
ऐसी रत पाया जुग जुग जोया रच्यालक मिल खेलंदा हो।।
हंसा पर हंसा येको अंसा सुनकर लुन खोंदा है।
उडु विन पंखा मिल अंसंखा पारन को पावंदा है।
जागर जग जोगी है अण भोगी ओघर घाट रमंदा हो।
नाथन के नाथूं मस्तक हाथूं शिव ब्रह्मा सेवंदा हो।।
हरीजन हरो जाणी वेद बखाणी शेष विशन ध्यावंदा हो
धरिया अनतारू अनंत अपारू रहता पख रहंदा है।
अनते नहीं करणूं बालन तरणूं बिरधन को बरतंदा हो
पारवाण न पाती धूपन ताती थानन आन थपंदा हो।।
अण घड़ अजजात मातन तातू निराकार निरंदा है।

हारन भेई सहरू विणजन वरू खरचत को खूटदा है।
शूरा नहीं सती जोग न जत्ती जुरान जम पूजदा है।
तीरथ नहीं बरतू आसन धरतू अकूल कला आपदा है॥८
नारि न भेई पुरखा चंगुन पुरखा वेदन चारवचंदा है
अण भें पढ़ बेल्या अंतर खोल्या विधि विरला बूझदा है।
मिलिया गुरू आदू पाया अनादू पूरब ले लेखवदा है।
जोणा हम जैसा कहिये कैसा बुद्धि यह मन सरमिदा है॥९
कायम कुरबाणी नर आसाणी तुहि तुहि नाम रमदा है।
तुहि है रामा तुहि है रहीमा जन हरी रस जपदा है।

इतश्री छंद नीसाणी संपूर्ण।

गीत - हंसावलु - ईशरदास जी कृत

पहथम अजरह अमर अपरंपरा,
जरा मरण भगत रा जोर।
नर रा नंग नाग रा नाथण,
नमो निगम रा अण गम नोर ।।१।
खलरा दलण लंकरा खेदण,
कलरा अकल केस रा काल।
गिरि रा चरण मोहरा गालण,
अमरा अदम प्रजारा पाल ।२
व्रज रा अधिप हली रा बीरा,
जग रा अंजण जवनरा जोल।
तल रा पियण अनिल रा निरमण,
रवि रा तेज अधम रा रोल।३
बलरा छलण मंगल रा वचनण,
पत्थरा तरवण पंडव रा पाल।
रग रा रमण रास रा रचियण,
बुध रा मंगल नंद रा बाल।४।

गीत - सुपखरा - ईश्वर दास जी कृत

कूड़ो दवरो मंडाण मूल गीरि मर सबे कूड़ो.
कूड़ो है जमीं को पिंड कूड़ो अहंकार।
कूड़ो है को रंग अंब पवन्न जमाव कूड़ो।
गीरि धारी नाहीं कूड़ो एक ही गोपाल। १।
खोरो माल खजाना को खोर वर सबे खोरो।
बाजिया तंबोलो खोय खोरो त्रिया बंद।
खोरो काम जाड़िया को नग को वणज खोरो।
मोरो खोरो नाहीं एक काल ही मुकन्द। २।
झूठो हेत बंधवां को गोतरो कुटुम्ब झूठो।
मात पिता सबे झूठो झूठो है मलयज।
झूठो लाभ साहुरा को पुत्र परिवार झूठो।
एक झूठो नाहीं एक आतम अलख्ख। ३।
काचो काम केल कारी मीनाचारी काम काढत।
काया को वणाव काचो काचो सबे काम।
काचो राज इन्द्र ही को है आप ही ब्रह्मांड काचो
साचो वाना साचो एक ईसरा को शाम। ४

— बनां —

श्री रामचंद्र स्वामी का भाव रखते हुये समानबाई ने बनाये

बनां — बोद बने उस समय का

बनाजी की मर्दाल मिजाज करे छे। स्थाई।
सब ही सखी मिल चलो री महल में,
सबही श्रृंगार करे छे। बनाजी०॥
आ छबि देख्या राम बनां की,
बिनता नवल फरे छे। बनाजी०॥
आ सिर सेहरा राम बनाके,
सूरज जोत दिपे छे। बनाजी०॥
सबही सखी घूघट में हसें,
राम बनां मुलके छे। बनाजी०॥
एक सखी बोली मोह छांन सी बत दो,
सियाजी कोड करे छे। बनाजी०॥
शिव सनकादक आदे ब्रह्मादक,
शंकर ध्यान धरे छे। बनाजी०॥
कहत समान कंवर दसरथ को,
फूल आकाश करे छे। बनाजी०॥

बना – बींद बने उस समय का

बनाजी ने अखियां निजर भर न्हाली / स्यारी।
दसरथ सुत अजोध्या के राजा,
कंवर कौशल्या वाला / बनाजी०॥
भूप उदार तिलक रवि कुल को,
तिहु पुर को उजियाला / बनाजी०॥
जरकस पारख जरी कस जामा,
तुरा किलंगी वाला / बनाजी०।
करत मरोड़ मधुर पग धारे,
चलत बना मतवाला / बनाजी०॥
वही किशोर सब भांत सुहावे,
सज सलोनां सो बालो / बनाजी०॥
चितवन चोर मनोहर अखियां,
बिच अंजन अणि पालो / बनाजी०
बांको जीही चाले टेढ़ो ही न्हाले,
लुल लुल बनी दिस न्हालो / बनाजी०
सजनो इन दुल्हा ने निर स्वारी,
बींद कस्यो चिर तालो / बनाजी०

ओ तो दसरथ राज दुलारो,
बनाजी ने अखिया निजर भर न्हालो।
बना — घोडी पर चढे (उस समय का)
घोडी फेर रहा साथो राई। स्थाई।
आज तो अवध पुर में हरख घणेरो,
सहर पना समराई। घोडी फेर०
नगरी की नारी बात करत है,
दसरथ द्वार बुलाई।
बनाजी की दरव सखी चतुराई। टेक।
साथो वर बनडो घोडी असवारी,
चाबुक लंलक लगाई। घोडी फेर०
सुध बुध खोय विसर गेय बालक,
सोच फिकर तज आई। घोडी फेर०
महल महल में सखिया खडी है,
झूतरा झूत मिल आई। घोडी फेर०
हरख हियो हुलास मन माई,
नोछावर निरवराई। घोडी०
घुरत निसान बाजत ओह बाजा,

गोपत ठोर लगाई। घोडी फेर०।
कहत 'समान' कंवर दसरथ का,
जानीउ करत बड़ाई। घोडी फेर०।
बनाजी की देख सरवी चतुराई।
बनां - घोडी पर चढे उस समय का।
बनारी बछेरी सतेज घणेरी। स्थाई।
राचैं आंगण बिच रिम झिम नाचैं,
जाणे इन्द्र इन्दर परी। बनारी०।।
हार हिमेल हिया बिच सोहै,
किनक लगाम खिंचेरी। बनारी०
दीना नाथ बेना चढ फेरै, बनारी बछेरी सतेज घणेरी।
ओछ हो पाय बजाय घूघरा,
मानो यक जम्य छेरेरी। बनारी०।
इत तूं उत पलरत छिब पावै,
चपला कार करे री। बनारी०।
कबहूं यक नाग लहर चाले आवे,
कबहूं यक निरत करे री। बनारी०
राज द्वार बच चौक बीच,

मरहली हेल सिरेरी। बनारी०।।
रथ पर पांव पगड़ दीनो, असवार बडेरी। बनारी०।
शिव सनकादिक अरदि ब्रह्मादिक शेखर ध्यान धरेरी।
कहत 'समान' कंवर दसरथ रा, फूल आनाद भरेरी। बनारी०

—— बना ——

बनाजी री उरड़ मरोड़ पियरी, सब सिरसा जनकपुर नरी।
पेचा जरद बगाव जरीका, जामा पर फुल न्यारी। बनाजी
दसरथ सुत सिया राम बनाजी, रूप बण्या इद भारी।
गज हस्ती गज दंताला, आरे उपर अंबा बाडी। बनाजी०
तिरलोकी रा नाथ कहीजो, आप चढ़ो असवारी।
मोत्यां सूं मूंठडी सबही भरत है, हरी हीरमा रण न्यारी।
बेगी सी जुगत जलद प्रभू पत पर, निछरावल कर उरी।
सब रंग चंग सिणगार सजत है, सबही होय तयारी।
दारज नाई अगम बधाई, जानीडा करे छे वड़ाई।
जनक नगर की सरवी सहेल्यां, सबही कामण गारी।
कहत 'समान' कंवर दसरथ को, बीर बेयो इद भारी।

बना — तोरण के समय का।

राजा जनक री पोल आया फूटरा बना। सखाई।

दाय गई सावला दाय उजला घणा।
सारा में सिरदार राधो राम जी बना। राजा०
सीस सिर पेच सोरठ सेवरा घणा।
मोतीड़ी लूम लागी हीरा जी पना। राजा०
हाथीयां असवार दुश्मन दुलत कीजणां।
पातरया अेनद नाचे तान ल्यावणा,
खमा खमा चोपदार बोलणा घणा।
हजारां महताब जुपे लेफद चानणा।
झपटा झाड़ू मान मार तोरणा।
सोना हन्दा कलस लेत सखी पोल आवणा।
सिवाजी रा चित्त में उमद है घणा
कहत है 'समान' सखी लेत वारणा।

भैरूं जी का गीत

हरसाड़ा निवासी चंडीदान जी हुए पागल अवस्था में जब पागल अवस्था में इनको कुचि पले भैरूं जी के दर्शनार्थ लेगये भैरूं जी का विशाल वर वृक्ष नजर आते ही स्तुती रूप में बनाया।

— गीत —

आवे सिन्दूर बिन्दू का सूर उद्योत भाणी का अंग।
मेट उदासी का तोड़ तासों का तमाम।
रिधू जोत प्रकाशी का रूप कैलाशी का राजे।
वीर वाल वाशी का कीजिये उग्र नाम।
अंक च्यार साठ वीर बावना थांडे के आगे,
पूर एक बीस ब्रह्मंडी का प्रमाण।
जोत अरवडी का सारी आलमा जिहान जाणे।
आठ रिद्धु सिद्ध दे चंडी का गिवाण॥२५
मंदा चाला चाल जे प्रजाल जे सत्रहां मामा।
उजाल जे सुरां थोक बिरंदा ओपाल।
पाल जे कविन्दा रोर गाल जे ढाल जे प्रभा,
पातां सुधासि रूपी निगा व्हाल जे भोपाल।३।
खाचड़ा सागड़ा हे दे तमाम पोढ़ाणी का खलां
रिधु छत्र ओढ़ाणी का कीरती रहाय।
ओरा रंगिला सोहे बिड़ लूंग ओड़ाणी का,
स्याम चोढ़ाणी का म्हारी वीरजे सहाय॥

गीत — पागल अवस्था का

अवर नहीं अवलम्ब तासत आजरो काज,

कविराज रो, सिर करणूं
लाजेरो उदधि सुणियो तैं लांगउ,
सुरव महाराज रो लियो सरणूं ॥१॥
अनंतर टालियो काय मो सिर नमा,
पालियो तनंतर छाह पैरू,
रचर दै गुरूज दुःख अनंतर टालियो,
भालियो धनंतर रूप भैरू ।२।
जरी बल वंडरा रूप भैरव जयो,
बार निज थंडरा थयो बेड़ा ।
हथां कवि चंडरा बिधन सांविध हरण,
नेर चांवडरा थयी नेड़ो ।३।
अलख शति दूज चढि तेल सींदरा अतर,
भिड़ जयो सुजस शुभ निजर भालो ।
तेह चांवडहरा मूझ आपो निजरि,
अरवे थड़ रूप बढ़ तूझ वालो ।४।

गीत पाबूजी रो हरमाड़ा निवासी सुरजनजी कृत
बेदे भूलोक चारणां चाउ भारी मा अंग जी बापू,
चारण तणा हो उद्धारो का सधीरा

ओतार शेष रा भोम सारी का अंगजी आंधा।
बूड़ा छत्र धारी का कणेठी महा वीर। १।
तामवां छ जावे मोद पुरोठ भालवी तणा।
किमाम सभावे पुवाल वीतणा कोड़,
तोमरा तजावे प्राण भै चन्द्र ढाल वीतणा,
पावू तंदे वजावे कालबी तणा पोड़ ॥२॥
मेउं पाल साचो बेला बिरवमी आवा की माथे।
अबे न छै-चाउ खाली जावा की आ ठोड़।
जाहरा भलो का गुणा बिरदा गावा की
जंजूरी रणवा तावाबी कीजे वारसी राठोड़ ॥३॥
सोमा भू बेलल वालो बा रवाणे जिहान सारो
निधु पाता पुरवा ढेल वालो उग्र नाम।
चोट सेल वालो कावू रोग की हरी जै चौड़,
कीजे पावू भल्या ला उबेल वालो काम। ४।

पृ० १-२८ तक लिपि मूल्य ३ रु.

कन्हैयालाल सहल
१२-८-६५

वीर-गीत

....प्राइड़ा ईदा बे टी पारव ।।
सेवे मह बेच पामे बे चा सास्व ।।
कड़ चा भा भाइल ब्रहाय ।।
सारयला जोच्च पमार सजाय ।।
ब्रहरी जादव के पमि ब्रुच ।।
भीमला जापल मुलु लुच ।।
का का दल उहड़ चुहड़ ब्रार ।।
पुणे दल बारड़ जोच्च ब्रपार ।।
दीसा दल सकल ब्रापा पारव ।।
सप्त चुड़ि ब्रारि छत्री से सारव ।।
दीवे ले चंद गह मह ब्रार ।।
ब्रासि करि ब्राभु जात ब्रपार ।।
पिउं ने चंद घर गह थार ।।
चे रंग जांणि पोर कर प्यार ।।
पोपे ब्रति मेल दरगह ब्राय ।।
जांणे हरि द्वारि जाती जाय ।।
चलै कंच ब्राय सुहावै गीत ।।
रावे भुज सीच ब्रजा ची रीत ।।

रजै चंद रंग ईस विध रंज ॥
सही प्रति प्रीती रज सकाज ॥
ईतौ पीड़ प्रांट रंगै प्रौरंग ॥
जई च्यिर बेव करे मा जंग ॥
उस से बेव चरे प्रभिमान ॥
रव दंपति प्रनै रा जांन ॥
हुवो हल मेलण ज्यार हुकंम ॥
जाहे सीवो रंग प्रगंम गंम ॥ १॥
प्रथं गाहा प्रोरंग साह चलो॥
उससे ॥ दध्य र रक्क दीह दरसे ॥
ईध का जीव संभर प्रोर से
दीची चाकरि रंग दिसे ॥ १ ॥
प्रोरंग साह चलो उकलीयो ॥
बोलै जोर जवंन लव लीयो ॥
करि प्रारवाड सुर कल कलियो ॥
दीह दलां मेलै मन रलीयो ॥२॥
— प्रथं दंद गुजंगी — प्रसली प्रड़ावीड़ प्रालम प्रेहा ॥
जीवां जो प्रता गोड नह कोय जेहां ॥

कसै सावध्यां जोध बोलै खेलरं ।।
मिलै सामठा झार झोवे मिलरं ।।
बोलै पार सी रोरखी भातं कहतं ।।
ईसा सावीपा मीर जोध्या झनतं ।।
कुचंतो ईरसा तुजां झाभ झेलै ।।
ठावा मेर जोरै खवां पाण हेलो ।।
देवै बंध लामंद फूटे दुवाहं ।।
रोकै पांण केवाण जै जंम रहुं ।।
साहे जागवै झल लंकाल सुरं ।।
वरचो मधु सैई ला जोर दुरं ।।
दाढ़ा ला वडा मीर मीरं डुरंती ।।
भणे ग्यंन लाभे नहीं कोध मंती ।।
जुड़े झार झपार जाती नवंन ।।
गिणे कुठा जांणी कहै नांम झांनं ।।
झमानाह वसी जंगी याझ रोल ।।
सरवांण तार कलो दीस केहा ।।
डजे वक वहलीम झपार झेखे ।।
दरवे पांण पाठांण मुझ झांण दरवे ।।

जमं पुत भंगी किरंजी प्रभंगी ।।
नरां सुर प्रयार प्रावे निहंगी ।।
उडलो च बेलो च सुरत लेल ।।
उरमी प्रस ग सतग प्रेम हर ।।
रुमि रे हिला मीर रे घेरे ढाल ।।
बर चुस ताल सचाल बंगल ।।
मिले कंकड़ कंक हुनी मसदं ।।
मलचे सत की मस की मरदं ।।
कहे करत की चमकी कुंठीरं ।।
वडा जे प्रावी पे मीचवीरच्च वीरं ।।
वालखी सच की सभतं बहतं ।।
प्रेलरवे जीयां रति जालं प्रनंतं ।।
विहारी पणे सुर रेल विगत ।।
प्रेम प्रया उदर माली मसता ।।
मे वाती जालो रे सीची मसदी ।।
तुडे सक वांणं च्चणं नाज मुरदी ।।
जारी प्रजमेरी दसोरी गरदं ।।
पिड़ बेनिडं वे केइ सेख चटं ।।

महदी भरी धर लावे प्यारं ।।
सबे प्यारवीये जुह खिरदार सारं ।।
कसनेर झगवांण सुरा सनदं ।।
दुबाहा हालता और संग्राम दंदं ।।
सही खेत चीज चौ सुर जुरां सिध्यालं ।।
वे जुरां विरुधां विहधां विसालं ।।
सीलोरी सहेलीरी सति वंग सधं ।।
बंगला ईस पीहरी झुक वधं ।।
रनरी खेारखरी खेाह खंधार खांना ।।
जोरे नांगड़ां लेतड़ां जोध्यां जुपांनां ।।
मीयां खेरव लेदं जुगतां मलदां ।।
मिलै मीर जुलां झुकलां मरदां ।।
खेा खती बंग दाल प्रदाल खांनां ।।
जुड़ै जम रे जांप ढंण जिहांना ।।
खुरा सांण लाहोर पोखव च्यारी ।।
साहां नेड़ियां सिन च्यर जुंत सारी ।।
ईसा धार उचार प्रापा प्रछाया ।।
जिके च्यणे ई कांम वरीयां मध्यां

और पंच निवाज धंम रेलंवं ॥
सवे चालणे गयंन प्रथं सरवं ॥
सवे साज वाजं ईसा प्रणि साहां ॥
सही चाल रथ तुरां सराहां ॥
तुरताल निताच दोखेंग खेलै ॥
ढंवा पाठ प्राचीड़ मेजुड़ ठेलै ॥
चड़े साह रंगा दिसा रहु चालै ॥
कोट पाज सुकाज सांद्र केलै ॥
कांचे चेच मुरा प्रजान बाहुं ॥
प्रलेखे हलीयो सोह सेना प्रगाहुं ॥
सही ज्यार च्यारे पंगे साहि जादं ॥
जवंना दिवांना मिले खांनजादं ॥
मीयां नाम जोड़ निवा वेम संदे ॥
सही रुवु रावत राजे सुरंदे ॥
चड़े चालीपो सीस रंगां चमकेा ॥
वे जोर वे पा वाणं वमकेा ॥
सवे वो जीपा गज सिंदुर सीसं ॥
दड़े च्यन खंडां रास च्यन मास दीसं ॥

उभो वो जिण सिंभक बोल हा ॥
जोरे उजला चमर जंग चार जेहा ॥
भला कंगड़ी जड़ी दांतां सु भती ॥
सोहीया रन रु चुड़ा सकति ॥
सैड़ा सैद रेहा चरा सीस खाधा ॥
सोहै मादन चंट भैरो रु साधा ॥
रोहे खेड़िया वाज सकाज रीसे ॥
दुनी उबड़ी रजनह सुर सुर दीसे ॥
गिरं झंगरं पाय भीजै गहरं ॥
विरं उथां चले गज वरं ॥
खम सैप्प ल चले वाज खाधा ॥
महा कपीया से सतै भार माधा ॥
ईसो पावीयो भार उथार परवे ॥
रल कै चरा सेस कै सीस रखे ॥
कहै नागणी वाम नाग कथा करी ॥
चरा रो वडो भारह नह सीस चरी ॥
रस कै भरत रै नमे नाग कंधो ॥
वडं नाग नागां मिले वंध बांधो ॥

कुलीनव नाग्गं मिले बंध आच्या ।।
दमं के ईलात दैत्यांत है सीस दीच्या ।।
दाढाला चले भीच रेहा कुंवाहं ।।
मारे उतारे पंख गेना गला महं ।।
जोच्या केप रेहा वची पग्गे कोवे ।।
तिसा पाण रेके वह मंड तोके ।।
प्रिथी प्राकास जे तोड़ि नोड़ि प्रचंडं ।।
हावटे कुछटे लेथे उभ डंडं ।।
ईसा जाग वे सीह सुतो प्रखोड़ ।।
प्रिथी जे चालतां गिरां रह घोड़ ।।
गहे उसणे रेसा सरदं गपदं ।।
सवे चालता कार वे चास बदं ।।
रितं बां के कियो चणो कांम काप्र ।।
वडा बोलणा बोल सनाल वाप्रा ।।
वणे लाल मुखां सच्च खांवि लालां ।।
मे दीधा न चाले इ पाउ संग्राम मालां ।।
इ खुराकां कुमी रोप रोके के खाड़े ।।
महा कुमरी वार धाकां न माड़े ।।

मझै राड़ि चोड़ै कोड़ै नीह मैंने ।।
चले उझलै तेज माझी वदंने ।।
कलि चाल बंगल छाती झिमाड़ं ।।
ईसा चालीया मीर आमं प्रमाड़ं ।।
छरा वाघरा अरा छोट छछेड़ं ।।
लड़ै रंकला रोपे हजार लोहं ।।
अली प्राठ हलै रिंग पाल कंपै ।।
महीं प्राज को वामनो फेर मेपै ।।
चड़ै रोहणी के प्र प्रपार खुंदं ।।
महीं उपड़ी रज प्राभास मुंदं ।।
मंडै जोजनां पंच चोड़ो मंचाणं ।।
रुंदं रव चाले चरा सीस राणं ।।
कहै उपरा उपरी उच्च कीजै ।।
रुड़ै को पीयो साह प्रोरंग खीजै ।।
नदी हो प्रनीनांण सोरसंत नीरं ।।
विगतां मलतां झिलां सथ वीरं ।।
गिरां खिसि खरां उपरां जाहि चोड़ं ।।
तई उ उजरां भार प्रहार तोड़ं ।।

चिखंतो वकंतो जोरम छाक चायो ।।
ईसो साह औरंग पजमेर आयो ।।
वंदे पाव वीसंस प्रजावणवे ।।
उहै साह औरंग पंच खास आवे ।।
सही अंगरिवयो वेग औरंग साह ।।
सिरै रंग रेहो के पैतेग साहं ।।
येव साहिजा दोनि बांका सितांबां ।।
जो बोलीया जोर वेग जवाबां ।।
धपै सिव चीतोड़ मोरे ठिकाणो ।।
रजै राज राजा नगे जुद्ध रुंजो ।।
जला बोल हिंदु पंक पतांग जोरे ।।
उसे जुद्ध चालेउ आसीस पोरे ।।
पारखा चंद उचरव दीवाण पाले ।।
जिको पाज झालां वड़ां पार जोगे ।।
येाये पागली रंग चंद सेण रो हो ।।
जोरे रंग रे कंम हण मंत जेंहो ।।
वसधा रखवणे चंद मेवाड़ चांमे ।।
कहे जे वहो करन जोप्य कांमें ।।

प्रभा मोसाह प्रोरंग जोरै प्रमाकै ।।
धीपो दोव हो फेरि ब्रह्मंड थापैं ।।१।।
प्रथं ग्रहा साह चौ प्रावरंग सुरजं ।।
मावलीपा चाव वाजनी वजं ।।
सुर मीर प्रण ले रचै सजं ।।
जिनिपै ग्यन क्रमण कहि गजं ।।१।।
वोजे गज सकज वडाला ।।
प्रोचै प्रंग पाहाड़ प्रचाला ।।
साह प्रेगे चरीपा सुडाला ।।
मल वीजांणे परवत माला ।।२।।
प्रथं छंद मोती दाम ——
चढ़े दल साह ले चतुरंग ।।
मैं विच मुकै प्रावि कुरंग ।।
रल तल सेन चले बहराह ।।
सल सल वीरग सीस सगाह ।।
हल वल प्रधर ल दल हिलुर ।।
चल चले की चई लो सहि चुर ।।
प्रलेचै रेव वहै उवार ।।

पिथी वै दुअर झंझर पार ।।
पड़े नग मंज निहंग पयाल ।।
तला तल बितल चुजि तयाल ।।
झला झल नीतल सीतल जाम ।।
चाड़ले रसा तल पुरंम चाम ।।
पथैह साह मेवाड़ प्रताल ।।
चीमं नाके प मंडे चह चाल ।।
पेलरवै साह मेवाड़ उनाड़ ।।
पुले परदेसे प्रज पाड़ ।।
चरा मंडि उचम पुखल चोम ।।
गर दे पुर दमांके गोम ।।
पेलरवै सेन वहे प्रसुरंगं ।।
जिंहे दल मदव कंपति जांनिं ।।
रट वह चोले सेनर वट ।।
होवै पथि सातं लोकां हुट ।।
ईसा दल माहि मेवाँड़ पाय ।।
सजे मन रंग पातार सजाय ।।
पोड़ दह वारी ढाहे पोति ।।

स्व रव दांवति मचाई रोलि ।।
उदै पुर सालस नाकुंभ प्राव ।।
चुनांगढ़ देवल धाम दिलाव ।।
प्रतेरवै धांमां दीपा नाय ।।
ईला चित्र दीसै मीर समाय ।।
वला दल मेल्हे कोजां वार ।।
पस पति फेर गंधा प्रजमेर ।।
सेव चीतोड़ प्रभ बर साह ।।
धरा सरि मुख मचाई धाह ।।
रवदं उथरि खीजे रांण ।।
वडा दल मेला खीच दीवांण ।।
जेपे मुख सेड़ा राजड़ रणे ज्यार ।।
सत्रां सिर जेसी फेरि संधार ।।
जैसी करि मुंधर वेग मुतार ।।
लिधा उबरा वडा साहिलार ।।
रवदा सांडण चंदो रांण ।।
दीधो ले मुंधर साथी दीवाण ।।
जितो साहे लेन मेवाड़ मणथ ।।

+ ति तो श्रीघ्र मेलो कुअण लाय।।
वचे ईम कुअर जे सीमंत।।
जाऐ साहि सिलहु वेग सुखांत।।
आयो खडि डेरां पंच प्रमंग।।
पहरु सिल हत्याव पमंग।।
इसो प्रसि सुर पसाव प्रनुंप।।
रचे कुअ लाथ चिंता रेु रुप।।
प्रवीतनी लोधेय प्रेराक।।
पुन्नी जै वेव पत्यां सुध्ध याद।।
साकुर सुर पसाव सिध्धाल।।
फिरंतो जोर भरंतो फाल।।
पीरे करि तेजी राप तंजा पंड।।
वेढे भजि लाजे उगज वितंड।।
तई त्ये मच्छुली दक्षु रंग।।
भरंतो डोंज प्रमांण तुरंग।।
भली त्ये झांप प्रमाप भिड़ज।।
करे सज राज चड़ावा भजि।।
सुध्ध सुध्धा नव सतीसा तोय।।

+ जिसी मती उलट कंनां जोय ।।
मिसली जोर नली नली यार ।।
पोथे भरि वो कड़ मुठे प्यार ।।
सांणें राखे मजंघा सारीख
पातु चो व्याट कोजो साईख ।।
पर पल पलीमे प्रहीते छुड़छ ।।
करंमं जांगि तुरंमं कछ ।।
विराजै मोर जिहि ग्रीवा ल ।।
सरीखो कुरड़ कंध सिध्धाल ।।
चवां कन लिखण पग प्रचीर ।।
सरीखा दोष विनां सांमीर ।।
सवे मुहनाल मती सारिख ।।
चवीजै सालिगरांम सु चस्त ।।
पीयै जल पंजल गज प्रचंड ।।
सरीखा तंउ वजांणि सिलंड ।।
वणे के मवाला उजल वाल ।।
लटकै ग्रथा पाटलु काले ।।
वांतो ढाल पैलांण वणई ।।

उयंती दीवड़ वाग उयाय ।।
:गाधी सिंहलात खेगीर :भवत ।।
:पाहंचे मेलो हुक्म :फ़रत ।।
परे उभरि वेग पलांक ।।
वले जोड़ सो वन हरि कवांण ।।
वेगे तंग ताण तेर हवार ।।
जई ते लगो मेलो उधार ।।
हुमची कुंदण नग दीयंत ।।
पदी जांण निरवता पंत ।।
तई :प्रग बंद दीयो तो खुरसे खार ।।
हुं :प्रो उर त्रिय कुचमिण हार ।।
वाला तंग छोड़ि जनासां बंध ।।
वणे भरि तेजी तीजण विध ।।
वजो :प्रसि रोहे साज वणाउ ।।
हुई भरि पंख वले है राउ ।।
:पाहंचे री धी पाखर :पोठि ।।
कसी ले उभरि वेग के कांण ।।
धिलंतो वाज पछाड़ी छोड़ ।।

जिको कोहे मांत करं तो जोड़ ॥
वणवे सिरवनखां विच वाज ॥
रमै रुपसि मांति जिमि सिंग राज ॥
जने तां तुंत दैं मन जोर ॥
फड़ लड़ नाल बजावै छोड़ ॥
सवे रुपसि रुपणि वणावै साज ॥
रिण वट कांधी चढ़ीजै राज ॥
परे चंदै मोजा पाय ॥
जई वीले राग राग जुआय ॥
नई असि बंधल जालु लाय ॥
दगली सिलह मकि दिखाय ॥
दीवे छड़ाल वेण जिम दुत ॥
जुजे जिम ईस वणाय भुत ॥
असणं तोणं भीड़ कवच ॥
तेपणा सार वड़ा चोलच्च ॥
परे चंदै दोय भगर ॥
मेल्हे अरि रिसन रस मुगट ॥
जोड़ दसतां न जुड़ांन जोधार ॥

वखाणु रूप रहिसो तिन वार।।
करी रोमण धांन असंत।।
मतवै वाघी तेग भुजंत।।
भिड़वे धंद बड़ी भुधांण।।
बड़ तत्त भला मालि अबांण।।
लई कसि धरै वेग तुरस।।
आधो मरि उतरि हुंत डरस।।
तोमर भाले चक्र त्रिसुल।।
भा भा दल लाहां भंजण भुल।।
फरसी चाप मुदगर फेर।।
च कवि तो डंडो पाज कुमेर।।
गदा अर पच को दा लोगेसंत।।
सबाहै पंचुस बोल सकति।।
पया प्रासि कुंभ अयन सुत पास।।
तवां पिण सिलह संख जतास।।
उडु जांन गोल छुरी जम दाढ।।
विचित्रां वेग दिखावण वाढ।।
कतरी लटम कै कील घात।।

संबाहै इंउ नराज सिंघाल ॥
भसुंडरै सरां गेल न भारव ॥
इसो चंद दे दो वीदो भारव ॥
गुधानि चली झालि गुरज ॥
लंजे सीसा हासेन गुरज ॥
मुणे तरवार पैने पैने भीड माल ॥
सांई सांई भावध्य झोले संभाल ॥
पारबै गिरेट छतीस भावध्य ॥
वची वची मेवात मुणोग्या विच्च
संबोहे संसत्र छती ले सोध ॥
जिसो चंद भारध पारध जोध ॥
संबोहे चंद सिरै सुत साह ॥
वसध्या लेपण जाणि वराह ॥
इसो पसि चंद चढे उदार ॥
पैरम पीत वो मैं पंप भपार ॥
चरा छति चंद चढे धरि चंख ॥
भेसर जांणि हो मै चरव पंख ॥
रव सं सीस चढे चंद रंग ॥

जिसो लंक सीस रुध्यवंति जांणि ॥
दुंदभी दल पध्यल भेलाई सुर ॥
प्रणे करे वैरी लामंद पुर ॥
स्वमदेसेन नग रुकुमाण ॥
जीया चंद लाडे को जो जांणि ॥
सर जर लाध खेड़ साहि कोध ॥
जई सिर नाग ध्यमंके जोध ॥
पुध्यरा सेन नग दीवाण ॥
जिसा दध्य पुरी उलट जांण ॥
दे हला उरा ध्यारें दीठ ॥
पांणे जे फेरी वेगे वीठ ॥
विलागो लाम चंदो वह मंड ॥
मंडी साहि वे दंतणी भुज मंड ॥
उससे चंद एसे उहूर ॥
एक वर सीस नयो उणवार ॥
वह वह जोर वजे करनाल ॥
वह वह फेर न फेर त्रीवाल ॥
ग्रह ग्रह जोर न गारें गहड ॥

दले बहत बल हक डहक ॥
यह यह ढोल बजे दुहुंड़ ॥
बहे दल हिंड मेछ बे छाड़ ॥
रह रह खेत झुके दल राड़ ॥
यह यह खेत बिचे दल घाड़ ॥
उह उह उपमा अछर डोह ॥
लह लह बेव बिढे दल लोह ॥
नह नह मीढन को नरीयंद ॥
नह चट सुजस वाचे चंद ॥
इक कर साह चंदो इबीपाट ॥
पिड़ बे बेवी लोहा थाट ॥
महा भड़ देवे मेछां मार ॥
मिड़ चंप कीया गज संभर ॥
गजं चाज दामण देवड़ गाहि ॥
चंचा हर पाड़ि गयो पति साह ॥
वड़ वड़ बेग इकमड़ वग ॥
खड़ खड़ ढाल झड़ झड़ खग ॥
मंडि सह साहि सेन तणो मेवाड़ ॥

उमो मिथ चंदो खाग डमरि ॥
बड़ बड़ नटि पडंत बंगल ॥
घड़ घड़ काहे चंद घड़ाल ॥
खाग झट पट साधरि खाग ॥
भिड़ंतो चंद कैरे कि व भाग ॥
मंचे झट पारट लोह मरद ॥
गज घट टुटि मितंत गरद ॥
भभकै घाय प्रसुंड मुसंड ॥
मरगड़ टुटै रड़ बड़ मुंड ॥
घड़ बड़ घाय कैटै यमराल ॥
बड़ बंध सध पडंत बंगल ॥
पगले पकाल घराल पेछ ॥
मंडे घण गांणिक बारह मह ॥
हड़ बड़ नारद वीरां हाक ॥
दड़ दड़ टुटै खीस दड़ाक ॥
लड़ लड़ धड़ भजि पडंत लंगाल ॥
झड़ा झड़ पोझड़ सोझड़ झाल
पधारै मेछ चंदो पर चंड ॥

खग्ग मुंहि होड़ै बे बे खंड ॥
मोरोड़ै तोड़ै घोड़े मीर ॥
कुरंगोड़ै चंद कठोर ॥
झड़ झड़ झकंरव मचै खग झोड़ ॥
चंदो खल्ल भांजि खड़े चीतोड़ ॥
पुरु वर सीस चंदो पुण गाल ॥
पर चल्ल लोह चुवे पुण गाल ॥
रत्त तल चालि बहै रोहि रल्ल ॥
खल जल नीर जिही रत खाल ॥
समा सम वाजिध्य याध्य मसुर ॥
पर दल चालि चमा चम पुर ॥
धमा धम कुंजर भजै वाज ॥
जमा जम पक्कर पुच्चर बाज ॥
नमा नम हिंदु मेछनि हंस ॥
हमा हम वेग घोरि लै हंस ॥
पुरुवर साह तेजे प्रा रंग ॥
दीया चंद पागलि पाखरि डंग ॥
पछाड़ै रंग चंदो पंड वेस ॥

खग्गं लोड़ साह अकबर केस ।।
महा मड़ चंदो दौड़े मीर ।।
करमां भीम पधारो कुमीर ।।
रोदां दल चंद रमै वन राव ।।
विलागो वंन इगन हवाव ।।
हीलो दे रेकां चाड़े तीर ।।
कामी दो चंदो तोहां कीर ।।
विछंदो चंद मैरे हुय वाह ।।
रोदां दल जांणि विलागो राह ।।
गज दल तंदल भीय गिजाड़ ।।
प्रसपति सेन चढ़े उडाड़ ।।
उपाड़ लेगे सेन प्रलग ।।
खनी वद चंद भैरे च्यन खग ।।
प्रज बो मुक पेड़ पारंग ।।
पड़ि मुयं चंद दलां वीठंक ।।
दुरजा सुत न मालो दुठ ।।
विछगे प्रज बलेस वे कंठ ।।
रिमां दल पाड़ि पड़े कथ नाथ ।।

मरवां धनि चंद वै मराथ ॥
हाथां सुत कान पुरावे हाम ॥
तई जोवे जोवै हुंठ नंम ॥
मातां दल मांजे पयो सिर दार ॥
ईला सहि पेखे नीत पधार ॥
कीयो चंद मारध मोटो क्रम ॥
तिका कथ सुर रंद सी नाम ॥
रा जोधर रांण केरे कोह राज ॥
सवंगो पाले प्रमस क्राज ॥
चल चल होय चपरा चीतोड़ ॥
मही पोड़ राजड़ मोटो मोड़ ॥
जई वीगत खल रंगजे सीध ॥
उससे खाग ग्रहे पड़ीग ॥
वह सैं इसै रांणो बोल ॥
तरसै साकत जैसी तोल ॥
बचे ईम जैसी वंका बचंन ॥
जाणो कोई जावां को जिजवन ॥
इसी नह वात मनै उकराव ॥

उकाबै प्रारंभ जोर प्रमाद ।।
मत बेई मजै सीसणो लंभ ।।
बेलां तो चंद जिसी करियांम ।।
चढ़बै सीस इकंमस चंद ।।
दीयै अरि अमल तेज दुइंद ।।
सीमे मन देखे जैसी रंण ।।
नाचे चंद सेण तण वाखांण ।।
ईलां चर रंण रखण प्राज ।।
रंणे ईम पाखै चलै राज ।।
आखै ईम चंदो वैण उदार ।।
भलां दौ बीडो केलुं भार ।।
वखांणु रुयर केती वांणि ।।
प्रांखु छंद जहा दुहा प्रंग ।।१।।
पधंगल-सर मांन सरवैसै सर सती ।।
सिरवैर गिरै तेर सर सती ।।
सरनु राई सर देयो सर सती ।।
सुरि पंद चंद च जपु सर सती ।।
मा सुंडाल देयो सुध मती ।।

रोको दंत जोति जो पंती ॥
गहरा ईश्वर देखो गुण थाती ॥
गाऊं ग्युं कालो गढ पती ॥२॥
अथ छंद पाधरी —
गाउंगे जेम कीलो महसी गहीर ॥
वेला वकल वीकथ वीर ॥
गहवंत चंद उदोत गात ॥
राजि जिण जनमीया चिन राति ॥
तिल कुले तेज झंगल विकसत
पारिस चंद प्रकास पास ॥
उकलो चंद सुरित संग ॥
गहवंत चरं पर वाह जंग ॥
अवतार पुरख अवसांन सिख्य ॥
अरतारी चंद निज हाथ किख्य ॥
नरीचंद रांग जे मीख नचीत ॥
भारथ राज भरु अछ गीत ॥
सुरिमो चंद नीवत संभ ॥
थरकीये जपण देणे सथंभ ॥

महलेवै खबौ सुरित मेर ॥
कुल तिलक काय डंडै कुमेर ॥
नांमवै पनम मंजवे नाट ॥
धोमवे चंद्रेण नार घाट ॥
उंडणो पांउ देखवे दोड़ ॥
मांनीयो रांण हुले वद मोड़ ॥
कांमचो मार रांण कहंत ॥
दई बांक गजां उरवै दंत ॥
खबीजिये चंद ग्रहीयो न खाग ॥
नर नाह सेस मेटे जनाग
रांण रीच रा मांजीर नह ॥
सैलोट कोट कोट रीचासरदं ॥
उधमे धांम कर पारमे पति ॥
पलटीयो जोर मेछक पति ॥
विपरीत साह धांण वणव ॥
धम हमे जमी चो केर धाव ॥
दह दिसि साह दीधो दहंन ॥
प्राजतै पागी पोरंग वंन ॥

चढ़ हेड़े जो रंग चीयाग ॥
आगे मे चंद खग जल पतग ॥
धर हेरे डेरे सह कोप घट ॥
गै घड़ा साह विपरीत वाट ॥
चहु वड़ा साह जोड़ा चलंन ॥
मुझे न मिच्च देई मरंत ॥
सुर लाट डेरे पोरंग मन ॥
कड़ कड़ा नीह कोड़ा इधंन ॥
वे उर साह साह मोटे काल ॥
जे तलाव चक्र तेतला झाल ॥
उचेरे रंग अध पहरेन्हु ॥
असुरांण सेन माटो अंदेह ॥
जई कि लंब वात करवा सजोया ॥
तुजि उरे सुपह संघेरव तोय ॥
विपरीत रोद सेना कमा वणाव ॥
असमांण पांण डेरां पड़ाव ॥
जमजुत जोर फौजां जमंन ॥
तुहीज पांण मैसोदतंन ॥

जोर भरपुर को ले जबंन ॥
जोड़ीर कैरे लोगा प्रिगंन ॥
सुजि कैहे रांम उबराव सोय ॥
जबाब करा हरि मंसे जोय ।
वीरिय समंद प्रोरंग वार ॥
सो तिरै कमण तेक संसार ॥
साहु मुख काल वातां स सोय ॥
जा करै प्रेम जोरै सजोय ॥
जोय कै रड़ो मरण प्रोरंग ज्याए ।
उबराव जीव हरि प्रपार ॥
सुजि पेरव कमण जागवे सीह ।
कंपले कमण वहले सजीह ॥
वाहियो जम सुरव मै पिलंग ॥
जे करै कोई छेड़े सजंग ॥
लागती देरवी पए प्यारो लाय ॥
क्यों च्यारवते कमण प्रायण च्यारो
सुजि लेयै कमण वीप्रि व्रज सीस ॥
सम्याल कमण जागवै ईस ॥

देई कमण धारण छिलंत ॥
गिरराज कमण बांधां गाढंत ॥
संकुचै सुभट सारा सेथाय ॥
छोडै भुजबल नहीं छाय ॥
छोदेवै संकै भीजै पलंग ॥
परदवै कुंभ सारंग पग ॥
सुजे कहै करक काचा सदाय ॥
ते देखाया निजर सह कोपताय ॥
सकजो सोम बिलास मोलै ॥
समुह मर छोड न घोटै मरट ॥
संग्राम रंग जे सीच सोय ॥
जोगा देवै बंध लाहां सजोय ॥
रज तेग झाले जे सीच रंग ॥
दाखवै वपण रोहा दीकाण ॥
तो मुजो चंद धरती धोड ॥
महाकाह जोध झालां सेमाड ॥
मेलतै हेडै उसेल मेट ॥
निज कहै पवर कथ कुठ नेट ॥

जोध करे धवर लालच जबाब ।।
रिड़तर जम ऊंन सांचे दुजरांब ।।
विच लीला चैर बुही सवात ।।
छांणे न वेव मांनै न छात ।।
संग्राम मेलि छत्र प्रजा सीस ।।
साई लाज चंद्र भुज सुभेस ।।
कीधो ज सीध चीतोड़ ऊंम ।।
उंवालि वांध्यंद धरती सतंभ ।।
परताप प्रगै लड़ि विदुर पुर ।।
साखी सध्यी इल दीसि सुर ।।
सिरु जइ दै छलि मरन सोय ।।
तेरा सिवा चंद धरती सतोय ।।
सोइ ब्रेट वणै तो चंद सेण ।।
रांण रै धरे राहवै रेण ।।
तो मेलि कमण जे सीत वंत ।।
सोढ़ रे दलां रांणां सामंत ।।
पोड़वे भुज चंदै उधार ।।
प्रांग मेछ खंड वाला प्रधार ।।

तिण वार किसी सोभा सतवी ॥
राज मुख कोट उगम करवी ॥
उठीयो चंद ईण विध मेह ॥
वामण बोले धनि वाचेय ॥
पावि चंद कंथनामे प्रमान ॥
सिरपाव करी सन मांन ॥
बीड़े समपि श्री रांण कोल ॥
तो तणो चंद माठें सनोल ॥
राज चर राखणे राज मुज ॥
सुजि कैहे रांण जैमीस भज ॥
प्रसमांण लागि चंद्रसेण उठि ॥
वै चढ़कि सेस तुरंम पुठि ॥
साह दिस चालि चंद्र सेण सोय ॥
न हिंदु पाण हरस पाणंद होय ॥
हव हुवो मेल पुनियां हरख ॥
संसार वास घर करो सुख ॥
पावी यो मेल चंदे प्रमांन ॥
खग हथ रेम दलेल खांन ॥

सम हो प्रावे देलेल सोय ॥
हरसि मिले चंद रकुसीस होय ॥
वं वेरिवे चंद रकुरित सिंघाल ॥
कल केले भाण द्वादस कपाल ॥
उमले सोर चोक्कल प्रोखा प्रनंत ॥
चोगणे नुर निजरं चइंत ॥
प्रामले वेणे भोला प्रवीह ॥
संकले चंद चोरंग सीह ॥
जे वंत चंद लंकाल जोइ ॥
सुंडाल दंत कठे स क्रोच ॥
वीर दैत चंद लखमण ह वीण ॥
कुजि छिल वाच सह देव जीण ॥
श्री रंम रंम हण मंत्र लोय ॥
जे सीध काम चंद सेण जोय ॥
देलेल चंद वेमिलि रुवाह ॥
प्रीच्यक विन्है पारिस प्रधाह ॥
गहवंत विन्है वेचड़ रग हीर ॥
विच रवण विहं वीर च्य वीर ॥

किर दैत विनै विहुं नै कांलल ॥
सरेमा बेव बैयार सखे चाल ॥
जोर कर बेव नुच्यां जै बंत ॥
उल बंत विन्है व्यड़ विकर रंत ॥
सिंघ बंत बेव बेवै सगाह ॥
सखण विन्है बेई उग रह ॥
चित मिले खांग दलेल चंद ॥
सरिखां बेव सहजां समंद ॥
हिंदू प्रांण चंद मुं मुंजे बोभ होय ॥
जोगले चाद दलेल जोग ॥
बेरले मिले बातां बथ ॥
हुवे सजोर चंद रैण हथ ॥
सुजे कहै चंद दलेल साथ ॥
जे सीघ रंग जोरे सजोय ॥
पोरंग जेब बोले एम ॥
जे सीघ ही खाग गही मां जड़ाग ॥
पोरंग जेब जोरे पमाण ॥
पोरिस घणो कीजा प्रताप ॥

॥ ये दिल्ली में मेरे पास एक पत्र आया
जिसमें लिखा था कि
॥ मेरे पति की मृत्यु हो गई है
॥ अब मेरे पास कोई सहारा नहीं है
॥ मेरे पति ने मरते समय कहा था कि
॥ तुम मेरे बाद अपने भाई के पास चली जाना
॥ मेरे पति के मरने के बाद मैं
॥ अपने भाई के पास चली आई
॥ मेरे भाई ने मुझे अपने पास रख लिया
॥ मेरे भाई के पास रहते हुए मुझे
॥ बहुत दुःख उठाने पड़े
॥ मेरे भाई ने मुझे अपने घर से निकाल दिया
॥ अब मैं कहाँ जाऊँ
॥ मेरे पति ने मरते समय कहा था कि
॥ तुम मेरे बाद अपने भाई के पास चली जाना
॥ मेरे पति के मरने के बाद मैं
॥ अपने भाई के पास चली आई
॥ मेरे भाई ने मुझे अपने पास रख लिया
॥ मेरे भाई के पास रहते हुए मुझे
॥ बहुत दुःख उठाने पड़े
॥ मेरे भाई ने मुझे अपने घर से निकाल दिया
॥ अब मैं कहाँ जाऊँ

सीएरनो विन्हे वहला खुडाल ॥
जग जेठ विन्हे लंकाल जाणि ॥
वेहरा विन्हे जांणे विनांण ॥
प्रानीयो चंद्रो मांजिवां प्रांण ॥
बिलकुल पिथी खेरात वांट ॥
वेरले मले वातां बांडात ॥
जोइ रहु दीयर वसण चाल ॥
खांडु सन कैहे दलेल खांम ॥
जद हुवो मेल चंद हुवो जुध्रंम ॥
तद उरै खुप प्रानि मरण के तेथ ॥
जई चंद कुमर ले सीच जेथ ॥
वाध ले सीच चन्द्र सेण सन ॥
चीरज थिरज थिन उलाबीय प्रन ॥
मायां हुवो वेड़े मिल मात ॥
छाती सीच न हत वद छात ॥
जोध सीच प्रन चंद पीता जांम ॥
प्रारवीयो जगत पोरस प्रमाम ॥
खुजि चंद प्रेगे गिर मेर साह ॥
प्रच्छिम ते पोरस प्रथाह ॥

लोभ भ्रम मदिग रहि मांज सुत ॥
मरजाद मेर के मास मति ॥
बांधीयो मेल चोकस बात ॥
बुधात बंद नो दिवस मांति ॥
जे ता स बंभ तुरकां सजागि ॥
साखीयो दलेल सहि बंद लागि ॥
कल मोकते बधि बीयां उरांण ॥
पारबे पैकंबर बीर प्रांण ॥
किलं बांस सुत के के करेब ॥
दीध्यो सीव चमको सदेब ॥
जो खांन कही बातां सुजोय ॥
हिंदु प्राण वसण हव ईडग होय ॥
दलेल बोल चंद सेण दीध ॥
किलं बां सुं चंद बंध बोल सीध ॥
दलेल चंद मिलि मतो दोय ॥
हिंदु प्राण प्रसुर बिहु मेल होय ॥
पोरंग सुत नल लोरे जो जंभ ॥
जोर दल सुर बीजो सजं ॥

मेल लीयो अहेते सिरस मेल ॥
इत वसण आजि मेरे डेवेल ॥
पायीयो मेल तिण मिलिया ठोड ॥
मल पीयो जेथ चकतं समोड ॥
अधीया बाण धर हर उमंत ॥
वोजाया विरस जांणे वसंत ॥
मह वला चालि मेगला चालि ॥
मल मीऊ जांणि पर वतां मालि ॥
जेव गयंद अठतीजो थ ॥
उजलो दंत वगला सहोय ॥
इति चालि दालि गाडी उमंग ॥
ज्यां देखे टेला वहला सजांम ॥
विच वण घोर घणा उरा वणाव ॥
मुं करण मेल चोड सणाह ॥
सांवाहि रंग जैसी सणाह ॥
दीवांण साह मिलवा सुं वाह ॥
दहुं दले वाजि नगार उंड ॥
रोहीणि चालि विहुं खरा हुंड ॥

वाजित्र ज्यार अनेक वाजे ।।
साजि रहे रहे जोर भर नाल साज ।।
रह रहे ज्यार फौजां गंबाल ।।
नाहलहे बोल सुणीये निहाल ।।
गह गहे ज्यार वाजे राग हक ।।
तब लह हक बजे डहक ।।
अह च्रहे ढोल बजे चुहाड़ ।।
पंच सबद गाजि बजे पहाड़ ।।
फर पहे सुर सेना प्रचंड ।।
रह मेह पाणि मेला छ खंड ।।
वह वहे वे वाहु वंगल ।।
चह चहे राज मिलवो सुचाल ।।
राजं म साह तोरे प्रवीह ।।
जंपीया वयण रो हास नीह ।।
राज खरो चीतोड़ राज ।।
साजि रहे साह तोरे सकाज ।।
रोप सुं करे जुहार रंग ।।
एक साहिब ले जेसी एकमंग ।।

हिंदु प्राण असुर मुहि रंग हर ॥
वे मिले वले मरजाद वंध ॥
जे सीध रंग वलीयो जीयार ॥
वाजिंत्र च्यार निह सेवे पार ॥
उदीया नगर जे सीध प्राव ॥
अनेक भांत होये उछाव ॥
चंद्र सेण सरस दीवांण ॥ चवे ॥
ते राखीयो देस घर मुझ तवे ॥
पारी रंग मेवाड़ पति ॥
प्रारती करे मोती प्रखाति ॥
रह वीध रोते घोर रंग ॥
राखीयो मुरव जैसी दीवांण ॥
राखीयो चंद जो सेस रह ॥
तो प्रभिन लेमंत नह गुरड़ प्राव ॥
यह हो व्रत च्यार पारी चाति ॥
नह भरत फर सच्चर तीन रात ॥
सुरि मो चंद हुंतो सरस ॥
कमला नह लेय तो हीर कुस ॥

चक्र बती पेट राखतो चंद्र ॥
बांध्यतो नही मध्यनाद बंद ॥
तुमर चंद्र राखत सकाज ॥
रामण नह तेपतो लंक राज ॥
राखतो समंद जो चंद्र रांण ॥
उध पतन ही सुर असुर घांण ॥
जीतियो जिकु लेग्ग वलेह ॥
उधरै पाज बांधि पेछह ॥
पारखीयो वचन सायर पताग ॥
भड़ सिर जीया चंद्र जे सीच भाग ॥
जे सीच रांण रम लीर जेह ॥
पनि मनव क्रम पुजै पेछह ॥
कंन्ह लिहुंत चंद्र पड़ा अंत ॥
सुख माग ह नांही सहंत ॥
मेर रै हुंत चंद्र सो मरद ॥
रांमणो चुणि नह करत रद ॥
राखतो चंद्र जो चंद्र रांण ॥
पुरि जन वन नह वालतो आणि

जे हुंत चंद्र रह जोच्च जास ॥
पे बोधि ग्रंथ * पन तल पत पास ॥
बारवीपो वचन रेते सेराह ॥
जोप चंद सु छील जे सीच जेह ॥
जेह बीरंक कहै सुर तरंग सुत ॥
पालीस चंद मोती प्रमति ॥
संसार हुपो दस सहस सुख ॥
चर पती चौत मेपी स च्यरव ॥
महि सुजस कहै तो रेक मुख ॥
दस सहस चंद मेटिपो दुख ॥
नीप काल गउ वद्ध मेलि नाथ ॥
रजि रो राज ईडग रहाय ॥
सहि कहै विधि सुरतांग सुत ॥
तुं तपे चंद रवि जुंत खत ॥
बारी चिम धारो प्रमांग ॥
वसायो देस वचीप वखांग ॥
उदार चंद साहडी नाव ॥
वलि मिले उह वसुहवन च्याव ॥

पावीयो महल संखे उहर ॥
उछले गुडि गोकल पधर ॥
साढ़ी गढ चंदो सिखाल ॥
धोलां मकरे झालो छछाल ॥
चवी पंत रैम साढ़ी चंद ॥
प्रमरा वत पैथे जैम पंद ॥
वीजेस चंद कोड़ी सवरीस ॥
पोपीयो जांणि कयला सदीस ॥
ईला कासि मकि कुमर प्रोथि ॥
जेहोस चंद साढ़ि जोथि ॥
पुण गास ग्यान केणी पसाय ॥
जांणीये लहर सायर जिकाय ॥
पोपंत रैण पुण ग्रहे पंन ॥
तो सुजस केण वे सोढतंन ॥
जाणीया केथन जपीया सजेह ॥
प्राण जे चंद निजरां सनेह ॥
प्रेनक जाति रुपक प्रारिव ॥
सुपात्र केहु गुण प्रोर भाख ॥

अथ गाहा — सुत सुर लंग सकजं ॥
सिव सुर जाण राण गज खंभं ॥
पालेणी महि रंग ॥
भाखीजै चंद भुपाल ॥ ६ ॥

अथ छंद नाराज —

तो मिले अपार जोध अर सार कोट सजा
होइ हजार झुझ कार रो अपार रो हजा ॥
अथे अपार दन चार ॥
जो उदर जो पीवो ॥
ईसो स चंद पंद
आख आज राज पोषीवो ॥
आज राज पोषीवो ॥ २ ॥
वड खिंड सपत डंड ॥
पिंड रैंग पुरी चं ॥
मांडै अखंड सैसि हंड हेलि झंझ धंडिजै ॥
वाली वहा सस पताल ॥
जो उचास जो पीजै ॥
ईसो स चंद पंद आख

प्राज राज प्रोपीयो ।। जी प्राज राज प्रोपीयो ।।
वहँ सुडाल प्रसराल लला उंच लोरा ।।
भरत प्रालि नेड़ डाल छछाल मद छकरो ।।
वणे घंटा घुघराल सिरे नेजाल सोहीयो ।।
ईसोस चंद मंद प्रास प्राज राज प्रोपीयो ।।
जी प्राज राज प्रोपीयो ।। ३ ।।
महलजोरव नोरव मांडि प्रोपे गोरव का घला ।
सुगंध सो खीचि चित्त रोस
चोरव मोज प्र चला ।।
वणे परा स काच जाल
जग मगा र जो पीयो पीयो ।।
ईसो स चंद मंद प्रास प्राज राज प्रोपियो ।।
जी प्राज राज प्रोपियो ।। ४ ।।
मुरते नैण कोर नैण सैण देखे सुखियो
वदंत वैण लख दैण कैण मैद राजीयं ।।
रचे रहाथ विसनाथ जोड़ ईस जो थांयो ।।
ईसोस चंद मंद प्रास प्राज राज प्रोपियो ।।
जी प्राज राज प्रोपियो ।। ५ ।।

सुध्या अंकुर नैल सोध खिस नुर आदमं ॥
केसरी गुलाब पन्न केत की कुंम कुंम ॥
प्रग्ग मोल मुख मांगी गई सवाल जोबीयो ॥
इसोस चंद मंद पारख पाज राज प्रोबीयो
जी पाज राज प्रोबीयो ॥ ५ ॥
वडो सपुत सीध धुत पुत जास पाटवी ॥
वाहंत कुंत मांजिम पुत नम जुत जोगनी ॥
प्रेद मन ~~सीस~~ सीध पोखि जोध रुपमो
जोबीयो ॥
इसोस चंद मंद पारख पाज राज प्रोबीयो
जी पाज राज प्रोबीयो ॥ ६ ॥
पज व सी दो लो उहर कुहरो ग दरसीयै ॥
मोती सहर उबिचार भलां भलां समासीयै ॥
कुसिर चेरे दरबंत कुंपर कोइ जोड़ दीजो
इसोस चंद मंद पारख पाज राज प्रोबीयो
जी पाज राज प्रोबीयो ॥ ८ ॥
सुभर पुत बंध सोध वोजीया वडा वडं ॥
मिलै मै मंत फोज मंत पारिव जोध रोचडा

ईसा उपर रो प्रकार

जोच्च जोच्च जे जोयी पो ।।
ईसो चंद चंद पाख पाज राज पोयी पो ।।
जी पाज राज पोयी पो ।। ९ ।।
रुपक चेस के केस देस देस करवता ।।
वच्चे सेरा सजां वाडिं पात नेस पांमता ।।
सुरंद चंद रीझ सुं झरि रदतें जीपो ।।
ईसोस चंद चंद पारव पाज राज पोयी पो ।।
जी पाज राज पोयी पो ।। १० ।।
प्रेम के मारव द्वार पारव मारव मास संमिले
लंत पारव कोड़ लारव वास वारव ले वलै ।।
वलो वलो कोरवखांण हीला के जास पोयपो
ईसोस चंद चंद राज पारव पाज राज पोपि पो ।।
जी पाज राज पो पी पो ।। ११ ।।
प्रथंगह— सुज रंत स सोतं ।।
रुमिया मात पिता सिन प्रंमर ।।
पेग वांण रे वांण ।।
चैल गुतं सि गुण पाते ।। १ ।।

दुहो – देवी मोतु से गुणे ॥ गाउ चंदो रंग।
त्रिभंगी गुण छंद तवि ॥ दुहा हंस वखांण ॥१
एवं छंद जाति त्रिभ भंगी ॥
तो गुण देगुण वति एति नोरन
इकली वह हल वध पति इति दुगं ॥
मणि रासा मती तेज हिपंती
मल चक्र वती मस मणं ॥
है मोज हसती नित हो पंती
प्रोपे चन चरती एण पांर ॥

चनाप ध्यन चंद कोरत
व्यंद तौडं छुटें कवि
तारं नी तोड़ छुटं छानेतारं ॥१॥
सिरदार सक्रजं तेज सतेजं
प्रणोपै भुजं चार भारं ॥
रंगो पंद रजं पंद
सहजं कुशील जंघ तारं ॥
मप वैसी मजं सार
प्रनजं स क रसिर ताजं ॥

काहि सारं - चवीपै च्यिन चंद्र कीरत वंदं
तोड़ण जुदं कवित्त रंजी तोड़ण
जुदं कवि तरं ॥ २ ॥
सहं सिरैं सम धंधोर सबथ
साहण कथं दिम साहम ॥
सति पौपै पथं कोह भरे वधं
सुर समथं सस याहं ॥
नर कोई नथं तौ वड़त भंम
धं जामिलि जुधं झुझारं ॥
चवीपै च्यिन च चंदं कीरत वदं तोड़ण
जुदं कवि तरं जीतोड़ण जुदं कवित्तरं ॥३
सिर दार सिंघालं नेज वडालं ॥
भुपनिसालं भुजि भालं ॥
धोजे धोगलं रुपक मालं
पिंगल वालं कवि वालं ॥
सभपै सुडालं पासि पचालं
सब भुपा सिर दारं ॥
चवीपै च्यिन चंदं कीरत वदं

तोड़ण कुंदं ऋषि तारं ॥ ४ ॥
पह चंद प्रचंडं ॥ मति मुख्य उंडं
रेवरण खंडं दुःखंडं ॥
उंडी प्रण उंडं वड वालि वंडं
मि लिये कु संकर छंडं ॥
प्रति मल उडंडं वड
ब्रह्मंड प्रारेख संडुं उदारं ॥
चवीसे च्यिन चंदं कीरत
वंदं तोड़ण कुंदं ऋषि तारं
जी तोड़ कुंदं ऋषि तारं ॥ ५ ॥
दरखां वड दवा तेज छिलंता
मरता माया मरनंता ॥
रज वरां रता सुख कुल वंता
भेद लहंता मना वाजंद्र उछलता
गज वहता देवण मता दातारं ॥
चवीसे च्यिन चंदं कीरत
वंदं तोड़ण कुंदं ऋषि तारं ॥ ६ ॥
चंदा जिनता चांया चवत पंड

वाजेण दुतां जागे वालं ॥
रेणका माता करस नयतां
खितखी निरतां खलै वै गालं ॥
मा किसन देवकी कोसलया रघवी ॥
भरथ सत्रु की जोग भारं ॥
चीवै चिन चंदं कीरत
व्यंदं तोड़ण कुदं कविलारं ॥
जी तोड़ण कुदं कवि लारं ॥ ७
खुजे सीरवज कुंवर रासा सर भर ॥
चोड़ चाचर चरु ढ़ारं ॥
सारस त्रां सिर देवण
पसर जाहर पाथर खलजारं ॥
लीधै चुंमर जोर लस भर
वीजै सिर हर वडु ढ़ारं ॥
चलीधै चिन चंदं कीरत
व्यंद तोड़ण कुदं कविलारं ॥
ढ़ज्जवे सउ जालं दलो कहालं
वीज वडालं चंद वालं ॥

दुरजण दाढालं चमल सकालं
श्रीपिरक सिचांलं दड़ पातं ॥
भड़ थोलो भालं लाल लंकालं
वो-जि विसालं चंद वारं ॥
चवीयै च्यिन चंदं श्रीरति-
व्यंदं तोड़ण कुदं अविलारं
जी तोड़ण कुदं अवि लारं ॥ ९ ॥
राज लोक कड़ांणां फिरुं
वरबांणां वडां व्याणां व्यांणां
चंद राज सराणां भली भुजाणां ॥
श्रीपि श्रापांणां ईच्छ कांणा ॥
दिन मोज दिवांणा कुंदण के
श्रेण श्रथ श्रापांणां श्रण पारं ॥
चवीयै च्यिन चंदं श्रीरति
व्यंदं तोड़ण कुदं अविलारं ॥
जी तोड़ण कुदं अवि लारं ॥ १० ॥
उमिराज सरोही सुर पति जेही
वो जि वडे ही वाचे ही ॥

अनि नर रे हीन स्वमीदन-
केही जांम लि जेहो जाचेहो ॥
चंद चवे ही चंम सोहती
चारण तेही चुरु चारं ॥
चवीपै चिन चंद श्रीरत
व्यंदं तोड़ण जुदं श्रवि तारं ॥१२॥
चंद साथे पटं तीच सुभटं
चट पचटं गा हटं ॥
गज चट दु चटं मट
मसटं जोर श्रटं जम जुटं ॥
पति तेज उलटं तेयण
रूप देपण प्रगटं तारं ॥
चवीपै चिन चंदं श्रीरत
व्यंदं तोड़ण जुदं मलितारं ॥
जी तोड़ण जुदं श्रवि तारं ॥१३॥
सब पोरंग सारं तेज पगट-
हंरंस सगारं रिम रहं ॥
तै सिर सोताहं वात श्रटं ई लोंव

सारं उछाहु ॥ दुहु वेराहं मेल राहु
रहे के सनां एं हर खारं ॥
चवीपै च्यिन चंद कीरत ~~व्यंद तोड़ण~~
व्यंद तोड़ण दुरं कविलारं ॥
जी तोड़ण दुरं कविलारं ॥ १३ ॥
=पागम =पसुरांगा मेल करेंगं
वातर चोणं वयणोगं ॥
दलेल वसारां च्यिनो रांगं
चंद ना जिसागं दुव रांगं ॥
चरा विसागं दुरव मिटागं
सुरव रचागं सिं सारम ॥
चवीपै च्यिन चंद कीरत
व्यंदे तोड़ण दुरं कविलारं ॥
जी तोड़ण दुरं कविलारं ॥ १४ ॥
नर नाह निरंदं सिरे चवंदं
वयण गयंदं वाजयंदं ॥
सुरलंग सनंदं सिरव-
सुरिंदं ईद सयंदं ~~ग~~ रवंदं ॥

दुहुं रहु सदेवं मेटि-
मसंदं प्रायो चंदं उदारं॥
अनिवै चिन चंदं कीरत-
चंदं तोड़ण छंदं अचितारं॥
जी॰ तोड़ण छंदं अचितारं॥१५॥
रंजै चंदं रंगा पंद
सुजांणं दीह सुनाणं दीयांणं॥
वाडि मनु हाणं मेर-
प्रमाणं तोल वडांणं-तवीयाणं॥
मोज दीवाणं वड माहिरांण
पंद्र वडाणं प्राचारं॥
चवीवै चिन चंदं कीरत
चंदं तोड़ण छंदं अचितारं॥
जी तोड़ण छंदं अचितारं॥१६॥
पुण देवै पमंगं जाणि
पुमांणं गचिन करणं चारणं॥
जुध्य जागण जंगम भांजि
प्रमंगं जस जपंगं जोरंगं॥

दुहुं रह सदंयं मेटि-
मसंदं सायो चंदं उदारं॥
अविदै च्यिन चंदं मीत-
व्यंदं तोड़ण छंद अचितरं॥
जी २ तोड़ण छंदं अचितरं॥१५॥
रजै चंदं रंगा पंद
सुजांणं दीह सुनाणं दीयांणं॥
वाडि मतु हाणं मेर-
प्रमाणं तौल वडाणं तवीयाणं॥
मोज दीवाणं वड मालीरांण
पंद्र वडाणं प्राचारं॥
चवीदै च्यिन चंदं मीत
व्यंदं तोड़ण छंदं अचितरं॥
जी तोड़ण छंदं अचितरं॥१६॥
पुण देवै पमंगं जाणिं
पुमांणं गच्यिन मरणं चारेणं॥
जुध्य जागण जंगेम मांजि
प्रमंगं जस जपंगं जोरंगं॥

दातिह भंजीयो ॥ स चंद्र सेण रुद्र सुरतंण-
रो चोह पसुणो अवे पुजे यो ॥ १ ॥
गुण चित्रै प्रसमांण अमण चरती मायाहै ॥
गुण उपाई मेर अमण सामंद फेरोहै ॥
घण बुंदं बुंग गिणै अमण प्रनपोपति
जांणै ॥
मै ॥
अमण रेण अण अहै अमण तर पस्वरवा
लोप मुक उकति जपीया
जिसा तवै सुकोव रिसा तवै ॥
रीझ जे चंद्र सुर तंण रा
वातां खीच्यां पड़ि वैं ॥ २ ॥
गुण संपुरण लिखतं प्रसीया
थान सीव्य गाम श्री उदै पुर मधे
लिखि यो राजा जगड़ण रीयो थांसु
लिखाप्यो संमत १०८५ विरषे
आसोज सुदि १२ गुरे वाचै जणो
गाडुर सुरां मरांम वाच जो जी ॥

सुकन कुमार सुणा ज्यारे लांकले ।।
वालेते उपरे नाच्य पैमे चले ।।
नाच्य कुमार सीखांन मेलो करे ।।
काल बिण तु दुसरो कोइ न सके करे ।।
वजर पड़ता मोह रमण मांथे वज्र ।।
मलप कुण पेग चालै होवै महो वन ।।
नाग कुण पार की पाथै धर लेवै ।।
देखि कुण पव विण नाच्य मुख सिर
देवै ।। इसो कुण सिस पाया उपरे ।।
तिसो कुण मनव विहु बांहु सागर तिरे ।।
नर इसो रमण हरि पागली नह नमे ।।
इसो कुण मन वच क्रम कारसी संगमे ।।
कुमारे कुंवर रो तेज उमांगीयो ।।
साथ माहे सरतणो बल सामीयो ।।
महे सोरा कहै सोहड़ काचो मतो ।।
लोग वचमोर कुमार रो लागतो ।।
~~काची~~ काची बातां इसी कुंवरजी भांख रहै ।।
रंग धर मां झली प्रथणा सत्र रहै ।।

के एक खुरसा मध्य नीह वालं करे ॥
महा मड़ सती हुंकारे वाला मेरे ॥
देवीयां तणी हुवनसी गवी करे ॥
धुरा के मस्तीयो दांतडुं गिर चरो ॥
झम झरि कुंअर झुकार नह कालीयो ॥
परा कुंअर चणे माथा से पालीयो ॥
कुंअर कहि आप पारंभ का चा मेरे ॥
पहाड़ां तणा रिख पाल सांमल पेरे ॥
लोह कुंभ पाणि वच्चणेर सिरसो तणे
प्रदेने किसन किसना क्रमण उनमे ॥
खुंढ तर रंग च्यर रेस सांमल खमे ॥
उगमे प्राध मण नै पाचमण उगमे ॥
सांमलै खमे पोर समा सै सही ॥
नवै खंड मेदनी मेह वरसै नहीं ॥
देखतां रंग च्यर रेस देवे दोयण ॥
जमी नह नीपजै जलै नांही जलण ॥
सामलो नाम सच खन ता उजलै ॥
धान पती रिण चढ़े जिता सगला छलै

सांमलो होऐ विवै पंजर सरणाइयां ॥
दावड़ सांमलो ओठं भष राइयां ॥
सामलो वीर वीराच्च मच्च वनसुतन ॥
अहे सांमल सुदन भौज वीरम अरन ॥
सांमलो साम सनाह पाखाड़ सिच्च ॥
सांमलो वीर पवसांण पाखाड़ सिच्च ॥
हेड़वे वण भड़ वण भड़ हेड़ तो ॥
मुंह गोजिये मेवाड़ वोले मेड़तो ॥
वडो सांमल दुहं दीन वाखांणीऐ ॥
जिको क्रिम रराजुं जोच्च जणजांणीऐ ॥
खीजिये प्रथम वच्चणे सिर करिखण
सांभ पड़तां समो से ठ पैठा सचण ॥
वाच्चरट थार नवीया टलीचे वसण ॥
च्चर हरे करे वाभलो जांणे सचण ॥
पड़ती सांभ वचणेर च्चर पसरे ॥
थार दीवो च्चवर राय हर थर हरे ॥
छकीये भड़े तेजी पसंरव घेड़िया ॥
खेड़े चैस हण भी विण थारदल खेड़िया ॥

के इक रुसा मधजीह वातं करे ॥
महा मड़ सती हुंकारे वाला करे ॥
पैनीयां तणी हुवसी गवी करे ॥
धुरा के मरीयो धांतडै गिर चरो ॥
झम झरि कुंजर हुंकारह कालीयो ॥
परा उंपर धणे माथा से पालीयो ॥
उपर कहि रूप पारंभ माचा करे ॥
पहाड़ां तणे रिरख पाल सांमल करे ॥
लोह हुंम पावि वधणेर सिरसो तणे
प्रधे ने किसन किसना झण उनमे ॥
रुंढ तर रंण धर रेस सांमल खमे ॥
उगमे पाध मण नै पाधमण रंग मे ॥
सांमलै खेम पोर समा खै सही ॥
नवै खंड मेदनी मेह वरसै नहीं ॥
देखतां रंग धर रेस दे दे दोयण ॥
जमी नह नीपजै जलै नांही जलण ॥
सामलो नाम सच खत्र सा उजलै ॥
खात्र पती रिण चढै जिता सगला छलै

पसण चांस्या हरु ले पला चुमरी ॥
लड़ीया सीर मीलल पखां ये तुरी ॥
वेर कुंमार सुं काल राखीया ॥
सेल हथ उथरे सेन सां काढीया ॥
के हीक उडुरे पालिये सुं कुंवर ॥
कुंवर सांढ़ीजी नही कुंवर चर्यो णोर चर ॥
कुंवर माहे साथ पागलीख वर करे ॥
मेड़तो कहेन ह भांजीयो मंडो वर ॥
कि सुं थां पागली मुलक मक हीजै ॥
छह तेरे भड़े मेड़ली पा व छीजै ॥
जांणे छो माल जे माल थुई जिका ॥
तवां थां पालिग वाल कसुं चिकां ॥
वीर पल दिली च पांणी कुंवो नेह ॥
कथ ति का कुंवर जी जगत सोरे रेह ॥
वले वाहि सांमलो पेद कुहो वले ॥
सांकलो जै मला वीयो जोग सांमले ॥
खाग वलि नांम जै माल की धो खरो ॥
मारि नै भांजीयो माल मंडो वरो ॥

वे छंगे ऊंपर रहीयो जती नारियो ।।
मदर वैराट थर दांतड़ो मरीयो ।।
दांतड़ै दांत खाय करत फुसेरो ।।
ग्रह हुवो नहिं सेल हथ गिर थरो ।।
गिर थरै छले जो ऊंपर पाकत थरां ।।
मड़तां राखि गत हो व्रत मंडो करां ।।
गाम सुनो थर न हुवो गिर थरो ।।
कलीयो ऊंपर जी गांम माहे फिरे ।।
लुटीयो गाम लीध्या खरक धा टले ।।
ऊंपर गुरु धावीयो मोहरि सो वति करे ।।
थो पारे रांण थर ऊंपर गुरे थको ।
उरस फिक तो थको वाहुड़े धाज को ।।
विचु से रांण थर वाग दल वाड़ियो ।।
धाज कै सो वनि मोर रेउड़ाड़ीयो ।।
धठे पंता पाछा जो जांण वहला होय ।।
धागली धवाईमक हे जोणां उथे ।।
धायकां पार का रांण थरै ।।
पिंड पहरै सिल हवा जके पखरै ।।

जांण इ पो परेो पलक नहजोड़ियो ॥
छोहलारो वले सामलो देहि यो ॥
प्रावीयो जांण उस्यां पलां प्रागले ॥
तिथुं सेणा चर केही कथा छावले ॥
सामला श्रवण रे सह संभलावीयो ॥
साहंचे प्रातंचे प्राहंचे घर प्रावीयो ॥
साथ सोभाग रे होज सुहा वीयो ॥
प्रावता सांम सुं साथ लाहे प्रावीयो ॥
मछवल वालतो मछरियो रे कमन ॥
विण रवट प्रम्ही प्रगटीया भाण कारवदन
तिसलत चाड़े निले तिल प्रसण वेनड़े ॥
प्रनंत बलि छलंतो जाणि ब्रह्मंड पड़े ॥
ति जड़ करतो लतो तेय मध वन तणो ॥
वाचियो जाणि बलि छलण भजि वामणो ॥
नगा मला नुरि कहे नाम लां ॥
कुरु कुरी सहर चाल हुई हलां ॥
वडो नीसांण सुर पात्र जाति वाजियो ॥
गहर करि जांणि भद्र वस पणगाजियो ॥

सांहमो सांहणो मन हुओ सबे ।।
विलंब मांहेंग वेगं भड़ांमसि ध्वे ।।
दुसिरं भड़ं वण वाज वहलादेखो ।।
उगहंचे वेग राय काहण भाणा वीयो ।।
सांहमो हुक्के वडो आयो सहणं ।।
हुव मारी हुई थार हिसार वण ।।
पालि वंधण परा झुल कीधी परी ।।
सांम पागलि वलत्र वणे विण सुंदरि ।।
वा पुकारे भड़ा मुख हु बोलीयो ।।
वेंगरु सोहीयो वेंधणा खोलीयो ।।
घोरियो हाथ तेजी नियट काबीयो ।।
पंग उतंग जां साज पोपावीयो ।।
नाल मुढाल पदु पोने पखंमला ।।
सोहीया चंद मातल सोलह कला ।।
पज पातला तणं च्यम पति पोपीया ।।
जोड़ नांमी सुफल सिंध पतिजोयीया ।।
पुतिया च्यार हावणे पति पुवली ।।
जंघ चंत्र वणे सांणोर खंभ जामली ।।

सांहमो सांहणो मद्द हुओ सबे ।।
विलंब मांवेग वेगं भड़ांप्रसि वबे ।।
दुसिरं भड़ं वण वाज वहलादेखो ।।
उहंचे वेग राय वाहण प्राणा वीयो ।।
सांहमो हुक्के वडो आयो सहणं ।।
हुव मारी हुई थाट हिसार वण ।।
वालि वंधव परा भुल कीधी परी ।।
सांम प्रागलि वलत्र वणे विण सुंदरि ।।
वा पुकारे भड़ा मुख हु वोलीयो ।।
रैवं गरु सोहीयो वैधणा खोलीयो ।।
केरियो हाथ तेजी नियट कावेयो ।।
प्रंग उतंग जां साज पोपावीयो ।।
नाल सुढाल प्रदु प्रानि वजंमला ।।
सोहीया चंद मनाल सोलह कला ।।
प्रज वाला तणं च्यम प्रति पोषीया ।।
जोड़ नांमी सुफल सिध्य प्रतिजोषीया ।।
पुतिया च्यार हावणे प्राते दुवली ।।
अंध चंत्र वणे सांणोर खंभ जामली ।।

वो जीपा मंत्र तंत्र मंत्र उतंग बले ॥
ढाहरे पुठ वाजो ठ झाट हणे ॥
लाल नां ग्रीव को भीड़ ई लोवीया ॥
प्रभंग तिन खल वाजीस्म ओपिया ॥
जोवणे गब्ब कोल लागो घंघरे ॥
वो जीपा भमर रिय झली मुख वाजरे ॥
वाल छाड़ो मस लि वीर कपकणी पो ॥
प्रमल ॥
सिरव नरवा कि च सि णमार ताकर सकल ॥
रोहे पो कण रीछे रथे सिरमरे ॥
प्रभंग जांगिर पहाड़ मे पखरे ॥
लुंब मुखां झीपो साज तो डनीपो ॥
प्रचंम गति सांहणो वाजले प्रावीपो ॥
खम स प्रम सांहरै वाजले तो खुरी ॥
उहे पड़ लाव पैवाल तो उंमरी ॥
फाव तो डोर नां सांकरै फड़ हड़ी ॥
छिम छिमे पाव झलो तुरो छत्रड़ी ॥
इतै सांमल सुवपि प्राप पहरे सिलह ॥

नव साहस रुप सिंघ विलंब कीधा सनह॥
पौमीया सोर मोजा सुकिण कोमला॥
साही ग्रा राग वेकाक उरे समसग॥
प्रिसण उपरे करे लह कजि कुचीजो॥
बहसि कीस पंगल जालु कोकांचीजो॥
बहसि उजली सिल हर गलितीके पंतरे॥
उजलो वसे छडाल ने उपरे॥
भलो मणि के रोप, मल तणे भाली पल॥
सिसन दीनो मुगर रास सभीये अमल॥
जोच्च हर उभरण हाथ हाथल जड़ी॥
सोह दस सीस धह भीड़िये सुजड़ी॥
भणे सह कोप वांची रनड़ग रोण भति॥
स्यंभ सामल सही वणे वां मे संकति॥
डाबिये तीर नवीये सतरग सड हे॥
व्यातंग बांण गोले हाथ झले ग्रहे॥
वेण वेला पति वंचे उरस॥
ईतेम साहणी वाज ले पावीजो॥
मति दीठि रमे संग्राम मन भावीजो॥

पागड़ो वांधि दै पुठि पाचारीयो ।।
ईसीयो नीचे तीचे लुण उतारियो ।।
चंधि र के वहै पुठे सांमल चेड़ ।।
खेच्च लागो थके खेड़े व प्रति खेड़ ।।
हैम राहड़ वड़ा दड़ वड़ा हुव छड़ ।।
साकुरा सार नीसार खेड़ै सो होड़ ।।
रावता केड़ नह केड़ कोई हे ।।
वाज उला काया चंध लाग वहे ।।
काम नरिवड खाग प्रंगहु प्रा झवां ।।
साथ आथो मेला सर मही से सवां ।।
खेड़े चे तुरी नह खेड़िया रनवरा ।।
के आंका नु मीयाता जाणा कढरा ।।
पहुचे सांमले खुर पुतारीया ।।
लो हैर मुखीपे वाज ले हुरीयां ।।
खोच्च भला तणे सुरत न प्रांमले ।।
साकुरास छोहा खेड़िया सांमले ।।
जोच्च सांमल तणो न जीसल जोड़िया ।।
खहण प्रेरां केपां उरवड़ खेड़िया ।।

सोरंपि पो सामलो कमल छिव लो परस ।।
सर करित माल ना पत्र छिव जांणी सिस ।।
कछु छप मुंपंगे ग्रहि सांमले वंण वणा ।
के तो वतो वह नई उय सांमले तण ।।
प्रीमें भड़ रे व्हा रो वहो प्रांमलो ।।
साथ पंड पंच सांमल मिलो सांमलो ।।
विसरियो लोचेन मुछ वे चल वालतो ।।
प्राज को गो ग्रही पालह प्रभु प्रालतो ।।
पमंग पड़ताल पापाल मह पुरियो ।।
वंग रज उपड़ी प्रंत हर वरियो ।।
लोग तस हर वचे लगतापंग प्रंग
प्राज मां हुई जोचां निहुं प्रंगे प्रंग ।।
मलय प्राच्यो मणा देपै पग मागीया ।।
वाहरां जोपै मार्ई सरा वागीयां ।।
रहीम साच्य मुमार नह मिले रिण ।।
वाहरां वार तै मार जोपै विण ।।
दल रजी उपड़ी साथ हर सावीयो ।।
सोह सांमल धेरा वाह फ प्रावीयो ।।

सांफलै सीह राँठौड़ सांमल सुघ्घौल ॥
जुड़ै घट प्रांण माहे सकज जोगड़ो ॥
खड़ै कांनैत भाथीकलह खाजि खड़ो ॥
वीजरे भड़ ईम वलीया मुकवग ॥
सोचव चिरकाय हुं जुर कीधा खड़ग ॥
रखि हो रखिव रथ प्रण सुं मैहरीव
स्यंभ नारद प्रछर सं मिले जोवै साहि ॥
नारू का तीर गेती पै तार लड़ ॥
विहै तड़ मंडीया इणवीया वार बाड़ ॥
होक कोकां हुलां सावलां हांजरै ॥
नव सहस्र तणा भड़ विनै घड़ लिहं वरै ॥
च्यार पाहार गुरजां तणा घुव भा ॥
जुवै जुक मार घाड़ तथेयां हुवकां ॥
वला वल वैनै पल नाजि वीजु जलां ॥
वाजीया सुर जुध जुर रिण वा वला ॥
च्यार पहार प्रो झट झटै घड़ घीया
जुर पड़ि फेर मरां वे करक कड़ घोष
उभै दल झार झड़ि दलार खड़ि पाचीया

सांफले सीह राठोड़ सामल सुघोल ॥
जुड़े चहु प्रांण माहे सकल जोगड़ो ॥
खहै कांनैत मायीकल्ह खाजि खड़ो ॥
वीणरे मड़े ईभ राखीया झूझ वग ॥
रोचव चिरखाय हुं दुर कीधा खड़ग ॥
राखि हो राखि रथ प्रण सुं महे रोव ॥
स्यंभ नारद प्रछर सं मिले जोवै साहि ॥
नाऊ का तीर जेती छै तार लोड़ ॥
विन्हें तड़ मंडीया इनवीया नार बोड़ ॥
होक्र कोकां हुलां सावलां हांजुरे ॥
नव सहस्र तणा भड़ विनै चड़ लिहं खरे ॥
चार पाहार गुरजां तणा युध का ॥
जुवै जुक मार पड़े तथेयं हुवका ॥
वला वला विनै फल बाजि वीजु वला ॥
वाजीया खुर जुध्य जुर रिण वा वला ॥
चार पहार प्रो झट झटे चड़ घीया ॥
जुर पड़ि फेर मरं वे झट झड़ घोया ॥
उभै दल झार झड़ी खार खीड़ पाचीया ॥

भार भड़ बार बीड़ पैड़ प्रभ भवीया ॥
सुजड़ां कुट बीड़ चुभ पीड़ सावला ॥
निमल वेह वार मांडे उजला बीजला ॥
वहे वाहे वडा सुर वेवै विवै ॥
चुरतां खलां दल छेहदंतै चवै ॥
चज वड़ विजे चड़ राठवड़ चड़ दीया ॥
काल कलि चाल वेकटक कड़ दीया ॥
चमजग रव जर चारां तणां चुंखला ॥
ठाकुरां ठाकुरा हुआ सिण मांगला ॥
खरड़ का करड़ का वरड़ का संग खल ॥
तोतीया टुंचिया डील हुआ उला उल ॥
ताढीया तल छिया तेग संग तल वीया ॥
संग वरंग लाह प्रभड़ां चड़ सोभिया ॥
पसंच वड़ के कड़ कमड़ के संग मुड़िया ॥
कम चजे सार लेरवा परवे उड़िया ॥
चाड़ि रै राड़ि चाले चाड़ि चड़ हड़ ॥
इवीध जुरा करक वेव खार खड़ ॥
वाढीया खंडीया संग वीजु जले ॥

डफो लीपां डुचीपां डीलुहुआ डले ।।
फाड़ि फोड़ि छिपा मड़ा देख काचरा ।
चापड़ा के चड़ी चुरली चाचरा ।।
गाहि मड़ नीकड़ा चीकड़ा मड़गत्रां ।।
सुंसरा गात उर पर कारां सत्रां ।।
रुमंग मड़ नीकड़ा नाकड़े प्रानीपा ।।
सुर सुरे मड़ वंस सोहा वीपा ।।
जाट के नाटीपा रोहिर नुहा गत्रां ।।
पीमण ले जोगणि पुरा भरि भरि पत्रां ।।
मारि मुरड़े करड़ रिंग वीपा मालीपां ।
सुर सुरे मड़ सोहीपां मालीपां ।।
रुंड मुंडे हुआ रेवंता रावता ।।
रनं खिहड़ पा खत्रीपो वे खता ।।
जुग मग हुआ मड़ हेक झाट मड़ें ।।
रुंग निर लंग रोकां थीपां उथेड़ ।
वरंग रंग हुआ वे वे का करवेड़ीपां ।
ई चरख चड़ वे हेड़ मीपा उचेड़ीपा ।।
चाप सामल सिर सं मीले नाप वरं ।।

वादीया वैर हर भीमा जिम वालरां ॥
वीछला सर्मा श्रम पखे केहरि वेह ॥
कर वाली नामरखे चंद जां लगा रहे ॥
पास ऊंन दखीलो साभिक पो पावचे ॥
वडि मुचरा सुत न जगत सौरे वचे ॥
दयाला राखजे तो तुंही जोर दलै ॥
वाल मड़ मुकन राख सीचवि ऊंग कले ॥
सीह राठौड़ विण दयाला खिण सभै ॥
निवड़ वेणं तुहीज जागड़ो नीभजै ॥
सौभीयो सांमेलै रेवत मध्यव सुत ॥
चरण ईम कहे सांमल सिर सचनो चन ॥
दुजड़ वाली मारि दोहारि पैलां दलां ॥
सही जिम जीत पाई मुजां सांमलां ॥
परि हरां तणे भागे भिड़ पामलो ॥
सारे वोलि समंध जी तो लेड़े सांमलो ॥१॥

श्री प्रथं कवित—

सांमल जी तो सारी वात ससार वचांणी ॥
भिड़ वांधि भेड़ते घात दुआंण जण वांणी ॥

मध्यवन दास मुकंद मोहत चोड़ जे मलां।
उहा वीरम देव मणे जीपां मलां मलां॥
संसार मर मारा हीयो व
वार्डिम जगत विस तेरे॥
सांमलो जीति पायो समर॥
पहवा पारंती थेरे॥ १॥
प्रथं छंद संपुरण लिखतं पासीपा
मान सीप्य समत १८ ८४ त्रिरवे
काती वदी ४ सुके गांम मी
उदेपुर मे लिखि पा वाचे जणे
ठाकुर सुं राम राम वांचजो जी॥
— जीत जुनो चांजत पुत्रा जरा राव रिण मल
रो बेटो राव रिण मल रा पुत्र
मे कांमि पायो गीत —
रुण झुणीपा रुक प्रसल चाप भेदे॥
तुंग मर सिनि कसिपो तन॥
रिण मल तणे वसंत रीत रिम दल॥
मोरिपो चंपो मरण दिन॥ १॥

राय चांपे तुव चरीत्र रिणं गणि ॥
गह लोतं दत्त गंध गुणि ॥
पारिस तणे प्रीतिपा परिमल ॥
दद्धक डंड उच्च दंपे ई भणी ॥ २ ॥
मिलियो सेन अरंगे मोहेलां ॥
महा वसंत रित राव मोसे ॥
सांग पसालम चढो सिति मुख ॥
दीपी यो चांपो गुहं दिस ॥ ३ ॥
वाड़ी पड़ा सुविरन चाय विहंडे ॥
वारि लहंवे श्रीयो निझरा ॥
रोहणि चांपा तुव रियो पीपा ॥
चहुं दिसे दुंबीया चंद पडास ॥ ४ ॥
रिण मालोत तणे रिवि दिण मुख ॥
मिले महा रत्न वास विविण ॥
चो हो व दयुर वह चरि आमीया ॥
दलि मल तिण तुव चा याचांण ॥ ५ ॥
वीर महेरे निलंबीया वड निस ॥
वहता चंचला रेज सवास ॥

रो ढ़ांमी मुंढ़ं मांधो कवीढ़ो ॥
प्रवच्च भमर वच्चे तिण प्रास ॥६॥
वैरु ईढ़ां वसं नरित वलीढ़ां ॥
दो मीक मुढ़ डंपलीढ़ा डस ॥
कांचे काम चुढ़ं दिस दोलेटा ॥
काल किलि मुख वै किर माल ॥७॥
पंखा रव च्यार रव पी जुरि ॥
क्रिसल मिसल किर माल कील ॥
चोरंग मोमि चढ़ंतो क चांके ॥
दीपीढ़ो रुढ़ो रंग ढलि ॥ ८॥
सार भमर देत तन समहर ॥
हसीढ़ो वाढ़ी प्रीत हवां ॥
भमरं चांपां चांपा चट भंग ॥
भागो तण हसणो भक्कें ॥ ९॥
उरच्च कमल कर कमल श्री कमल ॥
रुक भमर भेदता रण ॥
चीतोड़ै दल पणीयै चढ़तं ॥
मुजे बास जस सुर ओढ़ण ॥१०॥

— गीत लरि सुर वारट रो कहीयो —
गीत वीका सीचल रो —
करगि साहिबे मेल उडेलत देतो कलाहि ॥
लावतो सच खां मही लीका ॥
दलां रो पंच दुनि पांग साहि दाखियो ॥
वंस रा थंभ वरीयांम वीका ॥ १ ॥
पढ़ा लो ग्रेह खेतल तणा छवडा ॥
पुकल वल पकल मे वास रहीयो ॥
दल तणे रुप संसार इम दाखीयो ॥
कुल तणे रुप संसार कहीयो ॥ २ ॥
साहिबे अत प्रभुत सीचले सगत ॥
परि हरां भुजवे मारि म्रां को ॥
पैसि मे वास वांका कीया पाचरा
वीकड़ो कहाई तेण वां को ॥ ३ ॥
— गीत सो ली की रतन सी कचरा वत रो —
प्रासा नो कलो रो कहीयो —
चर जो मांवे चवाजते ढोले ॥
माथे बांधि मालु मोड़ ॥

रत्नी सीमध्य ऊवे रतनै ।।
~~अ~~ रहिया हौंड चारि रहोड़ ।।१।।
दुजा वर जाइण नह दीन्ही ।।
दोरिवां माथै मिसी घलि ।।
वौड़ सुर वाली रच रावत ।।
वा घोली इधा पैरे वोलि ।। २।।
लगण वतु तणी कथन सुणी ।।
तो सुं रतनो ऊहै त्रिसीध ।।
जब माथा जो मांध्य ज्यांरा ।।
सीमती पांरी दुरजण सीध ।। ३।।
रमध्यज मिसण रजतै चालुन ।।
दुहुं वेध लागं धर दीह दीध ।।
पाली मांजतां मोजे पिंडु ।।
जां पाली मांजणो न जाय ।। ४।।
— गीत सकलावत रावत प्रचल रासरे —
पधरि सार चारां मुंहे मांडिरिण पाधरै ।।
फुलुल बेल प्रचल नीप वेस उजालै ।।
देत निच प्रटकीप्रा रटक दुरवेस चा ।।

काढिया वाढिओ गाढ कोले ॥ १ ॥
वाढि हे वांण तुही मणि तुजुवलं ॥
मांमि चे भांमि वण थर समेला ॥
घड़े राहिया पेस्सण जे भांगे ईला ॥
भड़ फड़ कीया गयणा ग भेला ॥ २ ॥
तुर सीसो दिणां तुर वच्चीओ हुवंसि ॥
पाथरे मार थारां मह पहरे ॥
उभर चड़िया जिला तुर कीया
हलग ॥
हालीया कीया चर चरम हारे ॥ ३ ॥
गीत रमन नर तुर कास फ़ल्ला वतरो-
पछरि वाजि चड़िया लेग ॥
गाजि हर पसर पे ॥
निसर होय चमजगर दिण निचाले ॥
नरे भालां सिरे त्यार फ़सिनांखीओ ॥
काल राजाल मंखि वैर कोले ॥ १ ॥
हिचे नीय साथ भाराथ उच्चम हुओ ॥
तूंग तर वाहि लग रहे त्यारां ॥

पावरत नेणे पमसाण विच होरी के॥
साक्त की पा मुख तुरी सारं ॥२॥
पग पुरे देवस परम पुर प्रजे का॥
पुर लोहां नवे पाछले पांण ॥
नरे मक्कि होरी पो खरं विच लिखिये॥
काल मल को ल पड़ बीच के बांण ॥३॥
काढ़ियो काल रे मात फोजां करति॥
हर फेर हीकला पां मग्ग हसीयो॥
पच्चरो खला पोलो मलां उरवले॥
वीर वर वडो वे कुंठ वसीयो ॥४॥
— गीत रागेड़ भगवान दास रागेड़ रो —
कीयो रंमपण लंक कुर खेत माथकीयो
पोचि कोप पोखियो जोच्च रोहो॥
चे नपण वरण नारद पुधे तिणे॥
कहो भगवंत भवंत कहो॥१॥
दैत कुपि कंवता पंड कुर देखीया॥
कहे सिव कहे रवि कहे कंमि॥
गंग हर पामरण जिसो गज दल
गिलण॥

सारवि दै पुरतां पारबी लाभी ॥ २ ॥
संकर सहस कर नंभर सांभलो ॥
राय रंभ भाजतै साथ राहियो ॥
पाय पलि दैन दीलन मोहरि पारबी यो ॥
वैरनां पांडवां न दो कही यो ॥ ३ ॥
— गीत माध्योसीथ मांज सीथो तरो —
मिरधरजी रो कहियो — गीत —
सांभलियो दिली नाथ सुरतन ॥
रावत वर सारा है रांण ॥
मुंहडै चाव मोहीया मथ भर ॥
सामां सार तणा साही नांण ॥ १ ॥
वैरां तणी करंता वाहर ॥
वैला हीन हसहीयां पार ॥
पडि भुंय डुतै भीयो पुर सातन ॥
सामै वद सुवणीया सार ॥ २ ॥
लागा संभै वदन लोहड़ा ॥
रांण वण वरसांणि वसांठी रोद ॥
मुंहडो सरवि मरै मांना वत ॥

हुरित तुझ तणे सीसोह ॥ ३ ॥
घड़ देहरा केत हर घड़ देह ॥
सेम परस दयान संचारि ॥
मुंहउ कीआ तुहीतो मुंहडो ॥
तोआ केरे सकत संसार ॥ ४ ॥
— गीत दूजो माधो मीच नीरो
गिर चर जीवो कीयो — जसि —
तुध चो जस वास लोह रसतुचा ॥
जाड़ कलो चर रोजु गाति ॥
वेद पढ़ा वाड़ी मांडेवा ॥
माधो मच कर मांन सुत ॥१॥
सोरंभ सुजस प्रीणियो सिव दी ॥
सार सवो दीन मोस मांग ॥
निचलां घरां मे निचंसण वाड़ो ॥
सवो नाम मध कर सुमाण ॥२॥
पारवर घरव पुर पुर मातन ॥
दंद्र कंड वध घरे दवांण ॥
जुंन सिलि सुरिव करन कलो चर ॥

सिंधी तुझ ईलिं नांम प्रमाण ।। ३ ।।
दिण सक पर वह सीझ गेस्त्रै ।।
धीर लहर जल सुरत चात ।।
देवा कमल कमल्ल मैल पुरे ।।
भमर करन हर रोही भांति ।। ४ ।।
— श्री माता जी साखि दे छी —
भारवड़ी रावल भीम री
वसीया वीर जी री कही —
भीम भलां भलो जी रावल राय हरां ।।
दन खग दीधेयो जी उमरि वरां ।।
वान नथारके जी पी वाघरां ।।
तोमें खाकली जी खांजने सीघरां ।।
तिन गत मह नरां ।।
जीहुं कल हे मरां ।।
पर हर भारवां जी
पर हर परि वरां ।।
पुसण पर चरां जी माहण गिर वरां ।।
तो गिर वरां ग्रह्मे सग्राह गढ पति ।।

वाह वे खग वाह ॥
रज राह जोगण राह ॥
खल दल दाह कोर कुवाह ॥
पढ़ि गाह पार प्रवाह —
पोरिस गाह जस कलि गाह ॥
कोह माह नीप वकि साह
विद्र वड़ सही वैर सराह ॥२॥
कलि चाल लित छताति —
कन्ह लित काल सीच सुजाल ॥
सुडाल दर गह लावत
वेगाल सै गव डुल्ल ॥
किण माल कोलि देण —
लाल केताई जीवणो जम जाल ॥
रिख पाल छल हथाल
रावल भीमलोल सुपाल ॥३॥
खग मार मुहि कोह थार —
वेसण वार दल खनी पार ॥
थिरि चार वाह लोड़ पार —

भंजण दोष्ण वालण भट्ट ॥
दिधनाट घोरमल हाट नवेत्त
चड़ण घोर घर घार ॥
घति घाट मरदण वार—
घति त्रिप्प कार तुंत निकार ॥
दुरतांण सुं धीकांण सें
विच तांणि विलुड़ि तांण ॥
दे घांण नमद घांण
दखनिरांण जुंरढ रांण ॥
धारांण क्रोडि सामि डांण डग्गे
रगो मछ रमली मांण ॥
वाखांण दिधी पमांण वचीणा—
मांण जिम कुलि मांण ४२॥
कंधार साह जी धार कोधे
क्रोध मुखि दल कार ॥
तिण वार तै हंकार चारि—
तिण सारि सार संसार ॥
भुज. भार मौलि जीण धार

भारी खार रख्य करि खार ॥
हर हार होय हर बार —
दुंता वंते धार वेकार ॥६॥
हरि राज संभ्रम स राज —
हिंदु रूप रारवण राज ॥
हुस्व साज मीत राज ~~साज साज~~
पण जोड़ि वाज जिहाज ॥
दध वाज लाग गिर नार —
दिन प्रति संदू जिल भाराज ॥
भरि लाज जीग सेर लाज —
भीमा ईस्वीचे तूं प्राज ॥७॥
दल पति छत्र पति माल —
दे गढ पति गोत गुपाल ॥
सत दति तुण भरण
सारिख वेउ विरद विसाल ॥
जैत सी देवी दास जग —
भल सत्रां चोपण सीभ ॥
उजलौ तैं मीपा उजला —

भुपाल परीषा उजला भीम ।। च ।।
पाते ओह मास न मिरह किंगल—
मंगल कलस प्र गीत ।।
खिण लारव अगसण खिच—
खण नाव चण वड चीत ।।
चन्न चसी फवक खिवा—
चन्न दह वणिण चन्न चन्न वेद ।।
खट भरवलई रित राग खट—
रस भीम जंपण भेद ।।१५।।
भरवडी संपुरण लिखतं चासीया
मान सीष चासीया राम सीष रीयो
था सुं लिखना संमत १७८१.
खिखे भादो वदी १२ ।।
—श्री माता जी साते छे जी नीसांणी रत्न
कल्याण दासरी कही गोड़ चन रच्य री ।।
चसि खोड़ चा चुंसांग छलते चतां
चाछोड़ां ।।
गुरड़ा रच पछड़िया चुलजान चुड़ा ।।

ले रहिया पासर गढ दे भेज दरेड़ां॥
नीजल वाही वेग साधा कीत ल जोड़ां॥
मेल गरदां खेल मैं मुहि खेल खोड़ां॥
धौरे कांमि पठमीया खल भंजि करोड़ां॥
लीया नमु खग खाड़ा का दे माल मरोड़ां
~~लीया नमु खग~~ मोडां॥
नाहर बघीया खाग के वीरे मांजिर
पति साही भुर खंचण बल दरेड़ बहोड़ां॥
चमलां कंधा मंडीया घंडीया काल्होड़ां॥
वीठल गिर धर वंकड़ा सिवरांम सजोड़ां॥
वीर नमे खेज पाल दे परि कंध मरोड़ां॥
दोय नाहर वीनेत का परि थाहर दोड़ां॥
मरि पचाहर पाड़ण पस नारां खोड़ां॥
दोय नमां दोय पाको भंजण खग झोड़ां॥
राजा का साजा रहो रखण सिचि
मांई परि जन खान साह ढुकराई मोडां॥ कोड़॥
मान मुरारि महा बली मेदानां चोड़ां॥
भीम भीरवम प्रद मठ भंज राणां परि बलती

अकबर की सिर छत्र पादशाह ओड़ां ॥
जोरावत तंग ए हाडां गढोड़ां ॥
भा हिंदु भा मुसलमांण सब वठी ओड़ां ॥
पै साह जिहां पति साह की पतिसाही जोड़ां ॥
नीसांणी संपुरण ॥ —

— मंडित - पवांजीरां रहिये चुहुंआण कीतांजीरो —
केसी जलाद धरीपाव ईथ्थ कसु जिवेल उघटे ॥
वार सार वे वार कंथ सोएकारेल प्रगटे ॥
तुं जिहां जनारिका वणे कोई सीव उड़ई ॥
गाजि पिता रांम कहे तांरिया कितांई ॥
सबलां रे हाथ कोले —

सबल सुर चंद कोर सारिखा ॥
वर वीर समंद हरगह
विच रयु कीतै सारिखा पए ॥
सपण वयण नह खुणे —
परी वे सामां पावे ॥
मीटै मिटै मेलै देख खुजे वचन हुरावे ॥
इसी वार पाछरी रै उण पार कंवा ॥

गमे गमे गावां यां नमे भस्तांरवे रेखां ॥
सबल रा सुर चुह प्रभा सुखि –
वडा सुरू चंद वदीया ॥
पलर गो ऽपर सारी त्रिथी –
ना ऊ कीतै नारीया ॥ १ ॥
कवित – जला उडीयारा – ठाकुरा गिरधर .....
सही मेलि पारिस मेलि –
मेले सुरा तन सम हर ॥
महलां माटी वनो चणी मेल्हे नाहीं घर ॥
जगा तणे जैत रथ वंस छत्रीस वखांणो ॥
रेकावात सांभली लागा रंगे सुरतांणो ॥
मर मर सूर भुज डो डोपो र –
सुर मगता सम नड़ो ॥
चंद हर नासि चड़ीया नड़े जम झापड़ीयो ॥
लीधे जोध निवेड़ कीधे यस रतुं नाले ॥
उला के ते जीमे जरद कसीये छकड़ाले ॥
कसि झावध छत्रां साजे
सोवन रा वनि हुरे ॥

जिसो सीस फण राव –
जांणो पंख राव विछूटे ।।
वालिवा वैर वीरं मेरो –
खांडा भांग तम वड़ो ।।
चंद्र हर नासि चड़ीया –
तेड़े जम फक्क पापीड़ियो जै तड़ो ।।
वंस रुप वरांपांम वडां चड़िवा वडाई ।।
लह वहीयां लोभीयां व्यणांजण हथो काही ।।
निर चारां प्रचार मार –
खन वट ग्रहै भुज ।।
पवाड़ा पहल आ सह उजला कीया सुज ।।
पावीया घर पजु पालोया
कैले हणा कैल हणा कोडीया ।।
मेवाड़ वर्ण चर माफ लीदा नारां गुरडोडीया
गाइयो
—— गीत – पन रथ गोडरा —
तन फुटा लोह लोह सिर नूटा ।।
पल खुटा प्रनि पल पेहर ।।
पल चंचल काल करे कूटा ।।

पारि जु जण मे जुध पमर ।। २ ।।
उडै चार चावरां उपरि ।।
पनड़े करि पड़ीया पनड़ ।।
छुटै चाव थाक नह छुटै ।।
जे जुटै तुटै विजड़ ।। २ ।।
मंडो वेरो पमे पग मेरो ।।
तण गाजी बांमेल तण ।।
उडै टक तुरक वे पास पर ।।
हाथ वे छुरा रहि चण ।। ३ ।।
पड़ि पाड़ीयो सलावत पाण ।।
गोरी राव तुरक मे गहन ।।
पगीजन पमर पड़ीयो पागे ।।
करि पारे जन हिलोयो करन ।। ४ ।।

— श्री माता जी सति वे जी गुण छंद कारणमाला-
रावल गांम रो वारठ पासा जी रो कहियो ।।
सांमिले वार हेम च सांजण पंच चारणं उछले
जो वीह पुत्र मोर बोले —

रवाल पुं रिस रवल रलै ।।

भड़ मचै सिह रां वीज झबकै —
मिले चंगल फर हरै ॥
रज्यंद पाता जांम रावल —
स्यंमतिण संभरै जी स्यंमतिण रित संभरै ॥
मदनै मांस निवांण मेरियै —
गिर पाहाड़ पखालीयै ॥
मिलि छपन कोड़ी मेच —
माला नदी पुर है मालीयै ॥
चे चुंवे लुंबे सामली वड़ —
केह लांमल हर हरै ॥
रज्यंद पाता जांम रावल —
स्यंम तिण रित संभरै ॥
जी स्यंम तिण रित संभरै ॥ २ ॥
उनमै पच्चरिण मास पासु ॥
नीर नदी यै निर मला ॥
वन रंचि रछा यै चुंवेली —
चंदवे चढ़ती रला ॥
नवे दंडे वापि तरनि —

हरै अघं अवा इन बीसरे ।।

राज्यंद पाता जांभरावल –
स्यंम तिण रित संभरै –
जी स्यंम तिण रित संभरै ।। २ ।।

कातिग मास उपवास निरमल –
मेघ छाड़ै धर अर्ग ।।
सर कमल विकसे सरद –
रैणि नीर छाड़ै पोयणी ।।

नल वधि मं मै गरजे –
उतर अरक दिनण मन धरै ।।
राज्यंद पाता जांभ रावल –
स्यंम तिण रित संभरै ।।
जी स्यंम तिण रित संभरै ।। ३ ।।

माघ सर मा सामां गमंजै –
मेघ मुंझै दांमणी ।।
झरि कोट वालो मीत –
चमकै तपै पयो हर झांमणी ।।

वीजि छाड़ै नीर पयाल –

=पस्त गिर जीव्ह दिस उभरै।।
राज्यंद पातं जंभ रावल=
स्यंभ तिण रित संभरै।।
जी स्यंभ तिण रित संभरै।।५।।
मिलि हेम उतर पोस=
मोसे पन तरवर हारवै।।
सुकलंगि परमल कमल कुंपोल=
भमर पंखव न सारवै।।
चुजंत वंवर गड गिर=
घन नागदा कानणीसरै।।
राज्यांद पातं ज्यांभ रावल=
स्यंतिण रित संभरै=
जी स्यं तिण रित संभरै।।६।।
उतर घरे चल हरांलंक लागै=
जलै वन खंड पाजलै।।
पंव होवै विस्व मै ईगव=
पमित सीत चोदल सातुलै।।
दीर घर घणी तोव देन

कर माहभ्म मास मम छरै ।।
राजपंद पातो जोम रावल -
स्वंभ तिण रित संभरै ।।
जी स्वंभ तिण रित स्वंभरै ।। ७ ।।
सिस मास फागुण दिन -
गोरिभ मनाल पंरन न सारवै ।।
फिर वली उतर चाय रवि -
रत दिखण पेथ निवारवै ।।
रित रवलो जरं माति फाग
रेवन्है होलिका प्रब विस तरै ।।
राजपंद पातो जोमस रावल -
स्वंभ तिण रित स्वंभरै ।।
जी स्वंभ तिण रित स्वंभरै ।। ८ ।।
मंजरं पद्म मुंचेत मासे ।।
पां चुरे पति कोमला ।।
स्ती जाप नीसरि चुप प्रगटै
हो है पंचर नि मला ।।
वण राय मर प्रहार -

कर माहभ्म मास मम छरौं ।।
राजपंद पातों जोमब रावल -
स्यंभ तिण रित संभरै ।।
जी स्यंभ तिण रित स्यंभरै ।। ७ ।।
सिस मास फागुण दिन -
गौरिब्म प्रनाल पंरन न सारवै ।।
फिर वली उतर चाय रवि -
रत दिखण पेथ निवारवै ।।
रित स्वलो जारं माति फाग
रेवन्है होलिका प्रब विस तरै ।।
राजपंद पातों जोमब रावल -
स्यंभ तिण रित स्यंभरै ।।
जी स्यंभ तिण रित स्यंभरै ।। ८ ।।
मंजरीं पद्म कुंचेल मासे ।।
पां चुरे पाति कोमला ।।
स्ती जाप नीसारि चुप प्रगटै
हो है पंवर नि मला ।।
वण राय मार प्रहार -

कुरै दहण मछा उभरै ।।
समंद पाला जंम रवल
स्यंम तिण रित स्यंभरै –
जी स्यंम तिण रित संभरै ।।५।।
वैसाख मोस कलीजै वन
तु मन सत प्रीत संणो यै ।।
सेवंत जाप कुह सम –
कुसमा भमर लीला मंणीयै ।।
महकंत चंप रवेल दमणा इंच प्रमल डभरै ।।
समंद पालां जंम रवल
स्यंम तिण रित स्यंभरै ।।
जी स्यंम तिण रित स्यंभरै ।।१०।।
वरतीयो जेठ रवु तांवां –
जै होयै पनल काला हलं ।।
दिन व्यटै वधि निसतापि –
देना पर होयै पंख प्रीतम जलं ।।
फल दाख नारंग संन –
पाये मालणी दाखां भरै ।।

रज्यंद पाती जाम राबले
स्यंमरी तिन रित स्यंभरै ॥
जी स्यंभ तिण रित स्यंभरै ॥ १२ ॥
पारवाड उंमर भैरु उवांग—
हल निदा पनी वलणे ॥
लुजाय नीसरि ग़मीण़ा जल—
उंम्मर लीला कं ऋणं ॥
वीजला वलके वलेवा हल—
उध पालस उतरै ॥
रज्यंद पाती जोम राबले—
स्यंभ तिण रित स्यंभरै ॥
जी स्यंभ तिण रित स्यंभरै ॥ १२ ॥
पयं कवित—
पासुकां दीति गांड सांभ भादवे जसोमती
माह पोस माग सर चैत वैसाखां कागुण ॥
लाले जेह पसाव दुंन लख कोड़ि वरीसण ॥
भले मुग वीलि काढ़ि—
चुनला सवरं हस्त समपण ॥

बारहौ मास चौमास पख-
बड़ हथ बेल न बीसरै ॥
मई फल माग पातं
मिलै समरथ रावल सांभरै ॥१॥
गुण गौरं मारो संघुरण-
श्री उदैपुर माहे हजुरं ॥
श्री किसण जी हजुर लिखीयै
लिखतं पासीया मान सीघ लिखावतं
महीना री या सुजा भी संमत १८८३
विरषे प्रसाद वादे ३ रवे ॥
कवित - राजा अजीत सीघजी रा-
राछोड़ सुरेज मल पमर सीघोतरा कहीण ॥
कंध बाघरे कटार
माप सत तोप मेलवाड़े ॥
करि चरि चाडु कार-
लाख महलो लगाड़े ॥
पड़ लगरं पंज साथ-
साथ सुर होरत सांपत ॥

फिरि फिरि हुवो फजीत—
कीधो जी तव कहीया रत ॥
महमा समाध मुख थाय
माहि मड़ हुस हंमम मन भावीयो
गरवत समाध जोधांण गढ—
हमो हुमो विध भावीयो ॥१॥
सीखा सख बैठलां डहि—
उछरंग लहीयां उर ॥
कमल तिलक रहतां सोहड़
थोले नीच सिर ॥
सीस छत्र सोभतां सोभ—
कर भभी मालां सख ॥
चोसर ढुलतां चमर चोसरा—
चले सजनां चख ॥
हम खे खहो हंता भैरव—
खर सारी हीकंनी सभा ॥
हजमाल मारि हजमल रै—
रोम पार वैठो हभा ॥२॥

जेण पंजे जोड़ रो प्रबंध—
राही सरणि उ छोरै ।।
जेण पंजे सुरलांण मांण—
मलि गढ़ दल मोरै ।।
जेण पंजे गजि जकन तेज वसधा करलाखो ।।
जिको पंजो जोधांण कमध चक्रवती रहाणो ।।
राजा परोड़ रोड़ नै गढ़ खग कणीन गंजीणो ।।
गंजीणो नहीं साहां मिड़े भलसि पंजोने भंजीणे ।।
कवित कुंडलियो कथनाथ—
भंडारीरे तुरकति जोरा वांणीणो ।।
तीनि सिलंम जांणी बोले करि
करि धवीमे कुवेली निरवांण ।।
कुवेली निरवांणि रोह गल्ह नादि उचारी ।।
साची कीची सोध जिको कथनाथ भंडारी ।।
कुमंती करि कुमाति—
ईसो वर छोह उथापो ।।
वखतांनै कुरमांण मेलि राजा मारापो ।।
पंजमाल हुत कीची इसी जागि सोरई जांणिणो ।।

निरकांणि मंत्र कहै नहीं—

हुर कति जोरा कांमेयो ॥१॥

गीत— सुरजी सेठ रे : गसीया पलजी रो ऋषे—

मातां रावले मो : होगमण सुरा ॥

मही धुरित धुरित सुमाल ॥

वखत बिलंद पंद मि जिम बोजे ॥

नर नायक मोहै निरवत ॥१॥

अरजं मेदन पुजे कोई ॥

पापे वरणं वीत पपार ॥

वसधा बंदी घोड़वा वाचो ॥

सचो कहीयै राय सचार ॥ २॥

नमणे वाज समाज वीरुयां ॥

लखै जत वडा ली लाज ॥

सुत मोहण सिर ताज सुरजी ॥

राज तणे परधांने राज ॥ ३॥

— गीत - वहती रे गंग वेकली कोइ कोरे ॥

कोई चाव करै केदार ॥

मेरा चाचि मयंक कोइ मोरे ॥

अलंम दुनी तणै - आधार ॥ ६ ॥
मोह लगाई कोई लाख उत ॥
ग्रास अलाधै आरित ग्रासं ॥
अमर एक कारिन आ धरणि ॥
नव खंडि धर कोई भरै निरास ॥
चाचा देह धरि तर बीतिवे ॥
रावत होयस सर जीवै राज ॥
वंस छत्री संतभे वरं लरो ॥
कोई मोकलो मोर वंश राज ॥ ६ ॥
अरु अमण रहै उगमंतो ॥
अंमण अलप वृद्ध थाव भरै ॥
मित हुवि कोई मोकलो मोर ॥
त्याग संसा रोई जेम तिरै ॥ ७ ॥
गीत कहीयो नीरहर हर सुर सो कहीयो -
गीत - रहसु भरै सुर चंमणी -
जिले मी री धंण किसु ॥
भरै अमिन अंम लिहु मावै ॥
अंनत चो हंस किस मंस अंतभसनत

तरवं उत लगो तरव चार लागो ॥१॥
विवह तरव मग विह चिंत वोर्वे नहीं ॥
अनंत रिवत आगले खग अबोहे ॥
भिड़त हाकंत केटंत करि कट मठौ ॥
गाह गहत मेरिया थाटेमं है ॥२॥
हुंडु चा डुर कतिल तिल गया तेथतोय
पंरव आम खनहु दिठि पुरौ ॥
अमंत चौ हंस उपर गई पला चै ॥
जुच्यन सूं डुरे सकल जलंजोगो
पंखणी मरै की योगन भी आवतै ॥
वरै की रम चारं यव रीझो ॥
पण सीसो दीपा लेणो चापां डुरस ॥
च्यान ज्ञज वाल जोत चरिपौ ॥
— गंत-विहारी दास जी से पतजी से कहियो-
तीचे नार पण पार परस —
वार खुजे आर तरव ॥
झांमले वीपा गह वात झोले ॥
जावीयै सा हु रिम रहु खड़ि उयरै ॥

पंजली बिना कुण साथ पाते ॥१॥
काजि कमेर सिख धान रे आखो ॥
कांन रे धरा उगए कीधो ॥
कुल सिंह सखातेला नली का कांमहे ॥
दिपति पावीयो कोरि दीधो ॥२॥
खल रली धरि धरि हुई सिधर वातां रही ॥
वार पति लीजिपै खली पाखां ॥
रेसि पंड नेस बुध पांण पोरे खलक ॥
राखीयो विहरि देस रांण ॥३॥
गीत - बलु गोपाल कस्तोल रे -
रसना प्राप्त रे आहिणो -
रसिया देस पर देस रव रांका राजा रसिया ॥
लोह लाखां वधे पाचु लाधो ॥
पोलि तिण होवै जिण पुजा उंड पुजजे ॥
बलु रे पोतर वार बाधो ॥४॥
खायरे पांण जे सीध इर पामरण ॥
कुखेने उसी ले वसे पुजा ॥
रे हिंदु तुरक वेद जोड़ मरण ॥

पाल रातीण फिर माल पुजा ।। २।।
किहु रहां किवे नेत बाधै वतु ।।
बीवरे खत नीसांण वाजै ।।
माम चले सो भाग रो भुरवीयो ।।
रवागरो खाटीयो वांरे खोजै ।। ३।।
हुकले वाज कहता हसाते हिंडुले ।।
नेग हथ सो लगै धाप नो लौ ।। खाटे किद
वतु रज पुत वट पांण वोले ।।
वतु रज पुत वट पांण वोले ।।
—दुहो— मावलहथ सुख खाल—
लालन को मानव तणो ।।
पाल तणा लो दुं प्रचंड—
बीहे काल वलाल मेह
— वी मातानी स्तुति हिंजी —
पुला जुना धंधा चीरम देपारा—
नीगहे बाधे ने नग खडुं रंमोते महणा ।।
खांन वडा रांग खेत ।।
ने बीढ गाता वोर उत ।।१।।

चांदा चुगला लेह ॥ मे छायण मांचे मछरि ॥
चिमिके पो चारा लेह करि के संन वीर उत ॥
खल दल आंजे खागे —
चांदो दिक आहर चेड़ ॥
=पाप पुंता उथेंतें वो न माहीवीर उत ॥१॥
वरित वेला वीर उत चंद न चुकै चम ॥
लंगे मामा लहरे करि —
दो दैग खड़ गड़ रुल ॥२॥
चांदो चोरंग वार देवे चो वारे खतर ॥
घोड़ो चण झुझार घोवे पणि घोवे नहीं ॥
चांदो चड़ां लांह वीर चन मांचे वीर उत ॥
कंवि उग कीक ह तांह सांभलेजो सर खांह रो
लोहो समीयें सुप खाल —
गड़ मालें मालि मतजो ॥
चांदो चह खुमाल पुसमे वीरम देव उत ॥
पुतीस जांणे अग्र मे पुण सात मजारीयें ॥
मारत तो जोपत मुणसा वत्तलोगे कोलाण
— श्री माताजी ॥ नीसाणी रावल — ॥२०॥

जगन्नाथ मांगेत री राव मत्याग दासरी कही-
साढ तिहु चे मान बीजे पति विचोले ॥
मरजे हिंदु मुसल मान दोयू राह दिचोले ॥
चर मालि ठकुराइयां गढ राज सुखोले ॥
गज गपंरा हैमरां माले पल घाले ॥
कड़े जड़ावे मुंदड़े सो वंन दिखाले ॥
घर उपगार न कीया चर गेड गाले ॥
चन वोहो रघो हो रा देवे—
हीय विस हर घाले ॥
किला न देखे संगर सिर वचीवाले ॥
जाय पहाड़ा चलीया पारवाड़ा टाले ॥
ज्यां चन खेट वंटीया चिन वंस पिचोले ॥
जे जीते कुनि पांण मै पाणंण सेमाले ॥
माल नर वद नेत ली बिरदां पज पाले ॥
जग परवे रावत जगा दन सीख दिखाले ॥
राव नव वेड राज वीकर चाकु वडोले ॥ ६ ॥
संपुरण ॥

कवित रांणा सांगा रो—

फिती वै सुरतांण मुजि फांलेथांण दिधां।
नागोरी माक इसा डार वेवगर दिधां॥
जोली री भरिया उड वार चरभरी॥
मच्छ पुरां वरि हवां खेत मे लीधां पचारी॥
दोय वार मह मंद बंधी—
पा हेल मार पुका हुरा॥
कर कातै पुछ संग्राम सी कै उभरि कैलपु
— गेत मानसीष मांण बल रो —
सकता वत रे जैला महीयारे वहीवो॥
सुरा वह सीपा झारि मासु सीपा॥
निह सी पा नीसांण॥ मांनड़ा तो—
जिसा मिलियो वाज रे ववसांण॥२
जोल खादी साहि जोरै वाल गजं तुंढाडि
मांनड़ा फल तणा मंडण॥
माझि पग रिण माहि॥ २॥
सुरं रवांन हसा वाखे सीपा॥
वह सीपां वंद वाट॥
पवीपांण पुजा वलू पचला॥

भोगिले हो गज धार ॥ ३ ॥
कैसे मुंहे ते गजां कोजां चजां नेजां कही.
माय रे जो गयन भेदे ॥
मांन हरि पुर मांहे ॥ ४ ॥
— गील गोकल दास मंगे वत रे —
मोती र चन्रा रे चहोफे ॥
मीमाजल मोहर मेलीया मारथ ॥
वणु दे सि गज बोल चले ॥
लागा गोकल तणे लोरड़ा ॥
लाख दुरेवे आगि तां तणे ॥ ६ ॥
वीजु जालां रवलां किहंडलो ॥
मिलि च्याय लीया घंती मारथ
भुजीया रंग तणे मांग वत ॥
लालें घोह तजीया सासर ॥ २ ॥
सकलहरा तणे स समरां गमां-
वेया तन होय खंड विहंड ॥
कुक पला गालां पांरवतां ॥
छिड़े मिरीया तणां छिंड ॥

पुत्र बांण के बांण बटारी —
कैल पुरो खमीया कंठीर ॥
राजाधेले गधा जिये रिण ॥
राजा न होवै तीमां सरीर ॥१॥
— गीत पुरा भंक वन रे पुरस्राजी रे कहीयो।
अनसांण तेल खल खग उपरै ॥
फसि राज ग्रहण गंजो दख पांण ॥
सुरां वडां तणो संसा पाडै ॥
पुरो सांपड़ी यो बीठाण ॥२॥
वपि खांम श्रम करे वेहो गते ॥
थार असुर मै तीठ थीयो ॥
दिड़ मुंड थार उजली कंतां ॥
कालै सांर समान कीयो ॥३॥
तरम पाप इको नर नारा ॥
मुगल तणो दल सुध मणे ॥
पैठै जिण वे मुंठ पांमजि ॥
तिण जल चैठो मांण तणो ॥
वारंगना वसंत वीतांनो —

व्याय व्याह तरयण करे व्यणो ॥
उदाहरे मांरवी पो व्यलमो ॥
पोत व्यरे व्यवे व्यवतर यणो ॥
— गीत - वैरसल मांकावत रो —
गिरधर जी रो महियो गीत —
वणेवै व्यवसाण वीर हड कागं ॥
पुजड़ा हथ मारी व्यमल ॥
सकतां वतां तणो घर सुवो ॥
सुवो मीरनो वैर सुल ॥ १ ॥
आदु रीत व्यभिनमा उदा ॥
देवे वांस चीतोड़ देसो ॥
सकजां जरां खरां तो सिरखां ॥
कलि हण छोड़ व्यिसो ॥ २ ॥
सुणे नगत पति खाह सांभले ॥
राजा सुणे सुणे राव रांज ॥
घट भीजै मांजिवां तणा वट घारे ॥
भगवट व्यघट समो अम भाण ॥ ३

—— गीत - दावत : प्रथल दोरे जागत सेलार -

पति साही हुस इकरै रै मेवाड़ो : प्रथला मोरे ॥
जागी खेतल मो : ल जे मोरै ॥
इमणा लगसंम राणां रो हुं ॥
चीलोड़ दिली काति चढ़ियारै -
गहरै सुर वाजिन गुड़ीया ॥
जुड़िवा बजि सकतै जाणारै ॥
उपरि उंट हला : पाड़ा ५१ ॥
तर वारे : कांणं तीरं रै ॥
मातो झड़ मीर हमीर हमीरां ॥
गुर जां कोह वांणं गैलीं रै -
हलीया उंड हड़ होली ॥
लाधो गोलि बधां सल लागे रै ॥
: पाहुड़ीया सुगलां : पगे थारं -
रस लागेग चीया मोरै सेन -
सबीया चलै साम ॥२॥
हर वेस पगं तलि देचा
रै लोहां वलि रोला लीचा ॥

जो चार महा मरु जुटै रे ॥
फिर फिर या मर जुटै ॥
चवी चवी मार वते चारे –
रे वणीया करि गो रलका कारै ॥
इल मार इरी चढ़ हा मारै –
चवीया करि जुंत चसा मै पड़ ॥
गोत – कत्याण दास जुंझारा बांरो दूहो –
दल लाख मिलो लख मिलो देम पानि ॥
पारंम करो पहो निस बांण ॥
चच्चलो मुजां तलालां उपरि ॥
निहरै रांण तणा नीसांण ॥१॥
सिंधुर नर रै मर सिण गोरे ॥
मोण पार मिलो मेवाड़ ॥
ढिहुरै चौरे जोगी पा ढोरण ॥
कंप तलांलां भड़ा छिमाड़ ॥२॥
सारा नुंड मुजां स सकतावत ॥
सवी भड़ा वेच जावत स्वंम ॥
गढ पति तणा चौरे रण गर ॥

जोसी राव विचै जेसी रच्च निचै मांस्या ।।२।।
बड पोह पोवो वडा वेरा ।।
बाजा बाजो वांकिम गंद ।।
माही मेवाड़ तणो मेवाड़ा ।।
नाद लहालां मुजां मिरद ।।४।।
गेव- नरायण कस्त्र प्रचलावत रे—
रच कल्याण कस्त्र रे महीड़ो ।।
नर नाह तुरंग खेड़ नारायण ।।
सुर भड़ां व्याड़ बंधि समधी ।।
सकतांनो परि रामें संमर ।।
हथ मलै तिण लेगे हथी ।।६।।
सकला वत व्यापो उलाके ।।
खल निर दल लीधा खग्ग खंती ।।
दंत करग निहले दुरवै ।।
दंत खल मुरन उलज दंती ।।२।।
विसण लीला केलो व्यर धीयल ।।
तमो पहि पहि खुलिछ्या तरणी ।।
जी गती चलती रच पंगणि ।।

जो संभर विलखी मो गमकी ॥ ३ ॥
रावलं तणं तिलक रिण रावल ॥
पासो सार ग्रहे च्यन पांणं ॥
वारण पथ पड़ै वस मोहण ॥
अंग रमंती संभर अंकं ॥ ४ ॥
गीत - केरे नाक गजमेर उला कीधां तेजीलां
घाघ रट सुघट नां वाद घाघो ॥
उडि वे च्यन सिरै नारि मग पालीयो ॥
पउपरा मांणि च्यरव पंरव मयो ॥ ६ ॥
च्यचल रो बांधीयो जरद पालोभला ॥
निज चुंडां गरब गजब खड़ीयो ॥
पसु धाणं सिरै जांणि दधर पड़े ॥
पवै उपरे तिकर वजर पड़ीयो ॥ २ ॥
पारखरां रो लूं पड़तात कीजै पमंग ॥
पधरि खग धाक पैरा पाघो ॥
पभिमेभो सिंधी मल मेघ नाग पागो ॥
इसै पधि मांमणे रूप पाघो ॥ ३ ॥
बाप जै तिल गज राजवी लीजिये ॥

घड़े बल बांधे चम चरा पुर ॥
इला गर्ज सिमां समांन दुंदुभे ॥
सीधर कर प्रदीमो सुर ॥ ४ ॥
हरग उमां कीमां वेस मुगतां प्रीछां ॥
मात पो मा गालीया खाई दंते ॥
चणी चाबै नही घड़े लुटै चणां ॥
चढ़ां चा हर वण दीहु बोले ॥ ५ ॥
जीत - सव प्रत्याण दसरा महीषा -
नर नाह पुवाह निडर नारायण ॥
चाप प्रसहां चढ़ि सीम चण ॥
चणीया वीया जर्ते मुंहे चारां ॥
चणे के ताप छीलीया चण ॥ ६ ॥
तें प्रधीया नीलं प्रचलांणी ॥
प्रारे चर सहर चरा उथाल ॥
दिन प्रांतरा गिले सी दोखी ॥
फग प्रांतरै न सकाया मलि ॥ ७
सेला हथां रिड़ तीसां मलें -
चारण जोध बूडला चर ॥

पाल रातीण फिर माल पुजा ।। २।।
बिहु रहां बिचे नेत बाधै बलु ।।
बीबरे खत नीसांण वाजै ।।
भाग चली सो भाग रो धुरवीयो ।।
रवागरो खाटीयो मांरे खवैये ।। ३।।
हुकलै बाज कहता हसाने हिंडुलै ।।
तेग हथ सोलगै प्राण तो लौ ।। खांरे बिद
बलु रज पुत वट पांण कोलै ।।
बलु रज पुत वट पांण कोलै ।।४।।
—दुहो— मावलख्य सुब लाल—
लालन को मानव तणो ।।
पाल तणा तो हुं प्रचंड—
बीहै भाल बलाल मैं ।
— की मालाजी रति हिंजी —
हुहा जुना पंथा वीरम देपारा—
नीगहे बाधै ने तग खडं संमोते महणी ।।
खांन वडा रांग खेत ।।
तै बीढ गाता वीर उत ।।१।।

चांदा चुगला लेह ॥ मेछ्यण मांसे मछरि ॥
चिलिसे यो चारु लेह करि के संग रवीर उत ॥
खल दल मांझे खांगे —
चांदो सिंघ न जाहर चेड़ ॥
मापु इतर उधरेंतर वेदे न मांहीवीर उत ॥१॥
वरित वेला वीर उत चंद न चुकै चम ॥
लंगे भाभा लहरे करि —
रो पैग खड़ गड़ रव ॥२॥
चांदो चोरंग वार रेवड़े यो वारे खलर ॥
घोड़ो घण कुमार घोरे कणि घोते नहीं ॥
चांदो चाड़ो लांह वीर चन मांझे वीर उत ॥
कवि उग कैन ह तांह सांभलेगो सर खोह रो ॥
लोहो समीयै सुप खाले —
मड़ मालै मालि मतो ॥
चंदो चढ़ खुमाल पुलमै वीरम देव उत ॥८॥
चुलीस जोणे रथ मैगुण सात मसरीयै ॥
मारत लो जोपत मुणासा वत्तलांगे कोलाण ॥
— श्री माताजी ॥ नीसाणी रावत — ॥२०॥

जगन्नाथ मांगेत री नव मत्याग दासरी कही-

साद लिहु थे मान बीठोपरि वि चाले ॥
दोयू राह
मरजे हिंदु मुसल मान बी ~~यायस~~ वि चाले ॥
चर माकलि ठकुरइयां गढ राज सुखाले ॥
गज गपंरां हैमरां माले घणा मालें ॥
कड़े अड़ावे मुंदड़े सो वन दिखाले ॥
घर उमगर न बीया चर गेड गाले ॥
चन बोहो राधो हो रा दैवे—
हीप विसहर काले ॥
लिला न पेखे संगर सिर वचीवाले ॥
जाप दिहाड़ा चलीया पारवाड़ा टोले ॥
जां चन रवे वंटीया चिन वंस रीचाले ॥
जे जीते दुनि पांण मै पांण संभाले ॥
माण नर वद नेत नी विरदां पज पाले ॥
जग परवे रावत जगा दन सीरव दरसाले ॥
राव नव वेड राज वीकर चाडु वडाले ॥ ६ ॥

संपुरण ॥

कवित रांणा सांगारो—

दिली वै सुरतांण सुजि फांलेधांण दिधां ॥
नागोरी माक इषा द्वार तेवगर छिधां ॥
जोलीरी मरिषा उंड वार चरभरी ॥
मच्छपुरां वसि हरां खेत मे लीधां प्रचारी ॥
दोम वार मह मंद बंधी—
फा हैल माट पुंमा हरा ॥
कर कोते पुछ संग्राम सी कै उभरि कैलपुरा
— गेत मानसीध मांन वत रो —
सकल वत रे जैल महीपाले रहीपो ॥
सुरा वह सीपा भारि मासु सीपा ॥
निह सी पा तीसांण ॥ मांनड़ा तोर—
जिसा मिलिधो वाज रे ववसांण ॥ १ ॥
जोल खादी साहि जोदे वल गजे डंढाही ॥
मांनड़ा दल तण मंडण ॥
मांझि पग रिण माहे ॥ २ ॥
सुरं रवांन हरा वरवि सीपा ॥
वह सीपा मंडे वार ॥
पवीपोट दुजा वलु पचला ॥

भोगि हो गज थाट ॥ ३ ॥
जेहि मुंडे गजां कोजां चमां मेगां कहीं।
माण रो जो गयण मेहे ॥
मंन हरि पुर मांहि ॥ ४ ॥
— गीत गोकल दास मंगां वत रो —
मोती र चन्ना रो कहीयो ॥
मीमाजल मोहर केलीया मारथ ॥
वणु वे सि गज बोल चले ॥
लागा गोकल तणे लोरड़ा ॥
लाख पुरवे आगे तां तणे ॥ १ ॥
वीजु जलां खलां विहंडतो ॥
मिलि प्याय लीया पइंती मारथ
भुजीया भंग तणे मांण वन ॥
लालै पोह तजीया सासर ॥ २ ॥
सकतहरा तणे सु समरां गणां —
वेधा तन होय खंड विहंड ॥
कर पलां गालां पांसवतां ॥
छिड़े मिरीयां तणां छिंड ॥

पुत्र बांध के बांध बटारो —
कैल पुरो खमीया कंठीर ॥
राजामेले गधा जिसे रिण ॥
राजा न होवै तीमां सरीर ॥१॥
— गीत पुरा भंक वन रे पुरसाजी रे कहीयो ॥
— घनसांण तेल खल खग उपरै ॥
फसि रज ग्रहण गंगो दख प्रांण ॥
सुरां वडां तणो संसा पाडै ॥
पुरो सांपड़ी यो बीठाण ॥१॥
वपि सांम थ्राम फेर वेहो गति ॥
थार वसुर मे तीठ थीयो ॥
पिड़ कुंड थार उजली पतां ॥
भलै सोर समान कीयो ॥२॥
तरण पाप इको नर नारजा ॥
पुगल तणो दल सुध मणे ॥
पैठै तिण वै कुंठ पांमजि ॥
तिण जल पैठो मांव तणे ॥३॥
वारंगना वसंते वीटंनो —

व्याय व्याय स्मरण करे- व्यणो ।।
उदाहरे नांमी यो ।फलणो ।।
पोत ।फरै ।फरे ।फवतार यणो ।।४।।

— गीत - वैरसल मांमावत रो —

गिरधर जी रो कहियो . गीत—
वणेयै ।फवसांण वीर हड मागां ।।
दुजड़ा हथ मामी ।फमल ।।
सकतां वलां तणो धर सुरो ।।
सुरो मीरनो वैर सुल ।।१।।
आदु रीत ।फभिनमा उधा ।।
देवे वांस चीतोड़ देसो ।।
सकजां जरां खरां तो सिरखां ।।
कलि हण छोड़ रहिसो ।।२।।
सुणे गगत पति खाड़ सांभले ।।
राजा सुणे सुणे राव रांणा ।।
धर मीजै मांजिवां तणा वट धारे ।।
मगवट ।फधर समो ।फम मांणा ।।३।।

—— गीत - दावल : प्रचल दोरे जोगेत सेलार -

पति साही हुस प्रकारै रै मेवाड़ो : प्रबला मोरे ॥
जागे खेतल मोकल जो हारै ॥
हमणा लगसंख राणां रो हुं ॥
चीतोड़ दिल्ली घाती चढ़ि आरै -
गहरै सुर बाजिन जुड़ीया ॥
जुड़िवा लाज सकतै जाणारै ॥
उपरि उंट हला : पाया पड़ै ॥
तर वारे : कांणं तीरां रै ॥
मातो झड़ मीर हमीर लखीरां ॥
गुर जां बोहु बांणं मोलती रै -
हबीया उंड हड़ होली ॥
लाखो गाले बधां : ल लागे रै ॥
: पा हुड़ीया मुगलां : पगे चारां -
रस लागे चीया मेरै रे -
सबीया चलै खागे ॥२॥
दर वेस पगं तलि देच्या
रै लोहां बलि रोला तीच्या ॥

जो धार महा मरु जुटै रे ॥
फिर फिर धरा मरु जुटै ॥
चवी चवी मार बते धारे –
रे बणीया मरि गो रखवा वारै ॥
दल मार दुरी चढ़ रु मारै –
चवीया मरि जुंत चसा रे पड़ ॥
गीत – कल्याण दास कुंवार सांरो श्लो –
दल लाख मिलो लसकर मिलो देस पति ॥
धारंभ करो पहो निस मांण ॥
पच्चलो मुजां तलालां उपरि ॥
निहरै रांण तणा नीसांण ॥१॥
सिंधुर नर हे मर सिंघ गोरे ॥
मोरा धार मिलो मेवाड़ ॥
ढुढरे धोरे जोजो धा ढोरण ॥
कंध तलांलां मड़ा रिमाम्ड़ ॥२॥
सारा तुंड मुजां सकतावत ॥
सवी मड़ा मिंच जावत स्वंभ ॥
गढ पति तणा धरे रख गर ॥

जोरी राव विचै जेरी रच्च निचै जारंभा ।२।
वड पोह पोवो वडा वेडरा ।।
वाजा वाजो वांकिम चंद ।।
मही मेवाड़ तणो मेवाड़ा ।।
नाद लहलां मुजां मिरद ।।४।।
मेव- नरायण वस्तु प्रचलावत रो-
रच कल्याण वस्तु रो महीरो ।।
नर नाह तुरंग रेवंत नारायण ।।
सुर भड़ां व्याड़ बंधि समथी ।।
सकतांनो प्रभु रामें संभर ।।
हथ मलै तिण लेगे हथी ।।१।।
सकला वत प्रापो उलाके ।।
खल निर दल लीधा खग्ग खंती ।।
दंत करग निहले दुरवै ।।
दंतु खल मुरन उत्तज दंती ।।२।।
किसण लीला केलो चरचीयत्त ।।
त्यां पछि प्रछि सुलिछा तरणी ।।
जी गती चलती राघ प्रंगणि ।।

जो सेमर विलखी मे गयली ॥ ३ ॥

रावलं तणं तिथा रिण रावल ॥
पासो सार ग्रहे च्यन पांखं- ॥
वरण पथ पड़ें वेस मोहण ॥
अंग रमंती सेमर अंकं ॥ ४ ॥

गीत- करे नाक गजमेर उतारीयां लेजीयो।
व्याघ रट सुवट्ट मां वाद वायो- ॥
उडि वे च्यन सिरे नारि मग काबीयो ॥
पउपरा मंगिण च्यरव पंख मायो ॥ ६ ॥
पचल रो बांधीयो जरद पोलोमला ॥
रिनज चुंडां गरब गजब खड़ीयो ॥
पसु धारां सिरे जोगिण दहर पड़े ॥
पवे उपरि तिकर वजर पड़ीयो ॥ २ ॥
पारवरां रो ल्ह पड़ताल वाजे पमंग ॥
पधरि खग धाक पेरा पायो ॥
पीमिमो सिधी मल मेघ मांग मांगयो ॥
इसे पधि मांमणे रूप पायो ॥ ३ ॥
वार जे तित गज राजवी लीजिये ॥

घड़े बल बाजैवे चम्म घरा पुर ॥
इला जाइ किमां असमांन दुंदभे ॥
सीचर घर घाघीओ सुर ॥ ४ ॥
मरग उभां चीआं केस मुगलां कीआं ॥
मात पो मा गालीआ खाइ रंतै ॥
घणी घोवै नही घाड़े लुटै घणां ॥
घड़ां घा हर वण दीह भोलै ॥ ५ ॥
जीत - रव अत्थाय दस्त्र महिषा -
नर नाह पुआह निउर नारायण ॥
घाय प्रसहां घड़ि सीम घण ॥
घणेआ बीआ जतै मुंहे घारां ॥
घणी मै लाघ छीलीआं घण ॥ ६ ॥
तै पाघीआ बीतं प्रचलांती ॥
प्रारे घर सहर घरा उघाल ॥
दिन प्रांतरा गिणे सी दोखी ॥
का प्रांतरै न सकीआ काति ॥ ७ ॥
सेला हथां रिड़ तीसां मले -
घारा जोध जुडता घर ॥

पात रातीण सिर मात पुजा ।। २।।
बिहु रहां बिचे नेत बाधै बलु ।।
बीवरे खेत नीसांण वाजै ।।
भाग चली सो भाग रे भुरवीयो ।।
रवागरो खाधीयो नांरि खपै ।। ३।।
हुकलै वाज कहता हसति हिडुलै ।।
तेग हथ सोलगै प्राण तो लौ ।। खपै किद
बलु रज पुत वट पांण बोलै ।।४।।
बलु रज पुत वट पांण बोलै ।।४।।

—दुहो— मावलत्थ सुत मात—
तालन को मानव तणो ।।
पात तणा तो हुं प्रचंड—
बीहै मात बलाल मैं ।

— की मातजी रति हिंजी —
हुहा जुना पंथा मीरस देहारा—
नीगाहे बाधै ने तग खडं हिंमोते गहणि ।।
खांन वडा रांग खेत ।।
ते बीढ गाता वीर उत ।।१।।

चांदा चुगला लेह ॥ मेछायण मांचे मछरि ॥
चिलिचे पो चारु लेहु करि के संन रवीर उत ॥
खल दल मांजे खागे —
चांदे दिक्क जाहर चेड़ ॥
=पाप दुनं उधरेंते वेदे न गोहीवीर उत ॥१॥
वरित वेला वीर उत चंद न चुकै चम ॥
लंगे भाभा लहरे करि —
दो दैंग खड़ गड़ रुल ॥२॥
चांदे चोरंग वार रेवड़े वो वारवे खतर ॥
खोड़ो खण कुमार कोवे कवि खोते नहीं ॥
चांदे चाड़ां लोह वीर चन मांजे वीर उत ॥
कांवे उग कैक हतां सांगलेगे सर खोड़ रो ॥
लोहो समीपै सुप खाले —
मड़ मालै भालि मतो ॥
चांदे चहु खुगाल पुसमै वीरम देव उत ॥८॥
पुतीम जांणे अथ मै पुण सात मसीहै ॥
मारत मे जोपत मुणासा वत्तलांगे कोलाण ॥
— श्री माताजी ॥ नीसाणी रावत — ॥२०॥

जगन्नाथ मांणोत री नव मत्याण दासरी ४ ही-
साढ तिहं चे मान बीदपोपारि पिव चाले ॥
मरजे हिंदु मुसल मान दोयू दल कि चाले ॥
चर माकलि ठकुरड़यां गढ राज सुखाले ॥
गज गपंरां हैमरां माले एष माले ॥
केड़े जड़ावे मुंदड़े सो वंन दिखाले ॥
पर उपगार न कीधा चर गेड गाले ॥
चन जोहो रचो हो रा देवै—
होप विस हर पाले ॥
खिला न देखे संगर सिर वधीवाले ॥
जाप दिहाड़ा चलीया पारवाड़ा टाले ॥
ज्यां चन खेटे बंटीया चिन वंस सिंचाले ॥
जे जीते दुनि पांण मै यापंण संभाले ॥
माण नर वद नेत सी किरदां पज पाले ॥
जग पूरवे रावत जगा दन सीरव दरसाले ॥
राव नव वेड राज वीकर चावु वडाले ॥ इति
संपुरण —

कवित राणा सांगा रो—

चांदा भुगला लेह ॥ मेछ्यण मांचे मछीर ॥
चिमके पो चारा लेह करि वे संन रनीर उत ॥
खल दल मांजे खागते —
चांदो सिंघ ज जाहर चेड़ ॥
साप डुंग उधेंत वे न मांहीनीर उत ॥ ४ ॥
वरित वेला नीर उत चंद न चुकै चाम ॥
लगै मामा लहरे करि —
रो रैंग खड़ गड़ रंग ॥ ५ ॥
चांदो चोरंग वार वेड़े चो वारे खलर ॥
खाड़ो चण झुझार कोतै फिर कोते नहीं ॥
चांदो चाड़ो लोह वीर चन मांचे वीर उत ॥
मांचे उण सिंघ हेक हतांह सांभलेको सर खोह रो ॥
लोहो समीयै सुप खाल —
गड़ कालै मालि मतंगे ॥
चांदो चहु सुगाल पुरमे वीरम देव उत ॥ ८ ॥
पुतीस मांचे अथ मैं पुण सात मकसीयै ॥
मारत तो जोपत मुणसा वत्त लांगेरा कोलाव ॥
॥ २०१ ॥
— श्री माताजी ॥ नीसाणी रावत —

घड़े बल बाहँवे चम घरा पुर ॥
दूला गढ़ि किमां इसमांन दुंढ़ोरे ॥
सीध्वर बर इधीमो सुर ॥ ४ ॥
हरग उमां कीधां देस मुगलां कीधां ॥
मात पो मा गालीया खाई दंतै ॥
घणी घणैं नही घाड़े लुटै घणां ॥
घड़ां घा हर वण दीह मेलै ॥ ५ ॥
जोत - राव भल्याय दस्त्रा महीप -
नर नाह पुत्र हुवा हिंडर नारायण ॥
घाप इसहां घड़ि सीम घण ॥
घणीमा बीमा जतें मुंहे घारां ॥
घणी मे लाप छीलीमां घण ॥ ६ ॥
तै इधीमा बीतं इबलांणी ॥
इमे घर सहर घरा उधाल ॥
दिन इंतरा गिणे सी दोरवी ॥
पग इंतरै न सकाया मालि ॥ ७ ॥
सेला हथां रिड़ तीसां मलै -
घारण जोध बुडता घर ॥

तुं धाड़ीत हुं ढोला थका हर ॥
हुआ न बाहर वैर हर ॥ २ ॥
सकल हरा तबो मुहे सामं ॥
निसरि सचां नख शीखा नेह ॥
परि हंस जिम्हि पानीया खेलं ॥
परि हंस जिके जरीयां पेट ॥ ३ ॥
गीत - राव मलकाण कासरा रहीड़ा -
करि जोह पड़ प कोढ़ना केवा ॥
सचराचर के कंण साहे ॥
वार जिका सांमी वे रामां ॥
नहे न खड़िया जिका नाही ॥ १ ॥
काचाले चरीया मन केवा ॥
खिल हां पावरिया समथ ॥
पासि नह खा बरिया पेंगला वत ॥
पोहु वंस बोलो वैर पथ ॥ २ ॥
पाप तणो पैरिस धारिवो रीत ॥
सकोज पेथ दोयण संसार ॥
नह जोरिया रख नागदहे ॥ ३ ॥

चंचल पवन के फैर दिसि च्यार ।।३।।
सेड़िया भिड़ज च्यड़ दीया खोजे ।।
रांण हमीर तण फल मोखे ।।
साख बोलसी मारग सिवड़ी ।।
सत्त घर धरम बोलसी साख ।।४।।
— गीत — ईसा खड़ीया रो — मतीयो —
जुध वा सिर्फ जाय प्रलावै जाड़ा ।।
मड़यो मायक वा प्रस हास ।।
खलां खाप रमा हुआ खेखला ।।
दांत तुहाला नीरण घास ।।१।।
सीसोदीया तुहीला सुरित —
मारध थाप करण सुत ।।
दोय निण वीस कल सत उसतां ।।
उसकां डिग डिगिया जम पुत ।।२।।
जुध पुण्य ईम तीस मायलां/ईतमा ।
हुई तलां भिरड़लां हाड ।।
रावत मुंडाली रढ रंमण ।।
उठ पुंमाल तहाली दाढ ।।३।।

मां रेमोरखलां दांतो कुचलावत ॥
बाय लहाला नेमो वला ॥
खाधौं खिलन होड़ै खुंमांणं ॥
खाउ खाउ मेरै खलां ॥ ४ ॥

— गीत - नरायण दास रावत रो —

पीजर तेह साहे खिचे पाहि सोही ॥
मसत वहंतो बारह मास ॥
सही सुरसांण तणो मद सुक-
राखे तुझ नरायण दास ॥ १ ॥
जमतारण कुआ थड़ जाड़ा ॥
हुई नरायण पास हद ॥
मैगल कमल मेघ मेवाड़ा ॥
मुगल दल छाड़ी मो मद ॥ २ ॥
बिच डुंगा थल वाही बीजल ॥
रिण खल हलती चोल रंग ॥
कुचल समो मुम तुझ ईखतां ॥
कसुरां खुरां उतरे पो पंग ॥ ३ ॥
खूजे पाति साह तणो परि खोले ॥

पीचल वीया तणे खग पांण ॥
जोल रंगोल मचे माते चल्ले ॥
सेत रंगोल हुआ सुरितांण ॥१॥
जीत - रावल नरायण हालरा —
देवल सी जी रो अहीपो —
गज मार छडांला गज संग्राम गहु ॥
पाते नेरे सुरे पुण्णे पो ॥
करसी कोपंड उत केहसां पचल हेसां ॥
कीपो पचल उत क्लिम रहीपे ॥१॥
गज मारि छडांला गजे गज गहु ॥
पाते नेरे सुरे पुण्णे पो ॥
करसि चुडा तेनु केहसां ॥
सकते कीपो सुतो सुणीपो ॥१॥
गहु गंजे हारि मण थट गाहटि ॥
गांजो वलि गज संग्रलीपो ॥
करसी कोपंड उत केहसां ॥
कीपो पचल उत क्लिम रहीपे ॥२॥
सकतां चुडां तणो पता सुच्च ॥

अस देख सां जिसो अस्तु ॥
हर दारखी पो सुतो मे रही पो ॥
हर दा सीसु तोस्व कहतां ॥ ३ ॥
— ती गीत गिरधर जी रा कहीपा —
उसे जेण जसुवंत जस रोज पाहो दाहीए
जोग वण लगे यह कोय जोड़े-
मुख खन्न वार विण जांणीये मेचरज ॥
छात्र पाते न छो- कोय नाग छेड़े ॥ ६ ॥
अचल उत उसै जिके सत्र न उगेरे ॥
पिंड उ ओरि नामते पाणी पंख ॥
जुड़ण चो चुड हर जाय पणाजांणीया ॥
जागवे सकत हर कोय जर पंख ॥ २ ॥
गड़ै गुमर ज़ोर तोम करेतुं जो हउत ॥
तैं दीपो तिम जदै वले थालो ॥
बीधीपां डेगडे पां तणो तैं बांसीयै ॥
मेल पुरम छेड़े नाग काला ॥ ३ ॥
— गीत दुजो -
उरां हो मरां नरां युध असंध्यरउकेउतो

थालीयो विस्तम जाने बांधि चाली।
नीत नीत करे आवीयो नारायण।।
देसे सरसे मिले रेस मीत डाली।।१।।
मिन हिजेला खीया प्रत जिवै नही।।
रेच्च लोगो खलां वेच्च खाये।।
प्राछ पोस हुजोर मिले इमि खलीयो।।
जांण पे पेरा जोड़े मर जाये।।२।।
नारायण खलां वल पाव किसीजा नही।।
रेच्च तिण वेच्च पैस माल खलीजा।।
चीत हीन सुहांणो प्राप बोले चालीयो।।
रेस मन मारि प्रि हार रहीजा।।३।।
— गिरधर जी रो कहियो —
मी जीत सिवा सुर नां गणेरो कहीयो —
गिरधर दल पतो नरो —
धर हरे कोज रे रेस मन चालिया।।
वहे वावल गया आवीयां वोलाणां।।
सरम चाड़ा विमारा निज साथी कां।।
हुंस हुंती हुंसर चड़ो जी हाथी कां।।१।।

फलेल लग सरत हर घरां रे उजलां ॥
छे विरख हरेरे न खाजे मेघ हर का वलां ॥
उगता लाज पड़ा बी फाला मलां ॥
माहु वा सवो भ्रम घड़ो जी मेंगला ॥ २ ॥
जाभ सुनो जोरु फावीपा घर हरे ॥
सार फोफामे न भी काई माठे सेरे ॥
मोह भवाई छे मते जाजे मेरे ॥
घरजे नहीं घंघाल वांके घरे ॥ ३ ॥
बल घणो भरेला कोलता काचड़ी ॥
ले फेतै गयंद होय मयंद चीला भड़ी ॥
उगती वेस री लाज गी फा घड़ी ॥
धार पाते चुंवर काढ़ावेगे पाघड़ी ॥ ४ ॥

— गीत - विहारी दास पलावत रो

जोगीदास कुंआरिया रो अहीपो ॥
चुंसां पड़े ब्रीह घरा पुड़ चढ़ हड़ ॥
वाजे काड़ हड़ नगर व्रहास ॥
फलां फलां साम हो फाफा ॥
देवा मरण विहारी दास ॥ १ ॥

वाटा नित जो एतो विहारी ॥
अचडां आजि वेडो सोनाड़ ॥
करकं तणां वासण जोध काले ॥
कोटै जोड़िया नहीं रिमाड़ ॥१॥
रावल जुरत्न तणो वड रावन ॥
करवा जुध उछाह कीणा ॥
चालां वांची साखी जो चोड़ै ॥
हाकिक फाटिक नमी दीणा ॥२॥
घला सुजा व ग हतो क्रिसणां ॥
वलु जोध जिम वर वरीजो ॥
पोडो पाभ महो तर उकेर ॥
मेड घोरे उतरिजो ई ॥३॥
ईसा होवै माथा उपहरा ॥
माथे लेखे सतांणी मोती ॥
रिम पापां भीतां नह रहीजो ॥
जीतां निव रहीजो गहलोत ॥४॥
— जीव १८ जीत सकता वीर खंगार वलु
सोनरो —

मिलिया रिण सत्रां सांचलां मांडी ॥
वसेया जुंत जुसार विहर ॥
मुंहडो साख मरै मेवाड़ा ॥
रत्ना वट रमीया तणे खंगार ॥१॥
उडीया कथर सुरंगं कांम ॥
सुसर जुरे जुकांम खेल ॥
लोहीया कमल रंलोचर सांम ॥
रणंग जिके खेलिये खेल ॥२॥
कंग कोरिया खला खिर ॥
कटकां कटकां कटकां चार कड़ी ॥
मुह चोकड़ी चड़ी मेवाड़ा ॥
चार चोकड़ी निजर चड़ी ॥३॥
रिण गलीयार बलावल रावत ॥
जीवत स्वंम जांणे जगत ॥
आचा स्वरग जुंत उतरीया ॥
पुरे निज चड़ीयो प्रमाने ॥४॥
अंत — माहर जागरी दस करनोत रे
अलीया गिर चर जी रे साहेबा —

गिलि मा गज थार महा बल गिरवर ॥
भरथ भरथ बाथ भरि ॥
सोने समंद रूप पति साही ॥
पीथा पुरा सत तणी फरि ॥ १ ॥
फिरि फिर फिकर फीचतो फोजां ॥
सेर जुझाण महा मंड थंभ ॥
जल निध सेज गालतो जोड़ ॥
कुंभ सुजाव प्रभनमो कुंभ ॥ २ ॥
सिरव राजा रवीजिंदे महा रेण ॥
रासि लोजे कीसि वीर रसे ॥
करन तणे रोक पुंर करंते ॥
दीसमाल नवे उतराध दीसि ॥ ३ ॥
जांजां गिले च्यारि खट गढ पती ॥
कैलाप सेन केर सिवरिण कीत ॥
भीम जिही पुजै भीमजल ॥
साचा विरद वणावा सीस ॥ ४ ॥
— गीत रावल प्रताप सेन रो
कला संढां पुत्र रो कहीजे —

गड़ा बोड़ सुं बगतरां जोध वहता गया।
जुरां =पसुरां करां ग्रहि सबांही ॥
रोध दल रह चिग्वल कीमालक रंग॥
माहि जल मिले माहि रंग मांती ॥१॥
तिरै जरदैत बिच जुर पांण हणे ॥
सुर सिल तां जुतैं कीधो संग्राम॥
अगर उलट पट पटां बिच =पोल्ह वण॥
वरण कीज माछलां जिले वरीयांम ॥२॥
=पसरपति च्यड़ा महीजल उयरा॥
चोरणां सिर सतुं नीर चैढे ॥
माछलां काहि बालमां पेरां मछै॥
नीर बगतर उ अरि नीर काढे ॥३॥
करक उबाणियां फाड़ि जुर बांणियां॥
बांणियां बीच जरदैत पाड़े ॥
कीधो राहा चक्र जुतै दैत कलीपांणरा
विडै बागड़ सिलह कीर बोड़े ॥४॥
गीत- कला संजाण रा कहीया—
हरण कंस माना हणे जुध काढे हीयो॥

पल भरक गास जल जेम चलु पलपीजो ॥
बांधिके बांण वखांण के हो बीजो ॥
फर नर कीह नर कीह जिम उठियो ॥१॥
धंम पुर नंस बांहोल मारी धै बजो ॥
माडी मां मार प्रवतर नर मार काढ़ारीको ॥
मनले पाछाड़ि वा पहल को ॥
केवीमां काल तंकाल कलीयांण को ॥२॥
देस महला दजण टालीयो महा दुख ॥
सुजस नव खंड तेवै चुप्पण थीयो सुख ॥
रावलां कंप करतां पुरख तणे हरख ॥
मल वो रावलां उबारीयो पंच मुख ॥३॥
— गीत — खरला जीतो रे मो —
सबल गाज पो वाज दल कमंधवादल
सजो ॥
कुलल पखि मर खलल नीरभूठो ॥
मांन चिखना जलण सरि कमांडीयो ॥
वडो रावल फर पंद कुठो ॥१॥
वार जुध वार तिण संवडेलतो ॥

सार चीचार चरीवां सवा पो ॥

पड़ नर मगर चहुंपांण हर उबेर ॥
पोल्है वण पुलासण सचण सचण पाणो ॥२॥
पुजड़ झड़ वाजे गढ गाजे पांणी दड़ ॥
रड़ बड़ै भड़ै चड़ वहै रो फिरालै ॥
प्रागि वर जागे सामल तणे पोलू ॥
वां ऊड़ै कलावत थीवो वर साल ॥३॥
वहल गजन्नाने जिसा क वो लीवा ॥
लोह कल सवल सो भाग लीचो ॥
उकलो वलो मेरे मंगल पांमलो ॥
कुंपलो पसंपलो मांन श्रीचो ॥४॥
— गीत कला जी रो कहि पो —
धन वस कें उण रवल घोड़े ॥
वागड़ सहाले जड़ी वीनाल ॥
मगर सीह तणे गति पोचे ॥
मेगल मुरड़ प्रवालां माड़ ॥५॥
के वी रतन उवी कारीगर ॥
गहीवा वीच सगतणे गुण गंढ ॥

ढलै के चोसर चमर ढुलंतां ॥
केहरि बिरद झलाचत कंध ॥२॥
मान कमा सारीखा माथी ॥
सुर सुथह हीरा संगांम ॥
वहसे बंध वचायण वाथा ॥
सेण बंध जग हर सांम ॥३॥
वैर वाराह वडा सत्र वीचे ॥
आवध गहेका लारन उरे ॥
रावल मपंद नग वोलि रुलतां ॥
पोहवि विराजे वंस पुर ॥४॥

—गीत-राव कल्याण दास महड़ू रो कथो—

रहिसुं वलां थारां नणो ओरतो मनि रहै ॥
मैं रो कणि जसी दोय मेली ॥
कटक मांजण तेणी सकती रावल कन्है ॥
भिड़ण बीजी सकति हुई मेली ॥
भिड़ण बीजी साते हुई मेली ॥१॥
लाख वल सवले चो ग्रपम रेहे लहूंह ॥
जोर वर कहर रा जांन जाणो ॥

=पगर श्री =पायेरे पांण मांजे =पणी—
=पैले उमया तणो पांण =पायो ॥२॥
पधां सवलां तणो का =पछवो ॥
पर छिस कोस मे नह जीत पासो ॥
जोग =पाछ ढमो लन्नां मांजे जुड़ ॥
वले जोगणि झीपो खड़ग वासो ॥३॥
गाजे मैगल गड़ां मांजे अनमी मड़ां ॥
छड़ां समयां खड़ो नाम झीचो ॥
गहण चढ़ि दोवण =पातम सक्ति
जोरिया ॥
पधां दुजी सक्ति सोण वीचो मेठ ॥
— गीत - माला खांडुरां रटीया —
विण ज्यान =पगर =पलमांन वाजीयो ॥
विचल विहंड रवल =पाडे वाद ॥
विड़ हांमलां पहल झांटी झीयो ॥
चोथो हमल गयो डरि चाढ़ि ॥
तो रावलां तणा मुंह रवल ॥
फेरा विया स चढ़े फिर ॥

सहर खेर दुंगर पुर सामां ॥
करक ले गयो हीर मन हरि ॥२॥
जोच पछाड़ अंबर जीवे ॥
अमर हुवो जल सुर अरसुर ॥
आगरे रो क सांमठी आई ॥
पांच वच्चा बीस पुर मैं ३ ॥
— गौल माला जी का कहीया —
मच्छ खेल खाच्ची लणे बोरलो गिणे मन
जाड़ जल नणि सके नहीं जावे ॥
काया वंची सोई जला भोगवे रमा ॥
अमर जम राव रे चके आवे ॥२॥
कला वत मांन धर रंन जेहो करीयो ॥
वाड़ना काल तुं चाल बांधो ॥
पगां धुड़ाम करि सोच दुगर पुरा ॥
सीस तुटो जिसो तुंतो सांधो ॥२॥
दुजे अंतक अमर साह फोजां दलण ॥
तास मोले नहीं पास तुं ले ॥
सार मुंही मांजि माला जमां अरमसी ॥

ऐसे हो-पण बिक-पार सुजि चार हुतेक ॥३॥

— गीत माला जीरा अहिपा —

राव राजा पगर सीख न वैराल ॥
स्वामीपां गुर चाहतो खग ॥
प्राण तणा रेवीजै उडा ॥
पैलां तो उपड़े उपड़ पग ॥१॥
मेलह तणी जग माल मलो चर ॥
सीख देवै सांभलो संसार ॥
भीत्यां ज्यां चित्र घर भाजै ॥
भाजै त्यां पागली गज भार ॥२॥
कुल खट तीसां रेस मलावत ॥
मेलह तणी दाखवे रल ॥
प्राप्रमणं हथ वाहां प्रागली ॥
जम ही चालै तेजु पल ॥३॥
उभर वहसन प्राडी डुंभर ॥
चित भतरी न बीजो चोज ॥
रिम दल सबल भंजीया राचल ॥
पुण भाजिवा तणो नालोज ॥४॥

— गीत च रावल धरा सेन रा —

वाण चल कोप हथ न सकीया थोते ॥
जंग हर कीर केवीया जड़ोमिह ॥
उभी खाग रोक रो कंठावि ॥
धरो गयो बलांती प्रभि ॥ १ ॥
रुक नजो वरिल सको राजवी ॥
दुरि धरा व तापीया दुःख ॥
चाचरि समां प्रजालि चालोधो ॥
रावल मंगल काल रुप ॥ २ ॥
कलो समो यम गाम कारहो ॥
रुकां मुहि होमते रिम ॥
जीत जगत जीति जो खमीधो ॥
जलण जलंता धका जिम मंड ॥ ३ ॥

— गीत — सीहा सीचल रो भरम भीजी रो रहीधो-
राघ सीच कलो गोपाल रह चीण ॥
कादीधो धाट लगधो मुलो ॥
सीहो तो मुलो जीवतां सिरदो ॥
मांडण भीजे तोय मुलो ॥ १ ॥

मारण पायो मारि मोकले ॥
हुई मां व्रणे घातियां हीर ॥
घिगा जीवी यो समध चोचर घुड़ि ॥
घिन मित सीघल तणो सघीरा ॥२॥
मामि मा राड़ि साच मारेड़ ॥
रेवंत गेम रीलि करि रीस ॥
सुजसो मरण सुरा गम सीहा ॥
जिवत घिन तेही सिज गीस ॥३॥
जिण रह चीयो मंडो वर फके ॥
हुरते सलां चलावे हीक ॥
पंत उजलै खंगार पंमे-ग्रंम ॥
मासि लागि जावै मंडलीक ॥४॥

— गीत जुनो —

भाजो भड़ लाख चांपीय मांबिसे ॥
विढिया जतं सभीड़ी वार ॥
पागे ही खेमाल उतल वल ॥
दाढिल मेरे उगरे मर ॥१॥
खुमह मेरे सब दल सालु लीय ॥

भली रमेड़ तुजौ भारथ ॥
तुजा हरा उपरै सिव दी ॥
सीरे गिड़ री हालां साथ ॥२॥
पड़िपो छिसण चोगुण पाड़े ॥
रोपो थो मे माड़े रिण ॥
कविल वारा हवेड़ खेम कंन ॥
पोथ चरांरटलीपो मरण ॥३॥
— गीत — झालां रेखा दुर तांक रो —
सुर ही ली भली वेस संभरि पारणा
सिध ॥

पानीपे थाट दुजण प्रलेखा ॥
भजते साथ पनि साथी रो भजते ॥
सुध्धरिपो लाहेसे मरण सेखा ॥
जो ग्रहण गरढ पण दोपढ पाछा गढे ॥
भजते गांम सप पेरे भालो ॥
सुधले सुर तांण पनि भजते साथी रे ॥
झल हले पवीपो कांमि झालो ॥४॥
त्रंब छल वंस छल सबल खलते वेड़ ॥

प्रथम भाजे गई भीर पुजीयो ।।
मरण छोल सांभ छोल सुतन सुर-
तांबरण ।।
भलो जी भलो संसार भजीयो छै ३।।
— गीत - पुजाव दारवा काली रो —
पता जा सभ ही रंग दुनियांण जांणै परवा ।।
बीपा भड़ होसै रिण वार बेखा ।।
मांजिवा दलिद्र जुध्धवार खल मांजिवा ।।
सार रो कैर गुमार सेखा ।।२।।
रूप काली लांतणा भुपीर मेर हलण ।।
मीर हथ कांचीया रहे मालो ।।
=पमिनमो सीच्च दुनियांण =पारवे =पभंग ।।
लोह मो गढ़ सन कर वडालो ।।२।।
सोह सुर तांण वा खांण चोड़ सही ।।
दुसिरा सांमलो तथा देखो ।।
जोच्च खल लोच्च संसार पुजांणीयो ।।
सार पागार गुमार सेखो छै ३।।
— गीत - काला वैरसार — गिरधरजी

रो कहीजो ——

पापी छाडंबर पाण लाज छण लेखे ॥
जै धर्म तणी पयाल जड़ ॥
कुड़ कले तणी डाव झड़ तल ॥
वर सो हुओ पिशाच बलड़ ॥ २ ॥
उचो खन्न वट पच्चट फेर हण ॥
चण कवि छपा रहे चण ॥
प्रम जिम उगरीया कलि पंतर ॥
तिको सुविख हर दास तण ॥ २ ॥
विना चारख कुल साख विस तेरे ॥
वसु हण रख जै लाख वरो ॥
भारख भारख जिहा .... रवे ॥
हुओ फेरवे पूरख सोच हरो ॥ ३ ॥
— गीत झाला कृपा दास रो —
गिरधर जी रो कहीयो —
राजा कृष्ण किना किनह बोलि राजा ॥
सिवर किन्हा संसार सचार ॥
पर पुरख हरण वीर पाटरिया ॥

प्रगिर पला के हो प्रवतार ॥१॥
तुं भम सुर वीर उग्र सुत ॥
तवी क्राम गंध्र वेसे नत ॥
सुजड़ हथ नर पाल समो भंम ॥
कहि तूं प्रवतरीयो रमण ॥२॥
वंस सुर राठोड़ नीति वंस ॥
पिथी दह पुरव राव प्रसार ॥
काला हल साचो कहि काला ॥
तोतं माड़ किसो प्रवतार ॥३॥

— गीत राव मेघ गोपंदोतरो —

कला संढ रा कहीया —
फर फेर प्रसुध्यां सुध्यं फेर —
रावत रमण हुवारे राड़ ॥
बुड़ी ठोड़ हुवा मड़ बाजा ॥
मेघ प्रणी सावल मेवाड़ ॥१॥
धार पगार नवे मुंहि धांणं ॥
खहीयो नारं प्रवार खरो ॥
तरिने सार समार रहे तद ॥

हुई मार खंगार हरो ॥ २ ॥
मांणं केल खत्री वट पांणे ॥
=पमली मांण मच्च गउ दोल ॥
मांणं वेल वहे दल दोयं ॥
सीमो दीयो मरु रे सेल ॥ ३ ॥
कुलर = दस देसां कल हलीया ॥
वीज ल =पगर जिही कुल वाट ॥
गगि मस गर दिसा गोवत ॥
कलंक कोलन लगो काट ॥ ४ ॥
— गीत कला जीरा रहीया —
कर ग्रहीयां खाग मेच चैल पुरा ॥
काजि =पच्छ नित वाज कसै ॥
जे रखै मेवाड़ जा =पतो ॥
तो वे चमके मनी गम करै ॥ १ ॥
गोपंद तणे मरण गज गहां ॥
रुंपति साहां समो सही ॥
देस गया वाले दस सहस्सो ॥
मेस गया वीस मे नही ॥

गावत वडो विचैं राव रंकं ॥
डंकं वहतो उद्यम दैवै ॥
जे वह खंभे पराई जानी ॥
खित वाणी श्री खम खंभे ॥३॥
विस मा दीह तमे वांरा घत ॥
फांफत खुर सांण फणी ॥
खुजि वा सीपो सरवा लै ॥
घर चालै जांण सीचणी ॥४॥
— गीत जैता मही पार पारो ॥
चरवै दिण खैत खाग मुंहि चाढे ॥
खिलय लोढ वाढे खुर ॥
कुंथर महा काढीया रानत ॥
वैरी हरकें झंकड़ां वर ॥॥
तै सांभ चेम दाखि गोपद तण ॥
वला करवा वारि झुर ॥
मांजे कीया जु जुग्ग भारथ ॥
वण वीज जिम वेर हर ॥२॥
फसि मर लोढ लोढणो फसि मर ॥

श्री मेघ गुरुभ्यो नमः ॥
काया सीस मेघ्र दल काढे ॥
सुत धर्मी यो एस सहस ॥ २ ॥
— गीत रेहडी या नरायण दास रो महीपो —
दलां वां दलां मेलि सीसो दे साख दले ॥
वीजलां साखलां खिकलौ मेघ ॥
उजलो खन्नी धारु जलो उजलो ॥
मुगलां खलां सिर धोगलै मेघ ॥ १ ॥
कोपण खेधार उज भार आगल करे ॥
तड़ित तरवारि उभारि तरसै ॥
सार मीचार दया धार गिर मेरसुत ॥
वैरिमां सिरे जुध्धार वरसै ॥ २ ॥
सहर सुप साल सोरन लाल दल
संभिले ॥
रे वीपां काल सिर खीवि कि रमाल ॥
पुखंग धरनाल लुलाल चमरां पड़े ॥
विवह गति रुरे चमख चाल वरसाल ॥ ३ ॥
माय गुर धरण हर नाभि नमा भुंड रज ॥

सार मीधार संधार सेलार ।।
मिलि मिले चोचरा दादुरा केचरा ।।
जले चरा थले चरा भणे जे मार भला
— गीत - रावत रतन सी कांधिलोतरा —
मुंगल दल सकल मिले मेवाड़ा ।।
भाग कायर कोई भणि ।।
सुरत नाथ नमी तिण सांजे ।।
रतन प्रमोलिक रहे रिण ।। १।।
प्राडु ठमे मिले रिण पाई रिण ।।.....
— गीत चुंडावत जग सीचावत रो —
प्रा कांधी गुरां हीयो ।।
चिरवे चार जांगी दि चोमर वि चुंचलो ।।
चुजि चिर रवि चरर माल चागो ।।
जग दृथ वाह करवार लेजे वही ।।
प्राज मेनाड़ कल मुजे प्रायो —।। २।।
कल हर सके लवे चुंड रते कीये ।।
चगलि चुंडा हरो मुहे चाड़ियो ।।
चार चारण लग चड़ मड़ा चुंडतो ।।

उठिपो जगड़ सिर =फाम =पड़िपो ।। २ ।।
जोध सीप्पा सुत न जनु जुड़ने जंग ।।
छोह साँढ़ि दल मल घलीया ।।
रुक सिंग छांग हेक मुहे मा चार हुचि ।।
वीरण हेक काख घर लहे वलपा पड़ि ।।
= गीत = पती जगावत रो =
नर वर सिंहड़िपा रो अहीपो =
तर वर नर मागल संग थाप लिंग ।।
मध्य समपि सो रंग कुल मोड़ ।।
सिरखा फाक पैते मीचा साहि ।।
चंपेछा मलीपा मर चीतोड़ ।। १ ।।
हुता पास मीपा दे हुंतल ।।
जर खग पोर मल जगे जगे ।।
कायर ही सुरे नर मीचा ।।
तर उति मजि मजगड़ लगे ।। २ ।।
मागिल भड़ा छोट छल पिड़तं ।।
चाड़े पोरिस वाल प्रचंड ।।
नीम सरीरव मीपा नाग चढ़ै ।।

खग हथ सीध हरै की खंड ॥ २ ॥
इयाणी चर मेले धाय ॥
बीडि सवां तणै नव वोय ॥
सोरंभ खग बीचां गढ लीधा ॥
पातल चंदण तेलै पखाय ॥ ४ ॥
— गीत चुंडावत ..... दो
चरे घोड़ खग वट तुर संग ॥
चाड़े चढै रोक रोकाध वति—
वेड़े छोकाड़ बाकड़ै लीध—
वति साह मह्यं दवां बिचां ॥
मन वाराह जिम चरां मेवाड़ ॥ ६ ॥
इसि मरां चारि इधाचारि दवा=मगरि ॥
वाहि दो गाढ फोजां विडंमी ॥
हम हे कल जिहि देपते चुंड हर ॥
उथल पाथल हुई चर=प्रंगे ॥ २ ॥
मेछ कन लगे चढे उभवे भिड़ा ॥
चल वांधै न को जड़ चाले ॥
कल दाढां महा चरा पुड़ आढते ॥

किधो गिड़ जे मऊ गाह कीजे ।। ३ ।।
मांन खुर तांण हिरणां सिंग मेरवा ।।
छोड़ बै वे वे वसुर मोम छांड ।।
चजा पती रसातलि मुजां वलि जेतरे ।।
मेर चीलेऊ गलि फणेा मेंडी ।।४।।
— गीत — राजन रघुनाथ सीव को —
मो पति वारट रो कहिणो —
चंद नाम की मो प्रणम काय जुड़ै ।।
सिड़ रत सामुणो आथ ।।
काचिन मुल सीस काचीयो ।।
राखै बिरद जिके रघुनाथ ।।६।।
मेरो चाचो वई मथारै ।।
राघव रे जीतू रिण वार ।।
मुद्रा चलु की नर हरि मोड़े ।।
सुरो केसव करारे सार ।। २ ।।
राणा सीव राम चंद रतनो ।।
प्रण रहमती जेमल पात ।।
लीवो मांन खेत रती लखमण ।।

लोड़ि खान बेणे लंकल ॥ ३ ॥
साइयै खोपाकियो गढ़ साको ॥
युदै सते पते दोय वार ॥
कोजां सीस कैसा कर वरीयो ॥
के खेत घणा जीती यो खंगार ॥ ४ ॥
किसने नाम किसो चुहुं कुंटै ॥
सांमल वार करसै कमै सधीर ॥
पगले मांन नफ उट हला ॥
जैत मुओ कट कै जहंगीर ॥ ५ ॥
संच जगो जोधपे चाढ़े सोर ॥
पीथो युदै चेलो पहाड़ ॥
सात वरस वीरह सीसोदे ॥
मांना सिंघ पणी मेवाड़ ॥ ६ ॥
कस पेचा पल मेस गोकल केसव ॥
नारायण तां मुनि रख ॥
नग मुरार इतन सी नरसी ॥
निहे हरी रहीया बलख ॥ ७ ॥
केवल मग़र करम सी कचरे ॥

पोको खांनो खलो प्रमुल ।।
पचलो विस नोद दो सायो ।।
डुगर सीह सिरवर सादुल गाय ।।
राणं खाउ वाहडा गवल ।।
खत्र वट डाय न लोपे खीट ।।
परीयां तणं प्रवाड़ें पूरित ।।
कोट तहीलो वाचा कोट ।।
गीत — मो माथो सीध मांनसीचोतरे —
नक पासीया रो कहीजो —
तो सिरखा मथा परख लख तागी ।।
वाचे केम पिथी परीयांम ।।
नाहर पेन रस दान व नवा ।।
कहेन कुछा मचीजे कांम ।। १ ।।
मधर तुफ परेवे मोनावत ।।
पांन पुजड़ कर ग्रहीमा देव ।।
सार वासीपां सथा सातरा ।।
नर नाहर जो जरा ।।
नर नाहर जो जरा न होय ।।२

पुजा जगा बंस रा दीपक ॥
दीखै रेम सकल पुनीयांण ॥
पुरख प्रधाण कहेन पुरवतां ॥
पढ़ि मुख पारथ चढ़े-प्रमाण ॥ ३ ॥
मयंद सा पुरस तणे मायनो ॥
विरुदां रुक बखांण वाच ॥
मथ कर तो दीधै मानां मत ॥
सीखो दीधा मनोधै साच ॥ ४ ॥
— गीत जैतं वत रो —
वाजं उपाड़ि पोड़ीणा चढ़ कर ॥
घर ऊंत से वाघा ॥ पोरण विड़ां
गजैन सी उपरि वाजित्र घुंघलवाड़
कर चढ़ले गहलोत करीचर ॥
खोहण दल पीवे खलीफा ॥
रांण तणं सुरतांण जखावत ॥
नंव कतो सिर त्रेह चहीफा ॥ २ ॥
दल पाच्छरै पानीफा दाणव ॥
घाघो मीर बचा घड़िफा ॥

=पाजोका किसना वत उचरि ।।
रिण चा चरि जांगे कढ़िया ।।३।।
चुंडा हमा मरण रिण चक्कलं ।।
च टाहे जुतै मैगला हांक ।।
वलीया वेदल करता वालं ।।
नाप्रू सिर वीये नीसांक ।।४।।
— गीत दुजो रावत किसना रो —
रिवत पंव नव नव नरतन खावे ।।
पेखे वीड नह हसती पलोय ।।
मन माह रंभ जांगे मह पति ।।
किसना तणे माजेने कोय ।।१।।
पाचरे पंव नव हण पदारथ ।।
ईमन सीचल दीप उर ।।
पातम जोड़ खंगार पगे मंम ।।
चोक चोकन नचाय गुर ।।२।।
पंव नकल पव पदमन उसर ।।
रैना दिण दिण नाग रहंत ।।
सीसो दिया जिसो सुति मागि ।।

महत्त महत्त जोतां न मिलंत ॥३॥
सोनो देखि तणो घर सुंदा ॥
ईम घोर जीवम बांधे भगत ॥
करो वार सुर वी नमीये ॥
तो सम बड़ो न को दोह लोक ॥४॥
— गीत रावत सुरिज मल रो —
तो उर घोड़ा रो अहीणो —
गिलिया गज थाट घड़ ध्रित चारां ॥
घड़ रामां संग्रहि घणा वाह ॥
लांघणी थो रोय सुर नलांघो ॥
पिथी राज हुवे अमलां प्राय पड़ो ॥
पहलो केदल कीध पारणो ॥
घोय संघारे भीच घणा ॥
सुचमा धको प्रावत रवीमावत ॥
तो वद तारण माल तणा ॥२॥
करक राय माल तण कलहतां ॥
के वेजे सुरिजे मल करीया ॥
केती थाट घणां छकुराला ॥

दै ठां मुकां उग रीया ॥३॥
चुंसे सुर कीयो परीपण चो ॥
दै उछजीयो- अंत हुई ॥
पिथीराज जो लहर पदंतर ॥
मुरचे यां मुंहडे चढ़त भई ॥४॥
— कवित्त — कविया वेणी दास जीरो —
कहा पहला उतर भीयो —
उतर सुख नहीं पख रवण ॥
दिरवण गयां पांमजै जेर दीयो दिरवण
पावै पुनियां छिलो जोर पदिस दिसजावै ॥
जो जावै पुरब सुतो पुरब दत पावै ॥
घर मांहि थकां क्रीजो चणो जोवै सारेजीम
वरै ॥१
कवित्त दुजो — कवीया खुण खुण करन
नर सीचोनरो अफो —
माह राजा रा राफ़ सीध पार पतपाग्रो
कलारै ॥
सुनो गढ जोध पुर जेण भोग वे वधारै

सवा कोड़ दस देपला लेखण मुहमी मीती॥
मोड़ बधो गढ माड़ दीपा पचास हसती॥
राजा न पारख्यसी धरे धाट-
अंम सनो थीयो सुर रे॥
करन नर वैर मक पार उदोत
प्रथीराज १॥

— समाप्तम् —

पृ० ६१ से पृ० २१८ तक
लिपि मूल्य १०।८॥

मुन्नेलाल सरल
१५-७-६६